व गांवों में घूमते हैं; मङ्गल, राहु, शनैश्चर, केतु और सूर्य ये पहाड़ों व जङ्गलों में विचरते हुए रहते हैं ॥ ५७ ॥

धातुमूलादिज्ञानमाह—

शाखाधिपा जीवसितारबोधना धातुस्वरूपौ द्युचरौ कुजारुणौ।
मूलप्रधानौ तुहिनाकरार्कजौ जीवौ सितार्यौ तु विमिश्रमिन्दुजः ॥५८॥

बृहस्पति, शुक्र, मङ्गल और बुध ये शाखाधिप कहाते हैं, आकाशचारी मङ्गल व सूर्य ये धातुरूपी कहेजाते हैं, चन्द्रमा व शनैश्चर मूलप्रधान व शुक्र व बृहस्पति ये जीवरूप कहाते हैं और बुध विमिश्ररूप कहाता है ॥ ५८ ॥

दीप्ताद्यवस्थाक्रममाह—

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तः शक्तः प्रपीडितः।
दीनः खलस्तु विकलो भीतोवस्था दश क्रमात् ॥ ५९ ॥

दीप्त, स्वस्थ, प्रमुदित, शान्त, शक्त, प्रपीडित, दीन, खल, विकल और भीत ये क्रमसे रव्यादिग्रहों की दश अवस्थायें कहाती हैं ॥ ५९ ॥

स्वोच्चत्रिकोणोपगतः प्रदीप्तः स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहृद्गे।
शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयातः शक्तोऽतिशुद्धः स्फुटरश्मिजालैः ॥ ६० ॥

जो ग्रह अपने उच्च व त्रिकोण में प्राप्त हुआ है वह प्रदीप्त कहाता व जो अपने घर में बैठा है वह स्वस्थ कहाजाता है व जो अपने मित्रघर में बैठा है वह मुदित होता है व जो शुभग्रहों के वर्ग में पहुँचा है वह शान्त कहाता है और जो स्फुटकिरणजालों से अतिशुद्ध होता है वह शक्त कहाता है ॥ ६० ॥

ग्रहाभिभूतस्त्वतिपीडितः स्यादरातिराश्यंशगतोतिदीनः।
खलस्तु पापग्रहवर्गयोगान्नीचेति भीतो विकलोस्तयातः ॥ ६१ ॥

जो ग्रहों से तिरस्कृत हुआ है वह अति पीडित होता है व जो शत्रुके राश्यंश में प्राप्त है वह अतिदीन कहाता है व पापग्रहों के योग से खल होता है व नीचग्रह अतिभीत कहा जाता है और अस्तंगत ग्रह विकल होता है ॥ ६१ ॥

ताम्रादिवर्णज्ञानमाह—

वर्णास्ताम्रसितारक्तहरितापीतकर्बुराः।
कृष्णकान्तिरिनादीनां नष्टादौ च प्रकीर्तिताः ॥ ६२ ॥

सूर्य ताम्रवर्ण, चन्द्रमा सफ़ेदवर्ण, मङ्गल रक्तवर्ण, बुध हरित, बृहस्पति पीतवर्ण, शु कर्बुरवर्ण और शनैश्चर कालावर्ण कहाता है ये सूर्यादिकों के वर्ण नष्ट आदिकों भी कहे हैं ॥ ६२ ॥

द्रव्यादीन्याह—

द्रव्याणि ताम्रमणिकाञ्चनशुक्तिरौप्य-
मुक्तान्ययश्च दिननाथमुखग्रहाणाम् ।
वह्न्यम्बुषण्मुखहरीन्द्रशचीविरिञ्च्य-
मुख्या दिवाकरमुखादधिदेवताःस्युः ॥ ६३ ॥

ताम्र, मणि, कांचन, सीपी, रूपा, मोती और लोहा ये सूर्यादि ग्रहों की द्र कहाती हैं यानी सूर्य का ताम्र, चन्द्रमाकी मणि, मङ्गलका सुवर्ण, बुध की सीपी, बृहस्प का रूपा, शुक्रका मोती और शनैश्चरकी लोह द्रव्य कहाती है और अग्नि, ज स्वामिकार्त्तिक, विष्णु, इन्द्र, शची और ब्रह्मा ये सूर्यादिकों के अधिदेवता हैं ॥ ६३ ॥

माणिक्यादिज्ञानमाह—

माणिक्यं दिननायकस्य विमलं मुक्ताफलं शीतगो-
र्माहेयस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्यस्य गारुत्मतम् ।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शने-
र्नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैडूर्य्यके ॥ ६४ ॥

सूर्यका माणिक्य, चन्द्रमा का अमलमोती, मङ्गल का मूंगा वा मरकत, बुधका गा त्मत, बृहस्पति का पुखराज, शुक्रका हीरा, शनैश्चर का नीलम, राहुका गोमेद और के का वैडूर्य्य कहाता है ॥ ६४ ॥

वस्त्राण्याह—

स्थूलाम्बरं नूतनचारु चेलं कृशानुतोयाहतमध्यमानि ।
दृढांशुकं जीर्णमिनादिकानां वस्त्राणि सर्वे मुनयो वदन्ति ॥ ६५ ॥

सूर्य का मोटा कपड़ा, चन्द्रमा का नया कपड़ा, मङ्गल का सुन्दर कपड़ा, बुध रेशमी कपड़ा, बृहस्पति का फटा कपड़ा, शुक्रका मज़बूत कपड़ा और शनैश्चर का पुरा कपड़ा समग्र मुनियों ने कहा है ॥ ६५ ॥

प्रागाद्यधीशानाह—

प्रागादिका भानुसितारराहुमन्देन्दुविद्देवपुरोहिताः स्युः ।
शुक्रारचन्द्रज्ञसुरेज्यमन्दा वसन्तमुख्यर्त्वधिपा दृगाणैः ॥ ६६ ॥

सूर्य पूर्वका स्वामी, शुक्र आग्नेय का, मङ्गल दक्षिण का, राहु नैर्ऋत्य का, शनैश्चर पश्चिम का, चन्द्रमा वायव्य का, बुध उत्तर का और बृहस्पति ईशान का स्वामी कहाताहै और शुक्र, मङ्गल, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर ये दृगाणों से वसन्तादि ऋतुओं के अधिपति कहाते हैं यानी वसन्त का स्वामी शुक्र, ग्रीष्मका मङ्गल, वर्षाका चन्द्रमा, शरत् का बुध, हेमन्त का बृहस्पति, शिशिर का अधिपति शनैश्चर कहाता है ॥ ६६ ॥

विप्रादिजातिक्रममाह—

विप्रौ जीवसितौ दिनेशरुधिरौ भूपालकौ वैश्यरा-
डिन्दुःशूद्रकुलाधिपः शशिसुतो मन्दोत्तराणां पतिः।
आदित्यामरमन्त्रिशीतकिरणाः सत्त्वप्रधाना ग्रहाः
शुक्रज्ञौ सरजोगुणौ शनिधरापुत्रौ तमः स्वामिनौ ॥ ६७ ॥

बृहस्पति व शुक्र ये ब्राह्मण कहाते हैं, सूर्य व मङ्गल ये क्षत्रिय हैं व चन्द्रमा वैश्यराज कहाता है, बुध शूद्रोंका स्वामी है और शनैश्चर अन्त्यजों का अधिपति है और सूर्य, गुरु, चन्द्रमा ये ग्रह सत्त्वगुणवाले कहाते हैं शुक्र और बुध ये रजोगुणी व शनैश्चर, मङ्गल तमोगुणी होते हैं ॥ ६७ ॥

पुरुषादिज्ञानमाह—

नराकारा भानुक्षितिजगुरवः शुक्रशशिनौ
वधूरूपौ षण्ढौ प्रकृतिपुरुषौ मन्दशशिजौ।
वियत्क्षोणीतेजः पवनपयसामेव पतयः
सुराचार्यज्ञारघुमणिसुतदेवारिसचिवाः ॥ ६८ ॥

सूर्य, मङ्गल और बृहस्पति ये पुरुषसंज्ञक कहाते हैं शुक्र व चन्द्रमा स्त्रीसंज्ञक होते हैं बुध और शनैश्चर ये प्रकृति पुरुष होकर नपुंसक कहे जाते हैं और आकाश, पृथ्वी, तेज, पवन और जलों के अधिपति बृहस्पति, बुध, मङ्गल, शनैश्चर व शुक्र कहातेहैं ॥ ६८ ॥

मज्जाद्यधिपानाह—

कक्ष्यायां क्रमशो दिनेशतनयाज्ज्योतिर्भचक्राश्रिताः
छायासूनुगुरुक्षमाजदिनकृच्छक्रेन्दुपुत्रेन्दवः।
मज्जास्नायुवसास्थिशुक्ररुधिरत्वग्धातुनाथाः क्रमा-
दारार्कीज्यदिनेशशुक्रशशभृत्तारासुताः कीर्तिताः ॥ ६९ ॥

कक्षा में क्रमसे सूर्यपुत्र के सकाश से शनैश्चर, गुरु, मङ्गल, सूर्य, शुक्र, चन्द्रमा और

बुध ये ज्योतिर्भचक्र में टिके हुए प्रतीत होते हैं और मज्जा, स्नायु, वसा, अस्थि, शु
रुधिर और त्वचा इन्होंके स्वामी क्रमसे मङ्गल, शनैश्चर, बृहस्पति, सूर्य, शुक्र, चन्द्र
और बुध कहाते हैं ॥ ६९ ॥

लवणादिरसादीनाह—

लवणकटुकषायस्वादुतिक्ताम्लमिश्राः
शशिरविशनिजीवारासुरेज्यज्ञनाथाः ।
अयनदिवसपक्षत्वब्दमासक्षणेशा
रविकुजसितसौम्या मन्दजीवेन्दवश्च ॥ ७० ॥

लवण, कटु, कषाय, स्वादु, तिक्त, अम्ल और मिश्र इन रसोंके चन्द्रमा, सूर्य, शनि
गुरु, मङ्गल, शुक्र और बुध ये अधिपति कहातेहैं और अयन, दिन, पक्ष, ऋतु, अब्द (व
मास और क्षण इनके सूर्य, मङ्गल, शुक्र, बुध, शनि, गुरु और चन्द्रमा ये स्वामी कहेजाते हैं ७०

उच्चादिज्ञानमाह—

मेषो वृषो मकरषष्ठकुलीरमीनास्तौली च कुम्भभवनानि तदस्तनीचाः ।
१० ३ २८ १५ ५ २७ २०
नित्यांगना हरिमया मनुसारनीरसंख्यादिवाकरमुखादतितुङ्गनाथाः ॥७१॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला और कुम्भ ये भवन सूर्यादिकों के उच्च
कहाते हैं और उनके सातवें २ भवन नीचसंज्ञक होते हैं यानी तुला, वृश्चिक, कर्क, मीन
मकर, कन्या और मेष ये सूर्यादिकों के नीच होते हैं १०-३-२८-१५-५-२७-२० इन
अंशों से मेषादिक परमोच्च होते हैं और इन्हीं पूर्वोक्त अंशों से तुलादिक परम नीच
कहाते हैं ॥ ७१ ॥

मूलत्रिकोणान्याह—

मूलत्रिकोणा हरितावुरक्रिया वधूधनुस्तौलिघटादिवाकरात् ।
सितासितार्काङ्गिरसां नखांशकास्त्रिकोणमादौ परतः स्वमन्दिरम् ॥७२॥

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला और कुंभ ये सूर्य से मूलत्रिकोण होते हैं और
शुक्र, शनैश्चर, सूर्य और बृहस्पति के बीस अंश आदि में मूलत्रिकोण होकर पीछे से
अपने घर को जाते हैं ॥ ७२ ॥

वृषादिभागत्रयमुच्चमिन्दो मूलत्रिकोणं परतस्तु सर्वम् ।
मेषादिका द्वादशभागसंज्ञाः कुजस्य कोणं परतः शुभं स्यात् ॥ ७३ ॥

वृषादि के तीन अंश चन्द्रमा का उच्च कहाता है और पीछे का सारा मूलत्रिकोण

होता है और मेषादि के बारह अंश मङ्गल का मूलत्रिकोण होता है और पीछे का अपना घर होता है ॥ ७३ ॥

कन्यार्धमुच्चं शशिजस्य कोणं दशांशकाः स्वर्क्षफलं शरांशः।
कुम्भस्त्रिकोणं फणिनायकस्य तुङ्गं नृयुग्मं रमणीगृहं स्यात् ॥ ७४ ॥

कन्या का आधा बुध का उच्च होता है व दश अंश मूलत्रिकोण होता है व पांच अंश अपने राशिफल को देता है और कुम्भ राहु का मूलत्रिकोण व मिथुन उच्च व कन्या अपना घर कहाता है ॥ ७४ ॥

ग्रहाणां फलविचारे विशेषमाह—

स्वोच्चे पूर्णं स्वर्क्षकेर्द्धं सुहृद्गे पादं द्विड्भेऽल्पं शुभं खेचरेन्द्रः।
नीचस्थायी नास्तगो वा न किंचिन्नूनं पादं स्वत्रिकोणे ददाति ॥७५॥

अपने उच्चमें बैठा हुआ ग्रह पूर्णफल को देता है व अपनी राशि में टिका हुआ आधा फल देता है व अपने मित्र के घर में चौथियाई फल को देता है व शत्रु के घर में टिका हुआ थोड़ा फल देता है नीच व अस्तंगत हुआ ग्रह कुछ फल नहीं देता है और अपने मूलत्रिकोण में बैठा हुआ ग्रह चौथियाई फल को निश्चय कर देता है ॥ ७५ ॥

ग्रहाणां स्थानविशेषेण विफलत्वमाह—

सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे।
भृगुः सपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्ति ॥ ७६ ॥

सूर्यसमेत चन्द्रमा व बुध लग्न से चौथे में बैठा हो व बृहस्पति पांचवें घर में हो व मङ्गल दूसरे घर में टिका हो व शुक्र छठे में बैठा हो और शनैश्चर सातवें घरमें बैठा हो तो विफल होते हैं ॥ ७६ ॥

बालाद्यवस्थाज्ञानमाह—

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजेसमेतद्विपरीतमाहुः।
बालः कुमारोऽथ युवा च वृद्धो मृतोलवानामृतुभिःक्रमेण ॥
बालाद्यवस्थानुगुणं व्रजन्ति तत्पाककाले दिननाथमुख्याः ॥ ७७ ॥

विषम राशि में ग्रहों की बालादि अवस्थायें क्रम से होती हैं और सम राशियों में वे अवस्थायें उलटे क्रमसे हो जाती हैं बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत ये अवस्थायें छः अंशों से विषम राशियों में क्रम से होती हैं और मृत, वृद्ध, युवा, कुमार और बाल इस क्रम से सम राशियों में कहाती हैं इसलिये सूर्यादिक ग्रह उक्त अवस्थाओं के पाककाल में बालादि अवस्थाओं के अनुरूप (समान) फल को प्रदान करते हैं ॥ ७७ ॥

रव्यादिग्रहाणां स्वरूपाण्याह—

प्रतापशाली चतुरस्रदेहः श्यामारुणाङ्गो मधुपिङ्गलाक्षः ।
पित्तात्मकः स्वल्पकचाभिरामो दिवाकरः सत्त्वगुणप्रधानः ॥ ७८ ॥

प्रतापशाली, चौकोण देहवाला, काला व लाल अंगवाला, मीठे व पीले नयन वाला, पित्त स्वभाव को रखता हुआ थोड़े बालों से अभिराम होकर सूर्य सतोगुण प्रधान होता है ॥ ७८ ॥

चन्द्रस्वरूपमाह—

संचारशीलो मृदुवाक् विवेकी शुभेक्षणश्चारुतरः स्थिराङ्गः ।
सदैव धीमांस्तनुवृत्तकायः कफानिलात्मा च सुधाकरः स्यात् ॥७९॥

संचारशाली, कोमल वाग्विलासी, विवेकी, शोभन दृष्टिवाला, बड़ा सुन्दर व मजबूत अंगों को धारता हुआ सदैव बुद्धिमान् व सूक्ष्म गोलाकार आकारवाला, कफी व वात प्रकृतिवाला चन्द्रमा कहाता है ॥ ७९ ॥

भौमस्वरूपमाह—

क्रूरेक्षणस्तरुणमूर्तिरुदारशीलः पित्तात्मकः सुचपलः कृशमध्यदेशः ।
संरक्तगौररुचिरावयवः प्रतापी कामी तमोगुणरतस्तु धराकुमारः ॥८०॥

क्रूरदृष्टिवाला, तरुणमूर्तिधारी, उदारशाली, पित्तप्रकृतिवाला, महाचपल, क्षीण कटिवाला, लाल व गोरे अंगोंवाला, कामी व प्रतापी होकर तमोगुण में लगा हुआ मङ्गल कहाता है ॥ ८० ॥

बुधस्वरूपमाह—

दूर्वादलद्युतितनुः स्फुटवाक् कृशाङ्गः
स्वामी रजोगुणवतामतिहासलोलः ।
हानिप्रियो विपुलवित्तकफानिलात्मा
सद्यः प्रतापविभवः शशिजश्च विद्वान् ॥ ८१ ॥

दूर्वादल के समान शरीरवाला साफ़ वाणी का बोलनेवाला व दुबले शरीर को रखनेहारा रजोगुण वालों का स्वामी व हसने में चपल व हानि में प्यार करनेहारा महा धनी, कफी, वादी व शीघ्र विभव प्रतापशाली होकर विद्वान् बुध कहाजाता है ॥ ८१ ॥

बृहस्पतिस्वरूपमाह—

बृहदुदरशरीरः पीतवर्णः कफात्मा

सकलगुणसमेतः सर्वशास्त्राधिकारी ।
कपिलरुचिकचाक्षः सात्त्विकोतीवधीमान्
अलघुनृपतिचिह्नश्रीधरो देवमन्त्री ॥ ८२ ॥

महोदर शरीरवाला, पीला, कफी, सर्वगुणों वाला, सकल शास्त्राधिकारी, पीली आंखों व बालोंवाला, सतोगुणी, अत्यन्त बुद्धिमान् अल्पराजचिह्न वाला होकर शोभा को धारता हुआ बृहस्पति कहाता है ॥ ८२ ॥

भृगुस्वरूपमाह—

असितकुटिलकेशः श्यामसौन्दर्यशाली
समतररुचिराङ्गसौम्यदृक्कामशीलः ।
अतिपवनकफात्मा राजसश्रीनिधानः
सुखबलसुगुणानामाकरश्चासुरेज्यः ॥ ८३ ॥

श्याम व टेढ़े केशवाला, श्यामतनुधारी, सौन्दर्यशाली समान व सुन्दर अंगोंवाला, शोभन आंखोंवाला, कामी, अतिवादी व कफी व रजोगुण की शोभाका निधान व सुख, बल व गुणों की खानि होता हुआ शुक्र कहाता है ॥ ८३ ॥

शनिस्वरूपमाह—

काठिन्यरोमावयवः कृशात्मा दूर्वासिताङ्गः कफमारुतात्मा ।
पीनद्विजश्चारुपिशङ्गदृष्टिः सौरिस्तमो बुद्धिरतोलसः स्यात् ॥८४॥

कर्कशरोमों व अंगोंवाला, दुबला, काला, कफी, वादी, बड़े दांतोंवाला व सुन्दर पीले नयनोंवाला व तमोगुण में बुद्धि को रखता हुआ शनैश्चर आलसी कहाता है ॥८४॥

ग्रहवधमाह—

अर्केण मन्दः शनिना महीसुतः कुजेन जीवो गुरुणा निशाकरः ।
सौम्येन शुक्रो सुरमन्त्रिणा बुधो बुधेन चन्द्रः खलु वध्यते सदा ॥ ८५ ॥

सूर्य से शनैश्चर, शनैश्चर से मङ्गल, मङ्गल से बृहस्पति, बृहस्पति से चन्द्रमा व बुध से शुक्र व शुक्र से बुध व बुध से चन्द्रमा हमेशा वध किया जाता है ॥ ८५ ॥

ग्रहाणांमित्रादीन्याह—

मित्राणि भानोः कुजचन्द्रजीवाः शत्रू सितार्की शशिजः समानः ।
चन्द्रस्य मित्रे दिननायकज्ञौ समा गुरुक्ष्माजसितासिताः स्युः ॥ ८६ ॥

मङ्गल, चन्द्रमा, बृहस्पति ये सूर्य के मित्र हैं, शुक्र व शनैश्चर ये शत्रु हैं और बु
कहाता है और सूर्य व बुध ये चन्द्रमा के मित्र हैं व गुरु, मङ्गल, शुक्र व शनैश्चर ये
कहाते हैं ॥ ८६ ॥

आरस्य मित्राणि रवीन्दुजीवाश्चान्द्रीरिपुः शुक्रशनी समानौ ।
सूर्यासुरेज्यौ सुहृदौ बुधस्य समाः शनीज्यावनिज्यास्त्वरीन्दुः ॥ ८

सूर्य, चन्द्र व बृहस्पति ये मङ्गल के मित्र हैं और बुध शत्रु है व शुक्र, शनैश्चर म
हैं व सूर्य, शुक्र ये बुध के मित्र हैं व शनि, गुरु व मङ्गल ये समान हैं और चन्द्रमा
कहाता है ॥ ८७ ॥

सूर्यारचन्द्राः सुहृदस्तु सूरेः शत्रू सितज्ञौ रविजः समानः ।
मित्रे शनिज्ञौ भृगुनन्दनस्येन्द्विनावरी जीवकुजौ समानौ ॥८

सूर्य, मङ्गल, चन्द्रमा ये बृहस्पति के मित्र कहाते हैं व शुक्र और बुध ये शत्रु हैं
शनैश्चर समान (उदासीन) कहाता है व शनैश्चर, बुध ये शुक्र के मित्र हैं, चन्द्र
सूर्य शत्रु हैं और बृहस्पति व मङ्गल ये समान कहाते हैं ॥ ८८ ॥

मन्दस्य सूर्येन्दुकुजाश्च शत्रवः समः सुरेज्यः सुहृदौ सितेन्दुजौ ।
तत्कालनैसर्गिकतश्च पञ्चधा पुनः प्रकल्प्यास्त्वतिमित्रशत्रवः ॥ ८

सूर्य, चन्द्र और मङ्गल ये शनैश्चर के शत्रु कहाते हैं और बृहस्पति सम यानी
सीन होते हैं शुक्र और बुध ये मित्र कहाते हैं और तात्कालिक नैसर्गिक मित्रता से
मित्र व अतिशत्रु पांच प्रकार कल्पना करना चाहिये ॥ ८९ ॥

स्थिरादिसंज्ञान्याह—

रविः स्थिरः शीतकरश्चरः स्यादुग्रः कुजश्चन्द्रसुतस्तु मिश्रः ।
मृदुः सुरेज्यो भृगुजो लघुश्च शनिस्तु तीक्ष्णः कथितो मुनीन्द्रैः ॥९

सूर्य स्थिर, चन्द्रमा चर, मङ्गल उग्र, बुध मिश्र, बृहस्पति मृदु, शुक्र लघु और
श्चर तीक्ष्णसंज्ञक मुनियों ने कहा है ॥ ९० ॥

ग्रहाणामीक्षणमाह—

पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्योरर्धं त्रिकोणयुगलेखिलखेचराणाम्
पादोनदृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति ॥९

तीसरी व दशवीं राशि में समस्त ग्रहों की पाददृष्टि होती है पँचयें व नवयें अ
होती है चौथे व अठयें पादोनदृष्टि कहाती है और सतयें घर में संपूर्ण दृष्टि अ
लोग कहते हैं ॥ ९१ ॥

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे
सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभः स्यात् ।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमारः समर्थः
सकलगगनवासाः सप्तमे दृग्बलाढ्याः ॥ ९२ ॥

पाददृष्टि बल के योग में शनैश्चर अतिबलशाली होता है व कोणदृष्टिमें बृहस्पति भदायक होता है व तीन चरण की दृष्टि से मङ्गल समर्थ होता है और संपूर्ण ग्रह सातवें में दृष्टिबलसे संपन्न रहते हैं ॥ ९२ ॥

अथोर्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षेण कवीन्दुसूनवोः ।
शशाङ्कगुर्वोस्समभागदृष्टिरधोक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः ॥ ९३ ॥

सूर्य व मङ्गल ये दोनों ऊर्ध्वदृष्टिवाले कहाते हैं शुक्र व बुध ये कटाक्ष यानी नेत्रों की ओर से दृष्टि रखते हैं चन्द्रमा व बृहस्पति ये दोनों समभाग दृष्टिवाले होते हैं और राहु शनैश्चर की दृष्टि नीचे रहती है ॥ ९३ ॥

रव्यादिग्रहेभ्यः फलविचारमाह—

सूर्यादात्मपितृप्रभावनिरुजाशक्तिश्रियश्चिन्तये-
चेतोबुद्धिनृपप्रसादजननीसंपत्करश्चन्द्रमाः ।
सत्त्वं रोगगुणानुजावनिसुताञ्ज्ञातीन्धरासूनुना
विद्याबन्धुविवेकमातुलसुहृद्वाक्कर्मकृद्बोधनः ॥ ९४ ॥

आत्मा व पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और संपत्ति या शोभा को सूर्य से विचार मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और संपदा को चन्द्रमा से विचारै बल, रोग, भाई, भूमि, पुत्र और कुटुम्बी को मङ्गल से विचार करै और विद्या, बन्धु, विवेक, मा, मित्र और वाक्कर्म को बुध से विचारना चाहिये ॥ ९४ ॥

प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानि वागीश्वरा-
त्पत्नीवाहनभूषणानि मदनव्यापारसौख्यं भृगोः ।
आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाता शनिः
सर्पेणैव पितामहन्तु शिखिना मातामहं चिन्तयेत् ॥ ९५ ॥

प्रज्ञा, धन, तनुपुष्टि, पुत्र और ज्ञान को बृहस्पति से विचारै, पत्नी (स्त्री) वाहन सवारी) आभूषण, कामकेलि, रोजगार और सौख्य को शुक्र से विचार करै आयु-

दाय, जीवन, मरणकारण, विपदा और संपदा का दाता शनैश्चर कहाता है व बाबा राहु से और नाना का केतु से विचार करै ॥ ९५ ॥

कारकानाह—

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतःसोमसौम्यौ
गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः ।
दिनकरदिविजेड्यौजीवभानुज्ञमन्दाः
सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात् ॥ ९६ ॥

सूर्य तनुकारक, बृहस्पति धनकारक, मङ्गल सहजकारक, सोम व बुध सुखकारक, स्पति पुत्रकारक, शनैश्चर व मङ्गल शत्रुकारक, शुक्र स्त्रीकारक, शनैश्चर मृत्युकारक, सू गुरु धर्मकारक, गुरु, सूर्य, बुध व शनैश्चर राजकारक, बृहस्पति लाभकारक और श व्ययकारक यानी खर्च को कराता है ये लग्न से कारक होते हैं ॥ ९६ ॥

अरिष्टदायकानाह—

कामावनीनन्दनराशिजाताः सितेन्दुपुत्रामरवन्द्यमानाः ।
अरिष्टदास्तेखिलजातकेषु सदाष्टमस्थः शनिरिष्टदः स्यात् ॥९७

सातवें घरमें मेष, वृश्चिक राशि में शुक्र, बुध और बृहस्पति बैठे हों तो समस्त जा में अरिष्टदायक कहाते हैं और शनैश्चर अष्टमें बैठा हुआ हमेशह अभीष्टदायक होताहै॥९

ग्रहाणां शुभाशुभविचारे वर्षाण्याह—

आकृत्यो २२ जिन २४ संमिता गजकरा २८ नेत्राग्नयः ३२ षोडश
तत्त्वा २५ न्यङ्गगुणा ३६ द्विवेद ४२ प्रमिताः सूर्यादिकानां समाः ।
यः खेटः स्वगृहे स्वतुङ्गभवने षड्वर्गशुद्धश्च यस्तस्याब्दे हि नृ
भवेदतिसुखं भाग्योदयं निश्चितम् ॥ ९८ ॥

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है, चन्द्रमा २४ वर्ष में, मङ्गल २८ वर्ष में, बुध ३२ वर्ष बृहस्पति १६ वर्ष में, शुक्र २५ वर्षमें, शनैश्चर ३६ वर्ष में, राहु ४२ वर्ष में और केतु ४८ में फल देता है जो ग्रह अपने घर व अपने उच्चमें बैठा हो और जो ग्रह षड्वर्ग से हो उसीकी वर्ष में मनुष्यों को अतिसुख और भाग्योदय निश्चय कर होता है ॥ ९८ ॥

ग्रहाणामरिष्टहरत्वमाह—

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः ।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ॥ ९९ ॥

पञ्चानां देवमन्त्री च षष्ठां दोषन्तु चन्द्रमाः ।
सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे ॥ १०० ॥

बुध राहुदोष को विनाशता है व शनैश्चर दोनों के दोषों को हरता है, मङ्गल चारों के दोषों को हरता है, बृहस्पति पांचों के दोषों को विनाशता है, चन्द्रमा छः ग्रहों के दोषों को हरता है और सूर्य सात ग्रहों के दोषों को विनाशता है परन्तु उत्तरायण में विशेषता से सातों ग्रहों के दोषों को हरता है ॥ ९९ । १०० ॥

रव्यादिकृतकष्टान्याह—

मन्दाग्निरोगज्वरवृद्धिदीपनक्षयातिसारादिकरोगसंकुलैः ।
नृपालदेवावनिदेवकिङ्करैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः ॥ १ ॥

अग्निरोग, ज्वर की वृद्धि, ज्वर का दीपन, क्षय व अतीसार आदि रोगसमूहों से तथा राजा, देवता, ब्राह्मण और किंकरों द्वारा सूर्य सदा चित्त में दोष को करता है ॥ १ ॥

चन्द्रकृतरोगानाह—

पाण्डुदोषजलदोषकामिलापीनसादिरमणीकृतामयैः ।
कालिकासुरसुवासिनीगणैराकुलं च कुरुते तु चन्द्रमाः ॥ २ ॥

पाण्डुदोष, जलदोष, कामिला, पीनस आदि रोग व नारियों से किये रोग कालिका, देवता और सुवासिनीगणों से चन्द्रमा मनुष्य को व्याकुल करता है ॥ २ ॥

मङ्गलकृतदोषानाह—

पीनबीजकफशस्त्रपावकग्रन्थिरुक्व्रणदरिद्रजामयैः ।
वीरशैवगणभैरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः ॥ ३ ॥

स्थूलता, बीजदोष, कफ, हथियार, अग्नि व गिलटियों से उपजे रोग घाव व दरिद्रसे पैदा हुए रोग तथा वीरगण, शैवगण व भैरवादिगणों से मङ्गल शीघ्रता से भय को करता है ॥ ३ ॥

बुधकृतदोषानाह—

गुह्योदरादृश्यसमीरकुष्ठं मन्दाग्निशूलग्रहणीरुगाद्यैः ।
बुधादिविष्णुप्रियदासभूतैरतीवदुःखं शशिजः करोति ॥ ४ ॥

गुदरोग, उदररोग, दृष्टिरोग, वातव्याधि, कुष्ठरोग, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि रोग तथा बुधादि विष्णु के प्रियदास प्राणियों से बुध अत्यन्तदुःख को करता है ॥ ४ ॥

गुरुभृगुकृतदुःखान्याह—

आचार्यदेवगुरुभूसुरशापदोषैः शोकं च गुल्मरुजमिन्द्रगुरुः करोति।
कान्ताविकारजनिमेहरुगासुराद्यैः स्वेष्टाङ्गनाजनकृतैर्भयमासुरेज्यः ॥ ५ ॥

आचार्य, देवता, गुरु और ब्राह्मणों से दिये शाप दोषों से बृहस्पति शोक और गु रोग को करता है तथा स्त्रियों के विकारों से उपजे प्रमेहरोग व असुरादिकों व अप चाही अङ्गनाओं से किये दोषों से शुक्र भय को उपजाता है ॥ ५ ॥

शनिकेतुकृतदुःखान्याह—

दारिद्र्यदोषनिजकर्मपिशाचचौरैः क्लेशं करोति रविजः सहसन्धिरोगैः।
कण्डूमसूरिरिपुकृत्रिमकर्मरोगैः स्वाचारहीनलघुजातिगणैश्च केतुः ॥ ६ ॥

दारिद्र्यदोष, अपने कर्म, पिशाच, चोर और सन्धिरोगों से शनैश्चर क्लेश को कर है तथा खाज, मसूरिका, शत्रु, कृत्रिम कर्मरोग और अपने आचार से हीन छोटी जा वाले जनों से केतु कष्ट को करता है ॥ ६ ॥

राहुकृतदोषानाह—

करोत्यपस्मारमसूरिरज्जुक्षुद्दृक्कृमिप्रेतपिशाचभूतैः।
उद्बन्धनाच्चारुचिकुष्ठरोगैर्विधुन्तुदश्चातिभयं नराणाम् ॥ ७ ॥

अपस्मार (मिरगी), मसूरिका, रज्जु, क्षुत् (छींक या क्षुधा), दृष्टिरोग, कीड़े, प्रेत, पि शाच, भूत, उद्बन्धन, अरुचि और कुष्ठरोगों से राहु मनुष्यों को बड़ाभय करता है ॥ ७

पुत्रलाभार्थमुपायमाह—

हरिवंशो रविणा शशी त्रिपुरहा भौमे च रुद्री क्रिया
सौम्ये सम्पुटचण्डिका च विधिवज्जीवे च पैत्री तिथिः।
शुक्रे गोप्रतिपालनं च कथितं मन्दे च मृत्युञ्जयः
कन्यादानभुजङ्गकेतुकपिलासन्तानसौख्यप्रदा ॥ ८ ॥

जो पुत्र के लिये सूर्य अरिष्टदायक हो तो हरिवंश का श्रवण करै व चन्द्रमा अरिष्टदा यक हो तो महादेव का आराधन करै व मङ्गल अरिष्टदायक हो तो रुद्राभिषेक की क्रि करै व बुध अरिष्टदायक हो तो विधान से संपुट चण्डी का आराधन करै व बृहस्प अरिष्टदायक हो तो पितरों की तिथि में आमान्नदान करै व शुक्र अरिष्टदायक हो त गौओं का प्रतिपालन करै व शनैश्चर अरिष्टदायक हो तो मृत्युञ्जय का आराधन करै

राहु अरिष्टदायक हो तो कन्यादान करै और जो केतु अरिष्टदायक हो तो संतानसौख्य-दायिका कपिला गौका दान करै ॥ ८ ॥

आद्यन्तमध्यफलदायकानाह —

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात्।
राश्यर्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः ॥ ९ ॥

मङ्गल और सूर्य प्रवेशकाल में फलदायक होते हैं शुक्र व बृहस्पति मध्य में फल-दायक होते हैं शनैश्चर व चन्द्रमा आखिरी में फलदायक होते हैं और बुध हमेशा फल को देता है ॥ ९ ॥

यद्धातुकोपजनिताखिलरोगशान्त्यै
तन्नाथमाशु जपतर्पणहोमदानैः।
संपूज्य रोगभयशोकविमुक्तचिन्ताः
सर्वे नराः सुखयशोबलशालिनः स्युः ॥ १० ॥

जिन ग्रहों के धातुकोप से अखिल रोग उपजे हों उनकी शान्ति के लिये जप, तर्पण, होम और दानों से उन ग्रहों के स्वामी को भलीभांति पूजकर संपूर्ण मनुष्य रोग, भय और शोक से विमुक्तचिन्तावाले होते हुए सुखी व यशस्वी होकर बलशाली होते हैं॥१०॥

इति जातकपारिजाते ग्रहस्वरूपादिः ॥

करतलेदिग्ज्ञानमाह—

यत्र चाङ्गुलयः सन्ति तां दिशं विद्धि पूर्विकाम्।
यत्रास्ति मणिबन्धोहि पश्चिमां विद्धि तां दिशम् ॥ ११ ॥
वृद्धाङ्गुलिस्तु यत्रास्ति चोत्तरां विद्धि तां दिशम्।
क्षपाकरस्तु यत्रास्ति तां दिशं दक्षिणां विदुः ॥ १२ ॥

जहां अँगुलियां रहती हैं उसको पूर्वदिशा जानिये व जहां मणिबन्ध (कब्ज़ा) विद्य-मान रहता है उस दिशा को पश्चिम जानिये और जहां अँगूठा रहता है उसको उत्तर दिशा जानिये और जहां चन्द्रमा रहता है उसको पण्डितों ने दक्षिणा दिशा कहा है ॥११। १२॥

फलानां तारतम्यमाह—

यत्र यत्र स्थितःखेटस्तत्रस्थोपि यदा भवेत्।
तदा शुभं फलं वाच्यमित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ १३ ॥
ये ग्रहा दक्षिणस्थाः स्युस्ते यदा चोत्तरे स्थिताः।

ये ग्रहाः पूर्वभागस्थास्ते यदा पश्चिमांगताः ॥ १४ ॥
तदा फलं ग्रहाः सर्वे विपरीतं दिशन्ति वै ।
तारतम्यं फलस्यैवं विज्ञेयं विदुषां प्रिये ॥ १५ ॥

अहो प्रिये ! करतल में जहां जहां ग्रह बैठे हैं वहीं यदि टिकेरहें तो शुभ फल कहना हिये ऐसा सामुद्रिकवेत्ता पण्डितों ने कहा है जो ग्रह दक्षिण तरफ़ टिके हों वे यदि उ में बैठे हों और जो ग्रह पूर्वभाग में बैठे हों वे यदि पश्चिम में चले जावें तो समस्त विपरीत फल को देते हैं इस भांति फलों का तारतम्य (कम या ज़्यादः) पण्डितों जानना चाहिये ॥ १३ । १५ ॥

करतले रेखाज्ञानमाह—

सौम्यादधस्तिष्ठति या सुरेखा संपूर्णरूपा यदि मध्यमान्ता ।
आयुष्यरेखां कवयः कुवन्ति संभोगरेखां प्रवदन्ति चान्ये ॥ १६ ॥

बुध ग्रह के नीचे तरफ़ जो रेखा टिकी है वह यदि पूर्णरूप होकर मध्यमा पर्य चली गई हो तो उसको कवियों ने आयुरेखा कहा है और मतान्तर में अन्य कविल उसको संभोगरेखा कहते हैं ॥ १६ ॥

आयुष्यरेखातलगास्ति रेखा तां मातृरेखां कथयन्ति धीराः ।
तस्यास्त्वधस्तिष्ठति पितृरेखा तां केपि सन्तो विवदन्ति चायुः ॥ १७

आयुरेखा के नीचे जो रेखा विद्यमान रहती है उसको पण्डितों ने मातृरेखा कहा उसके नीचे पितृरेखा टिकी रहती है उसको भी कितेक विद्वानोंने आयुरेखा बतलायाहै॥१

मध्यांगता या मणिबन्धनोत्था रेखा यदा पाणितले विभाति ।
तामूर्ध्वरेखां सुधियो भणन्ति साम्राज्यदात्रीं धनधान्यदां च ॥ १८ ॥

यदि करतलमें मणिबन्धन (क़ब्ज़े) से उठी हुई जो रेखा मध्यमा पर्यन्त पहुँच सोहती हो तो उसको बुद्धिमान् सामुद्रिकवेत्तागणों ने ऊर्ध्वरेखा यानी भाग्यरेखा कहा जोकि साम्राज्य को प्रदान करती हुई धन धान्य को देती है ॥ १८ ॥

कुजान्तिकं या प्रतिभाति रेखा समागता सा मणिबन्धनान्तम् ।
ददाति वित्तं परपूरुषाणामतः परस्वाप्तिरियं प्रसिद्धा ॥ १९ ॥

जो रेखा मंगल के समीप सोहती है वह यदि क़ब्ज़े पर्यन्त चली आवे तो पर धन को देती है इसलिये परस्वाप्ति इस नाम से प्रसिद्ध रेखा कहाती है ॥ १९ ॥ (दे चित्र नं० ६)

करतलभग्नरेखामाह—

भग्ना यदा स्यात्परमायुरेखा ह्रासं प्रयायान्मनुजस्य चायुः ।
मातुः सुरेखा परिकर्तिता चेन्मानो विनाशं समियान्नितान्तम् ॥ २० ॥

जिसके करतल में परमायुरेखा यदि भग्नरूप प्रतीत होतो उस प्राणी की आयु ह्रासता (अल्पता) को पाती है और यदि मातृरेखा भग्न होकर कटीसी प्रतीत हो तो उस प्राणी का मान जाता रहता यानी प्रायः अपमान हुआ करता है ॥ २० ॥

पितुः सुरेखा यदि कर्तिता स्यात्तदा पितानाशमुपैति नूनम् ।
यदा भवेद्भिन्नतमस्वरूपा भयं भवेत्तातनौ सुगाढम् ॥ २१ ॥

यदि पिता की रेखा कटीसी प्रतीत हो तो पिता निश्चय कर नाश को प्राप्त होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा भिन्नरूप होकर प्रतीत हो तो पिताके शरीरमें बड़ा भय होता है॥२१॥

संभिन्नरूपा यदि भाग्यरेखा भाग्यस्य ह्रासं मनुजः प्रयाति ।
भग्ना यदा स्यात्परस्वाप्तिरेखा नो पारवित्तं लभते मनुष्यः ॥ २२ ॥

यदि भाग्यरेखा भिन्नरूप से प्रतीत हो तो प्राणी भाग्य की अल्पता को पाता है और यदि परस्वाप्ति रेखा भिन्नरूप होकर प्रतीत हो तो प्राणी पराये धन को नहीं पाताहै॥२२॥

(देखो चित्र नं० ७)

करतलेपरमायुरेखादिफलमाह—

पितुः सुरेखां परमायुरेखां शताब्दसंख्याकृतमानयुक्ताम् ।
श्रुतिप्रमाणं हृदये निधाय वदन्ति विप्रा बहुशास्त्रविज्ञाः ॥ २३ ॥

अनेकानेक शास्त्रों के विज्ञाता बुद्धिमान् लोग वेदों के प्रमाण "शतंजीवामि शरदः" को हृदय में धारकर पितृरेखा को सौ वर्ष की संख्या से किये प्रमाण से संयुक्त परमायुरेखा कहते हैं ॥ २३ ॥

आयुष्यरेखा यवमात्रभागं काष्ठाब्दसंज्ञं प्रवदन्ति सन्तः ।
तन्मानतः स्यात्तु वयोविभागे कष्टादिकं चेति समूहनीयम् ॥ २४ ॥

आयुरेखा के यवमात्रभाग को पण्डित लोग दश वर्ष की संज्ञावाला कहते हैं उसी प्रमाण से अवस्था के विभाग में कष्टादिक होते हैं इसीप्रकार समस्त रेखाओं में विचार करना चाहिये अर्थात् १ जौभर आयुरेखा दश वर्ष की होती है उसी प्रमाण से जहां जहां रेखा कटी हो वहां वहां पीड़ा आदिकों का विचार करै ॥ २४ ॥

मातुः सुरेखा मिलिता यदा स्यान्नोजारजातं मुनयो वदन्ति ।
पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा जारोद्भवं तं मनुजं करोति ॥ २५ ॥

जिसके करतल में मातृरेखा यदि पितृरेखा से मिली हुई प्रतीत हो तो उस प्राणी मुनिलोग जारजात नहीं कहते हैं और यदि मातृरेखा पिता की रेखा से जुदी हो प्रतीत हो तो उस प्राणी को जारजात करती है अथवा पिता माता में जुदाई रहती है ऐ फल कहना चाहिये ॥ २५ ॥

संभोगरेखा बहुकर्तिता चेत्पूर्वोक्तमानेन विचारणीया ।
तस्यास्त्वधस्तिष्ठति बालभावस्ततो ह्यधो यौवनमेव ज्ञेयम् ॥ २६ ॥

यदि संभोगरेखा अनेक स्थलों में कटीसी प्रतीत हो तो पूर्वोक्त मानसे यानी दश के हिसाब से फल को विचारना चाहिये उसके नीचे बालभाव (बालपन) रहत और उसके नीचे यौवन (युवापन) जानना चाहिये यानी जवानीपन बालपन के नी सदैव टिका रहता है ॥ २६ ॥

तस्मादधस्तिष्ठति वृद्धभावो नोभिन्नरूपो नहि कर्तितः स्यात् ।
तत्तत्सुकाले शुभदो जनानामेवं बुधैः सर्वफलं विचिन्त्यम् ॥ २७ ॥

उसके नीचे वृद्धपन (बूढ़ापन) रहता है जो कि भिन्नरूप व कटा हुआ नहीं हो अपने अपने समय में मनुष्यों को शुभदायक होता है इस प्रकार पण्डितों को सम फल विचारना चाहिये ॥ २७ ॥ (देखो चित्र नं० ८)

एकादशलक्षणयुतकरतलफलमाह —

संभोगरेखा

१ संभोगरेखा यदि याति मध्यां शाखाविहीना नहि तत्र लग्ना ।
नैजेन दोषेण समाकुलात्मा यायाज्जनो मृत्युमुखं नितान्तम् ॥ २८ ॥

जिसके करतल में संभोग रेखा (आयुरेखा) यदि मध्यमा पर्यन्त चलीजावे जो शाखाओं से विहीन होकर उस मध्यमा में संलग्न न हो तो वह प्राणी अपने ही दोष व्याकुल आत्मावाला होता हुआ अतिशय मृत्यु के मुख में जाता है ॥ २८ ॥

मातृ रेखा

२ मातुस्सुरेखा यदि खण्डिता सा चापानुरूपा समियात्सुभोगाम् ।
मानापमानेन युतो जनः स्यादात्मापघाती कथितः सुधीभिः ॥ २९ ॥

यदि माताकी रेखा खण्डित होजावे और वही यदि धनुपाकार होकर भोगरेखा के स मने पहुँच जावे तो वह प्राणी मान व अपमान से संयुक्त होता है और उसको पण्डितों आत्मघाती कहा है ॥ २९ ॥

संभोग

३ छिद्रद्वयेनापि युता यदा स्यात्संभोगरेखा परिपूर्णदेहा ।
कट्यार्तियुक्तं मनुजं करोति दौर्बल्यगात्रं ह्युदरामयं तम् ॥ ३० ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) परिपूर्णरूपवाली होती हुई दो छेदों से संयुक्त होवे तो उस प्राणी को कमर की व्याधि से युक्त, दुर्बलगात्रवाला व पेट का रोगी करती है ॥ ३० ॥

४ रेखाविहीना यदि मातृरेखा मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदा स्यात्।
नैष्ठुर्यभावेन युतः सलोभो वासो भवेत्तस्य च दूरदेशे ॥ ३१ ॥

यदि मातृरेखा रेखाओं से विहीन हो यानी शाखाओं से रहित हो तो वह प्राणी मिथ्याभाषी व लोभी होकर निष्ठुरता से संयुत रहता है और उसका वास दूर देश में होता है यानी वह प्राणी कठोर चित्तवाला होता हुआ परदेश में बसता है ॥ ३१ ॥

५ भाग्यस्य रेखा यदि स्वल्पगा स्यात्पितुः सुरेखा खलु वेत्ररूपा।
तदन्तरं यत्प्रतिभाति सम्यक् तदा भवेन्मूढतमो व्ययी ना ॥ ३२ ॥

यदि भाग्यरेखा छोटीसी प्रतीत हो व पिता की रेखा निश्चय कर बेंत के समान देखी जावे और उन दोनों का अन्तर (मध्यभाग) भली भांति सोहता हो तो वह प्राणी खर्चीला होकर महामूर्ख होता है ॥ ३२ ॥

६ यदा भवेन्मध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरस्वरूपम्।
तदा जनं चातिश्रमं करोति शोकाकुलं तापयुतं च खर्वम् ॥ ३३ ॥

यदि मध्यमा के मूल में छोटे रूपवाली दो रेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी को परिश्रमी, शोक से व्याकुल, तापयुत व सर्वकार्य में अल्पता रखनेवाला करती हैं ॥ ३३ ॥

७ यदा भवेत्तर्जनिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतमं विभिन्नम्।
तदा शिराघातयुतो जनः स्यात्पाषाणकार्ये बहुलाभकारी ॥ ३४ ॥

यदि तर्जनी अँगुली की मूल में छोटी व कटी होकर दो रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी पत्थे के आघात से संयुत होकर पत्थरों के कार्य में पड़कर महालाभकारी होता है ॥ ३४ ॥

८ मातुः सुरेखा यदि मध्यभिन्ना वियुक्तरूपा खलु पितृरेखा।
तदन्तरे भाति त्रिकोणचिह्नं संखण्डितं चेज्जनकस्य हन्ता ॥ ३५ ॥

यदि माता की रेखा बीच में कटीसी प्रतीत हो व पिता की रेखा जुदी होकर टिकी हो और उन दोनों के बीच में खण्डित होकर त्रिकोणाकार निशान सोहता हो तो वह प्राणी अपने पिता का मारनेवाला होता है यानी पितृहन्ता इस नाम से विख्यात होताहै ॥ ३५ ॥

९ अनामिकामूलगतं सुचिह्नं गकाररूपं नहि तत्र लग्नम्।
चौर्ये रतं तं मनुजं करोति चित्ते कृतघ्नं चपलस्वभावम् ॥ ३६ ॥

यदि गकाररूप होकर सुव्यक्त चिह्न अनामिका की मूल में प्राप्त हो परन्तु वहां लगा

हुआ न प्रतीत हो तो उस प्राणी को चौरकर्म में रत चित्त में कृतघ्नी व चपल स्वभाव वाला करता है ॥ ३६ ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं कञ्जानुरूपं वसुपर्णगं स्यात् ।
बाल्ये च मध्ये च तथा च वृद्धे वित्तस्य वृन्दं लभते मनुष्यः ॥३७॥

यदि कमल के आकार, आठपत्तोंवाला, सुव्यक्त चिह्न चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हो तो वह प्राणी बालापन, युवापन और वृद्धापन में धनसमूहों को पाता है ॥ ३७ ॥

११ पितुः सुरेखोपरिगं विशुद्धं चिह्नं गुणाख्येन युतं यदा स्यात् ।
कार्योन्नतं तं पुरुषं करोति संनष्टवित्तं विगतासनं च ॥ ३८ ॥

यदि गुणनामक निशान से संयुत होकर विशुद्ध (साफ़) चिह्न पिता की रेखा ऊपर विराजता हो तो उस प्राणी को कार्यों में उन्नत, भलीभांति नष्ट धनवाला व विगत पदाधिकारवाला करती है ॥ ३८ ॥ (देखो चित्र नं० ९)

त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ पित्रोः सुरेखे नहि संगते चेद्रेखाद्वयेनापि युते च खण्डिते ।
कर्तव्यकार्ये सरलं सुबोधं धत्तो जनं तं विगतारिवृन्दम् ॥ ३९ ॥

मातृरेखा, पितृरेखा ये दोनों आपस में मिली न हों व दो रेखाओं से संयुत होकर दो रेखाओं से खण्डित देखी जावें तो उस प्राणी को कर्तव्य कार्य में सीधा व भला जानने वाला व बिना शत्रु समूहोंवाला करती हैं ॥ ३९ ॥

२ कनिष्ठिका मूलगता यदा स्यूरेखाः सुक्षुद्रा बहुला विपूर्णाः ।
विश्वासहीनं पुरुषं करोति चौर्ये रतं घोरतरं दरिद्रम् ॥ ४० ॥

जिसके करतल में कनिष्ठा की मूल में यदि छोटी व कटी होकर अनेक रेखायें प्राप्त हों तो उस प्राणी को विश्वाससे हीन, चौरकर्ममें परायण, भयंकर व दरिद्री करतीहैं॥४०॥

३ अनामिकामूलगता यदैका रेखा सुपूर्णाऽपविखण्डिता स्यात् ।
व्युत्पन्नबुद्धिं विमलस्वभावं कुर्यान्नरं तं महदाश्रयं च ॥ ४१ ॥

यदि एक रेखा पूर्णरूप व वज्र से नहीं खण्डित होकर अनामिका की मूल में प्राप्त होती हुई देखी जावे तो उस प्राणी को शास्त्रों में व्युत्पन्नबुद्धि, उत्तम स्वभाववाला राजा महाराजों के आश्रित रखती है और यदि पूर्वोक्त रेखा वज्र से खण्डित हो तो उक्त फल का अभाव होता है ॥ ४१ ॥

४ अङ्गुष्ठमध्ये विशदा सुरेखा रेखात्रयेणापि विखण्डिता स्यात् ।

सद्वंशजातं मनुजं करोति सद्वंशहीनं यदि लम्बमाना ॥ ४२ ॥

यदि अँगूठा की मूल में स्पष्टरूपवाली एक रेखा तीन रेखाओं से कटीहुई प्रतीत हो तो उस प्राणी को अच्छे वंश में उपजा हुआ करती है और यदि पूर्वोक्त रेखा तीन रेखाओं से लटकी हुई देखी जावे तो उस प्राणी को अच्छे वंशवाला नहीं करती है ॥ ४२ ॥

५ मातुः सुरेखा यदि नीचभागे संकर्तिता पुच्छयुता भवेत्तु। मातृरेखा
धर्मेण हीनं मनुजं करोति पापे प्रवृत्तं पुरुषाधमन्तम् ॥ ४३ ॥

यदि माता की रेखा नीचे तरफ़ कटी व पूंछ से संयुत होकर प्रतीत हो तो उस प्राणी को धर्महीन, पापपरायण व पुरुषों में अधम करती है यानी वह प्राणी अधर्मी व पापी होकर पुरुषों में महानीच गिना जाता है ॥ ४३ ॥

६ संभोगरेखा यदि नीचदेशे संखण्डिता चेत्पृथगा विभाति। संभोगरेखा
पुत्रैर्वियुक्तं पुरुषं करोति रक्ताधिकं रोगयुतं विमूढम् ॥ ४४ ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) नीचेकी ओर खण्डित व अन्तर (फ़ासिला) को प्राप्त होती हुई सोहती हो तो उस प्राणी को सन्तानहीन, अधिक रक्तवाला, रोगी व विशेषता से मूर्ख रखती है ॥ ४४ ॥

७ संभोगरेखोपरिगं यदा स्याद्रेखाद्वयं तर्जनिकासुमूले। संभोग
व्याजेन युक्तं ध्रुववाक्यहीनं कुर्याज्जनं चातिश्रमं सुदुःखम् ॥ ४५ ॥

यदि संभोगरेखा के ऊपर मिली हुई दो रेखायें तर्जनी की मूल के सामने प्रतीत हों तो उस प्राणी को कपटी, स्थिर वाक्यहीन, महापरिश्रमी व दुःखी रखती हैं ॥ ४५ ॥

८ संभोगरेखा यदि मध्यभागे वज्रास्ययुक्ता च गभीररूपा। संभोग
कुर्यान्नरं तं परुषस्वभावं नीचेन साकं कलहे प्रवृत्तम् ॥ ४६ ॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) मध्यभाग (बीच) में वज्र के मुख से संयुत होकर गहरीसी प्रतीत हो तो उस प्राणी को कठोर स्वभाववाला व नीचों के साथ लड़ाई लड़ने में लगाये रहती है यानी वह प्राणी कठिन हृदयवाला होकर अधम जातियों से बखेड़ा रखता है ॥ ४६ ॥

९ पितुः सुरेखोपरिगं यदा स्याद्रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम्।
भार्यासमूहेन युतं करोति भार्याविहीनं बहुखण्डितं चेत् ॥ ४७ ॥

पिता की रेखा के ऊपर दो रेखाओं से खण्डित होकर दो रेखायें प्रतीत हों तो उस प्राणी को भार्यासमूहों से संयुक्त रखती हैं और यदि पूर्वोक्त दोनों रेखायें अनेक रेखाओं से खण्डित होकर प्रतीत हों तो उस प्राणी को भार्याविहीन कर देती हैं ॥ ४७ ॥

१० मातुः सुरेखा यदि मध्यदेशे वज्रास्ययुक्ता च विभिन्नरूपा ।
वाग्वज्रयुक्तं मनुजं करोति पौरोहितेनापि विवादवन्तम् ॥ ४८ ॥

यदि मातृरेखा मध्य भाग (बीच) में वज्रमुख के निशान से युक्त होकर कटीसी प्रतीत हो तो उस प्राणी को कठोरवाणी वाला व पुरोहित से झगड़ा रखनेवाला रखती है यानी वह प्राणी अपने पुरोहित से लड़ाई रखता हुआ कठोर वाणी को बोलता है॥४८

११ अङ्गुष्ठमूले विशदं यदा स्याद्रेखाचतुष्कं च पृथक्स्वरूपम् ।
चित्ते कृतघ्नं मनुजं करोति व्यायामसक्तं विविधार्तियुक्तम् ॥ ४९ ॥

यदि अँगूठे की मूल में चार रेखायें स्पष्ट होकर अलग अलग देखी जावें तो उस प्राणी को चित्त में कृतघ्नी व कसरती व अनेकानेक पीड़ाओं से संयुक्त रखती हैं यानी वह प्राणी अकृतज्ञ होकर कसरत करता हुआ अनेक रोगों से घिरा रहता है ॥ ४९ ॥

१२ स्यातां गते मध्यमिकामूले रेखे सुरेखाद्वयखण्डिते चेत् ।
शूलाख्यरोगेण युतं दधाते कारुण्यहीनं विकलं जनं तम् ॥ ५० ॥

यदि मध्यमा की मूल में दो रेखायें दो २ रेखाओं से खण्डित होकर प्रतीत हों तो उस प्राणी को शूलपीड़ा से युक्त दयाहीन व विकल रखती हैं यानी वह प्राणी विकल होता हुआ करुणारससे विहीन होकर शूलपीड़ा से पीड़ित बना रहता है ॥ ५० ॥

१३ सर्वाङ्गुलीनां प्रथमे परुष्के कुम्भाख्यलग्नं यदि राजते तु ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विमुक्तसंगो विरहातुरश्च ॥ ५१ ॥

यदि समस्त अँगुलियों की पहली पर्व में कुम्भराशि का स्वरूप सोहता हो तो वह प्राणी संग से रहित होकर विरह से व्याकुल होता हुआ तालाब व नदी आदिकों में डूब जाता है ॥ ५१ ॥ (देखो चित्र नं० १०)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा रेखात्रयेणापि युता च भिन्ना ।
हत्यासहस्रेण युतो जनः स्याद्द्वीपान्तरं चैति कुटुम्बशत्रुः ॥ ५२ ॥

यदि माता की रेखा पिता की रेखा से जुदी होकर तीन रेखाओं से संयोग करती हुई कटीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी हज़ारों हत्याओं से युक्त होता है और भाई बन्धुओं से विरोध होकर निज देशको त्यागता हुआ दूसरे द्वीप को चला जाता है ॥ ५२ ॥

२ मातुस्सुरेखा यदि पूर्वभागे रेखाद्वयेनापि विकर्तिता स्यात् ।
तदा जनो गच्छति दूरदेशं चान्यायकार्ये समुपैति घातम् ॥ ५३ ॥

यदि माता की रेखा पूर्वभाग में दो रेखाओं से कटीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी दूर देश को जाता है और अन्यायकार्य में आघात को पाता है यानी वह प्राणी दूर देश में जाकर अन्याय से मारा जाता है ॥ ५३ ॥

३ प्रदेशिनीमूलगतं विशुद्धं चिह्नं धनाख्येन युतं यदा स्यात् ।
पदोन्नतिं वै लभते मनुष्यः शिल्पे प्रवीणो व्यवसायमान्यः ॥ ५४ ॥

यदि धन नामक + निशान से युक्त होकर साफ़ चिह्न तर्जनी की मूल में देखा जावे तो वह प्राणी अपने अधिकार की उन्नति को पाता है और शिल्पकार्य में प्रवीण होकर रोज़गार से माननीय होता है ॥ ५४ ॥

४ मध्यापरुष्कं तृतयं विलङ्घ्य रेखा विमिश्रा यदि याति भोगाम् ।
कारागृहे वासमुपैति प्राणी श्यामा सुरेखा यदि चैति मृत्युम् ॥ ५५ ॥

मध्यमा की तीसरी पर्व (पोर) को नांघकर क्षुद्ररेखा से मिली रेखा संभोगरेखा के सामने यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी कारागार (जेलखाने) में वास करता है और यदि पूर्वोक्त रेखा कालीसी प्रतीत हो तो मृत्यु को पाता है ॥ ५५ ॥

५ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं कुम्भस्वरूपं यदि शोभते तु ।
तदा जनो मज्जति तोयराशौ श्लेष्मस्वभावो बहुपीडितश्च ॥ ५६ ॥

यदि कुम्भलग्न का स्वरूप होकर शोभन चिह्न चन्द्रमा के स्थान में सोहता हो तो वह प्राणी जलमें डूबता है और कफीला होकर अनेकानेक रोगों से पीड़ित होता है यानी वह प्राणी घनी व्याधियों से घबड़ाता हुआ कफी होकर नदी आदिकोंमें डूब जाता है ॥५६॥

६ पितुः सुरेखा मणिबन्धमेति पीना विशाखा परिपूर्णरूपा ।
मातापितृभ्यां परिवञ्चितस्सन्नाप्नोति जन्तुर्विफलं समस्तम् ॥ ५७ ॥

यदि पिता की रेखा मोटी व विगतशाखावाली होती हुई पूर्णरूप होकर मणिबन्ध (क़ब्ज़े) पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी माता पिताओं से छला हुआ समस्त विफल को पाता है ॥ ५७ ॥

७ मातुस्सुरेखा निकटे यदा चेन्नाक्षत्रचिह्नं विशदं विभाति ।
तदा जनो भूपतिवल्लभस्स्यात्स्वज्ञातिवृन्दे समुपैति मानम् ॥ ५८ ॥

जिस समय मातृरेखा के समीप साफ़ होकर नक्षत्रचिह्न यदि सोहता हो तो वह प्राणी राजा का प्यारा होता है और अपनी जातिसमूह में मान को पाता है यानी वह प्राणी अपने वंश में प्रतिष्ठित होता है ॥ ५८ ॥

८ अङ्गुष्ठमूले समकोणचिह्नं रेखाद्वयेनापि युतं यदा स्यात् ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ स्वल्पं धनं विन्दति सर्वकाले ॥ ५९ ॥

यदि दो रेखाओं से संयुक्त होकर समकोण का निशान अँगूठा की मूल में देखा ज
तो वह प्राणी जल में डूबता है और सब कालों में थोड़ा सा धन पाता है ॥ ५९ ॥

९ मातुस्सुरेखा यदि नीचदेशे समानभावेन नतोभयत्र ।
मानेन युक्तो मनुजस्तदा स्यात्पदाधिकारी जनवल्लभश्च ॥ ६० ॥

यदि माता की रेखा नीचभाग में समानभाव से दोनों तरफ़ लचीसी प्रतीत हो
वह प्राणी मान से संयुत व पदाधिकारी होकर जनों का प्यारा होता है यानी लोक
उस प्राणी की बड़ी प्रतिष्ठा होती है और वह किसी ऊंचे अधिकार में नियत होता है
उसको सर्वजन चाहते हैं ॥ ६० ॥

१० भाग्यस्य रेखा मिलिता जनन्यां संकोणचिह्नेन युता यदा स्यात् ।
बुद्ध्या विहीनं मनुजं करोति वादे प्रवृत्तं बहुलामयं च ॥ ६१ ॥

यदि भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) माताकी रेखामें मिलकर कोणचिह्नसे संयुक्त देखी ज
तो उस प्राणीको बुद्धिहीन बड़ा झगड़ालू व अनेक रोगोंवाला बनाये रखती है ॥ ६१

११ भाग्यस्य रेखा निकटे विभाति चिह्नं चतुष्कोणयुतं त्रिपर्णम् ।
निर्बोधरूपो मनुजस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥ ६२ ॥

यदि भाग्यरेखा के समीप चार कोनों से संयुत होता हुआ तीन दलोंवाला निश
सोहता हो तो वह प्राणी ज्ञानहीन होता है और यदि स्त्री के करतल में पूर्वोक्त निश
देखा जावे तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ६२ ॥

१२ अनामिकामूलगता सुरेखा स्थूलस्वरूपा कुटिला यदा स्यात् ।
प्रसूतिकाले रमणीगणानां मृत्युं प्रदद्याद्भयदा जनानाम् ॥ ६३ ॥

यदि शोभनरेखा मोटी व टेढ़ी होकर अनामिका की मूल में प्रतीत होवे तो प्रसू
काल में नारीगणों को मृत्यु देती है और यदि पुरुषों के करतल में पूर्वोक्त रेखा दे
जावे तो उनको भयदायक होती है ॥ ६३ ॥

१३ कनिष्ठिका मूलगता यदा स्यू रेखा विशुद्धास्सरलाश्च तिस्रः ।
सर्वेषु कार्येषु महाप्रवीणो भूत्वा च वित्तं लभते मनुष्यः ॥ ६४ ॥

यदि कनिष्ठा की मूल में साफ़ व सीधी होकर तीन रेखायें प्रतीत हों तो वह प्रा

समस्त कार्यों में बड़ा चतुर होकर धन को पाता है यानी वह प्राणी सर्वकार्यों के करने में समर्थ होता हुआ धन का लाभ उठाता है ॥ ६४ ॥

१४ प्रदेशिनीं चापि विलङ्घ्य रेखा पूर्णा विशाखा यदि भाति भोगा ।
यावज्जनो जीवति जीवलोके हत्याप्लुतो भीतियुतश्च तावत् ॥ ६५ ॥

यदि प्रदेशिनी (तर्जनी) को नांघकर भोगरेखा पूर्णरूप होकर विगतशाखावाली प्रतीत हो तो वह प्राणी जब तक जीवलोक में जीता है तब तक हत्याओं से घिरा हुआ भयभीत रहता है ॥ ६५ ॥ (देखो चित्र नं० ११)

अथ त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा प्रदेशिनीमूलगता विभाति । मातृरेखा
अर्थप्रणाशं लभते मनुष्यश्चानन्दहीनो भ्रमते नितान्तम् ॥ ६६ ॥

जिसके करतल में पिता की रेखा से वियुक्त होकर मातृरेखा यदि तर्जनी की मूल में सोहती हो तो वह प्राणी धन के नाश को प्राप्त होता है और आनन्द से हीन होकर भूतल में बहुत ही घूमता है ॥ ६६ ॥

२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा विभिन्ना समुपैति काव्यम् ।
तदा महात्मा मनुजः सुचेताः सत्ये रतः स्याद्व्यवहारहीनः ॥ ६७ ॥

यदि मणिबन्ध (कब्जे) के स्थान से उठी हुई रेखा कटीसी होकर शुक्र के समीप चली जावे तो वह प्राणी महात्मा व शोभन मनवाला होता हुआ व्यवहारों से हीन होकर सत्य में परायण रहता है ॥ ६७ ॥

३ भिन्नत्रिकोणेन युता सुपूर्णा भाग्यस्य रेखा यदि याति भोगाम् ।
तदा स्वदेशे मृतिमेति जन्तुः संखण्डिता चेत्पतितो महोच्चात् ॥ ६८ ॥

कटेहुए त्रिकोण से युक्त व पूर्ण होकर भाग्य की रेखा यदि भोगरेखा में मिल जावे तो वह प्राणी अपने देश में मौत को पाता है और यदि भाग्यरेखा भलीभांति खण्डित होकर प्रतीत हो तो वह प्राणी बड़े ऊंचे स्थान से गिरकर मरजाता है ॥ ६८ ॥

४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशकात्पितुः सुरेखा यदि याति तर्जनीम् । पितृ
तदा जनो गच्छति दूरदेशकं नाप्नोति वित्तं भ्रमते भयार्तकः ॥ ६९ ॥

यदि मणिबन्ध (कब्जे) की जगह से उठी हुई पिता की रेखा तर्जनी पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी दूर देश को जाता है परन्तु धन को नहीं पाता है इसलिये भय से घबड़ाता हुआ घूमता है ॥ ६९ ॥

५ अनामिकामूलगतं सुचिह्नं नक्षत्ररूपं विशदं विभाति ।
संपत्तिसङ्घैः सहितो नरः स्यादाप्नोति वित्तं बहुबन्धुसौख्यम् ॥ ७० ॥

यदि नक्षत्ररूप (नखत के आकार) शोभन चिह्न साफ़ होकर अनामिका की मू लगा हुआ सोहता हो तो वह प्राणी संपद्दासमूहों से घिराहुआ बहुतसे धन व बन्धु सं को पाता है ॥ ७० ॥

६ संभोगरेखा यदि याति तर्जनीं शाखाविहीना मिलिता च भाग्यके ।
दौर्भाग्यवन्तं मनुजं करोति सा तीक्ष्णास्त्रघातेन मृतिं ददाति वै ॥७

यदि संभोगरेखा भाग्यरेखा से मिलाप करती हुई शाखाओं से विहीन होकर त पर्यन्त चली जावे तो उस प्राणी को बुरे भागवाला बनाती है और तीक्ष्ण अस्त्राघात मौत को देती है ॥ ७१ ॥

७ मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे समायुता चोर्मिकया विभाति ।
दारिद्र्यदोषेण युतो जनः स्याद्गुह्यामयो गौरवभावशून्यः ॥ ७२ ॥

यदि मातृरेखा नीचे तरफ़ मुँदरी के निशान से संयुक्त होकर सोहती हो तो वह प्रा दारिद्र्य दोष से घिरा व गुह्यदेश में रोगवाला होता हुआ गौरव (गुरुता) से खा रहता है ॥ ७२ ॥

८ अनामिकामध्यमिकासुमध्यं ह्यृणाख्यचिह्नेन युतं यदा स्यात् ।
तदा जनो निष्ठुरतासमेतो दीर्घेण क्रोधेन परिप्लुतः स्यात् ॥ ७३ ॥

अनामिका व मध्यमिका का बीच ऋण नामक चिह्न से संयुत होकर प्रतीत हो तो प्राणी दीर्घ (बड़े भारी) क्रोध से घिरा हुआ निष्ठुरता से संपन्न रहता है ॥ ७३ ॥

९ निशाकरस्थानगता गभीरा रेखा यदैका जननीमुपैति ।
तदा जनो निन्दनहासकारी धर्माधिपे वित्तधरो द्वयी चेत् ॥ ७४ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुई एक रेखा गहरी होकर यदि मातृरेखा के समीप च जावे तो वह प्राणी निन्दा को करता हुआ हँसता रहता है और यदि दो रेखायें म रेखा के समीप चली जावें तो वह प्राणी धर्माधिप में धनको धारता है ॥ ७४ ॥

१० पितुस्सुरेखोपरिगं यदा स्याद्वृत्तार्धचिह्नं परिपूर्णरूपम् ।
तदा जनस्तिष्ठति स्वस्य गेहे भयप्रदः स्यात्परिवारवर्गे ॥ ७५ ॥

यदि पिता की रेखा के ऊपर प्राप्त हुआ अर्धवृत्त का निशान परिपूर्णरूप से देखा ज तो वह प्राणी अपने घर में ही टिका रहता है और अपने परिवारसमूह में भयदा होता है ॥ ७५ ॥

११ भाग्येन युक्ता विशदा सरक्ता प्रदेशिनीं याति सुभोगरेखा ।
तदा जनो ब्रह्मविचारसारो जितेन्द्रियः स्यात्तु विरक्तचित्तः ॥ ७६ ॥

यदि सुभोगरेखा भाग्यरेखा से संयुत, साफ़ व लाल होकर तर्जनी पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी ब्रह्म का विचार करता हुआ जितेन्द्रिय होकर विरक्त चित्त रहता है ॥ ७६ ॥

१२ महीसुतस्थानगतं सुचिह्नं खड्गानुरूपं नहि याति मध्यम् ।
मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदा स्याल्लोभी धनेप्सुर्धृतिधर्महीनः ॥ ७७ ॥

यदि मङ्गल के स्थान में प्राप्त हुआ तलवार के समान होकर शोभन चिह्न करतल के बीच को नहीं नांघै तो वह प्राणी मिथ्याभाषी, लोभी व धनाभिलाषी होकर धारणा व धर्म से हीन रहता है ॥ ७७ ॥

१३ पितुः सुरेखोत्थितचुल्लिरूपया संकर्तिता स्याज्जननी सुरेखया ।
तदा जनो दुर्बलदेहधारकः प्लीहादिरोगैर्नितरां प्रपीडितः ॥ ७८ ॥

यदि पिता की रेखा से उठी हुई चूल्हे के समान आकारवाली शोभन रेखा से कटी मातृरेखा प्रतीत हो तो वह प्राणी दुर्बल देहधारी होकर प्लीहा व यकृत् आदि रोगों से अतिपीड़ित रहता है ॥ ७८ ॥ (देखो चित्र नं० १२)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ संभोगरेखा यदि कर्तिता स्यात्तस्याः सुशाखा समुपैति मध्याम् ।
सन्तानप्रीतो मनुजस्तदा स्याद्धामी सुनामी व्यवसायपूर्णः ॥ ७९ ॥

यदि संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) कटीसी प्रतीत हो और उसकी शाखा मध्यमा पर्यन्त चली जावे तो वह सन्तानों पै प्रसन्न रहता हुआ धामी व बड़ानामी होकर रोज़गार से पूर्ण होता है ॥ ७९ ॥

२ पितुः सुरेखोत्थितभाग्यरेखिका मध्ये गभीरा समुपैति मातरम् ।
अशीतिवर्षप्रमितं सुजीवनं लब्ध्वा जनश्चैति मृतस्य वित्तकम् ॥ ८० ॥

पिता की रेखा से उठी हुई भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) बीच में गहरी होकर यदि माता की रेखा में मिल जावे तो वह प्राणी अस्सी वर्ष की आयु को पाकर मृतक पुरुष के धनसमूह को पाता है ॥ ८० ॥

३ सम्भोगरेखा यदि नीचदेशे वृत्ताख्यचिह्नेन युता विभाति ।
तदा जनो बालगणप्रियः स्यादाचारहीनो व्यभिचारशीलः ॥ ८१ ॥

यदि संभोगरेखा नीचे तरफ़ वृत्त नामक निशान से संयुत होकर सोहती हो तो वह

प्राणी बालगणों का प्यारा होता हुआ आचार से हीन होकर व्यभिचार में परा रहता है ॥ ८१ ॥

४ कनिष्ठिकामूलगते यदा स्तो रेखे सुक्षुद्रे त्रयपर्वगे चेत् ।
तदा जनः स्याद्बहुभोगयुक्तो नार्या यदा चेत्सुखकारिणी सा ॥ ८

यदि कनिष्ठा की मूल में प्राप्त हुई छोटीसी दो रेखायें कनिष्ठा की तीसरी पो पहुँच जावें तो वह प्राणी अनेकानेक भोगों से संयुक्त होता है और यदि पूर्वोक्त रेखायें लोगों के करतल में देखी जावें तो वह सुखकारिणी होकर संभोगकारिणी होती हैं॥८

५ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता रेखाचतुष्कैः परिकर्तिता स्यात् ।
तदा जनो भूपगणैर्विभीतः संव्यस्तचित्तः परितः प्रयाति ॥ ८३ ॥

यदि संभोगरेखा मध्यमापर्यन्त पहुँचकर चार रेखाओं से कटीसी प्रतीत हो तो वह प्रा राजगणों से डरता व चित्त को डामाडोल करता हुआ चारों तरफ़ घूमता फिरता है ॥८

६ मध्यापरुष्कं तृतयं विलङ्घ्य रेखा विभिन्ना यदि याति भाग्याम् ।
वक्षश्शिराघातयुतो जनः स्याद्बाधासमूहैः परिपीडिताङ्गः ॥ ८४ ॥

मध्यमा की तीसरी पर्व को प्राप्त होकर एक रेखा भिन्न होकर यदि भाग्यरेखा समीप चली जावे तो वह प्राणी वक्षस्स्थलाघात व शिराघात से संयुत होकर बाधा मूहों से पीड़ित अंगोंवाला रहता है ॥ ८४ ॥

७ अङ्गुष्ठमध्याद्यदि याति तर्जनीं रेखा यदैका चतुरस्रमध्यमा ।
तदा जनः स्याद्गुरुतः पुरोहितात्संपर्कहीनो बहुवादकारकः ॥ ८५

जिस समय बीच में चौकोणवाली एक रेखा अँगूठा के मध्य से चलती हुई तर्ज पर्यन्त पहुँच जावे तो वह प्राणी अपने गुरु व पुरोहित से नहीं मिलाप करता हुआ ब से वादों का करनेवाला होता है ॥ ८५ ॥

८ मातुः सुरेखा यदि नीचभागे चिह्नेन गोलाकृतिना युता स्यात् ।
वामे च दक्षे च विनष्टचक्षुश्चिह्नद्वयं चेत्कथितः सदान्धः ॥ ८६ ॥

यदि माता की रेखा नीचे तरफ़ गोलाकार चिह्न से संयुत होकर प्रतीत होवे तो प्राणी बायें व दाहिने तरफ़ काना होता है यानी यह गोलाकार निशान रेखा की ओर देखा जावे तो वह प्राणी वाम आंख का काना होता है और जो दाहिने तरफ़ गो कार निशान प्रतीत हो तो वह प्राणी दाहिनी आंख का काना होताहै और जो रेख दोनों तरफ़ निशान प्रतीत हों तो वह प्राणी हमेशा अन्धा कहा जाता है ॥ ८६ ॥

९ संभोगरेखा निकटे यदास्ति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम् । संभोगरेखा
तदा जनो बान्धवमृत्युहेतुः कठोरवादी कठिनस्वभावः ॥ ८७ ॥

यदि संभोगरेखा के समीप वृत्तार्ध चिह्न साफ़ व विशाल होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी अपने बान्धवों की मौत का कारण होकर कठोरवादी होता हुआ कठिन स्वभाव वाला कहाजाता है ॥ ८७ ॥

पितृरेखा

१० पितुः सुरेखा मिलिता जनन्यां मातुः सुरेखा नहि खण्डिता स्यात् ।
तदा जनो वेदविचारशीलो ज्ञानी गुणी स्यादभिमानहीनः ॥ ८८ ॥

यदि पिता की रेखा मातृरेखा में मिल जावे और मातृरेखा नहीं खण्डित होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी वेद का विचार करता हुआ ज्ञानी व गुणी होकर अभिमान (घमण्ड) से हीन रहता है ॥ ८८ ॥

११ मातुः सुरेखा निकटे यदास्ति गुणाख्यचिह्नं परिपूर्णरूपम् ।
तदा जनः स्याद्रमणीगणानां वाक्योत्तरे प्राप्तमहाधिकारः ॥ ८९ ॥

यदि माता की रेखा के समीप गुणनामक चिह्न (निशान) परिपूर्णरूपवाला होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी स्त्रीगणों के वाक्यों के उत्तर देने में बड़ा अधिकारी होता है ॥ ८९ ॥

१२ क्षपाकरस्योपरिगा यदा स्यू रेखास्सुक्षुद्रा बहुलाः सुपूर्णाः ।
तदा जनो घोरतरं सुरोगं प्राप्नोति काये कमलाविहीनः ॥ ९० ॥

यदि बहुत सी छोटी छोटी रेखायें पूर्णरूप होकर चन्द्रमा के ऊपर प्रतीत होवें तो वह प्राणी लक्ष्मी से विहीन होकर अपने शरीर में बड़े भयंकर रोग को पाता है ॥ ९० ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्पितुः सुरेखा बहुवक्ररूपा ।
तदा जनो वह्निविदग्धगात्रो वैकल्यचित्तो विविधामयश्च ॥ ९१ ॥

यदि मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठी हुई पिता की रेखा अनेक स्थानों में टेढ़ी सी प्रतीत होवे तो वह प्राणी आगी से जली देहवाला होकर विकल चित्त होता हुआ अनेकानेक रोगोंवाला कहाता है ॥ ९१ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदाः सुपञ्च रेखा यदा भान्ति समान्तरालाः ।
तदा जनस्सौख्ययुतो धनी स्याद्रेखात्रयं चेत्फलताविनाशः ॥ ९२ ॥

यदि पांच रेखायें साफ़ व समान अन्तरवाली होकर अँगूठा की मूल में सोहती हों तो वह प्राणी सुखी होकर धनी होता है और यदि तीन रेखायें प्रतीत हों तो फलसमूहों का नाश होजाता है ॥ ९२ ॥

१५ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरा समुपैति चन्द्रम् ।
विश्वासयुक्तो मनुजस्तदा स्याद्विश्वासहीनो निजबन्धुवर्गे ॥ ९३

यदि मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई एक रेखा गंभीर होकर चन्द्रमा के स चली जावे तो वह प्राणी विश्वास से युक्त होकर अपने बन्धुवर्गों में विश्वास से रहता है ॥ ९३ ॥ (देखो चित्र नं० १३)

अथ पुनरपि पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ मातुः सुरेखोपरिगं सुचिह्नं सर्पानुरूपं यदि याति पैत्रीम् ।
तदा जनः स्यात्सरलस्वभावो निर्लज्जरूपः सहसा समेतः ॥ ९४ ॥

जिसके करतल में माता की रेखा के ऊपर प्राप्त सर्प के समान रूपवाला शोभ मान चिह्न यदि पिता की रेखा के पास चलाजावे तो वह प्राणी सीधे स्वभाववाल निर्लज्जरूप (बेशर्म) होकर साहसिक होता है ॥ ९४ ॥

२ कनिष्ठिकामूलगता विभाति रेखा सुरेखाद्वयखण्डिता चेत् ।
तदा नरः स्याद्व्यभिचारयुक्तो नार्या यदा चेद्गणिका भवेत्सा ॥ ९५

यदि कनिष्ठा की मूल में प्राप्त हुई रेखा दो रेखाओं से खण्डित होकर सोहती हो वह प्राणी व्यभिचार में परायण रहता है और यदि पूर्वोक्त रेखा जिस स्त्री के करतल देखी जावे तो वह वेश्यावृत्ति से निर्वाह करती है ॥ ९५ ॥

३ अनामिकामूलगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम् ।
तदा जनो बन्धुजनस्य घाती द्वेषी विषादी परनिन्दकः स्यात् ॥ ९६

यदि अनामिका की मूल में प्राप्त हुआ साफ़ व विशाल होकर वृत्तार्ध चिह्न विराज हो तो वह प्राणी बन्धुजनों का मारनेवाला, शत्रुता रखनेवाला व विषादी होकर स की निन्दा करनेहारा होता है ॥ ९६ ॥

४ कनिष्ठिका मूलगतं सुचिह्नं लूतानुरूपं विशदं विभाति ।
तदा जनः स्यात्परिहासकारी जल्पाकरूपी विजयाभिलाषी ॥ ९७

यदि कनिष्ठा की मूल में टिका हुआ साफ़ मकड़ी के आकारवाला शोभायमान चिह्न सो हो तो वह प्राणी बड़ा हँसनेवाला व बकनेवाला होकर विजय की अभिलाषा रखताहै॥९

५ आयुष्यरेखा यदि मध्यमान्ता अधःसुसूक्ष्मोपरितः सुपीना ।
तदा जनो वैरिगणाभिभूतो विपर्यये चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ ९८

संभोग

यदि आयुष्यरेखा (संभोगरेखा) मध्यमा पर्यन्त पहुँची हुई नीचे तरफ़ पतली ऊपरले भाग में मोटीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी वैरिगणों से अनादृत (हाराहु

होता है और यदि ऊपरले भाग में पतली व निचले भाग में मोटी सी देखी जावे तो वह प्राणी वैरियों को पराजित करता है ॥ ९८ ॥

संभोगरेखा

९ संभोगरेखा यदि नीचभागके संकर्तिता स्यात्तु सुसूक्ष्मरेखया ।
तदा नरः स्यान्नरनाशकारकः संव्यस्तचित्तो निजपितृघातकः ॥९९॥

यदि संभोगरेखा (आयुरेखा) नीचे तरफ़ छोटी रेखा से कटी हुई प्रतीत हो तो वह प्राणी नरहत्याकारी होकर चित्त को चलायमान करता हुआ अपने बाप का मारनेवाला होता है ॥ ९९ ॥

पितृरेखा

१० पितुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे क्षुद्रा विभिन्ना विशदा सुपूर्णा ।
तदा जनः सर्वजनप्रियः स्याद्व्युत्पन्नबुद्धिर्विमलस्वभावः ॥ १०० ॥

यदि पिता की रेखा ऊपरले भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई साफ़ होकर पूर्णरूप से प्रतीत हो यानी भारी रेखा देखी जावे तो वह प्राणी सर्वजनों का प्यारा होकर व्युत्पन्नबुद्धिवाला होता हुआ विमलस्वभाववाला रहता है ॥ १०० ॥

भाग्यरेखा

११ भाग्यस्य रेखा मिलिता जनन्यां संकोणचिह्नं विशदं विभाति ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो व्यसनातुरश्च ॥ १ ॥

यदि भाग्य की रेखा माता में मिल जावे व साफ़ होकर भलीभांति कोणका निशान दीखता हो तो वह प्राणी कसरती होकर जूआ आदि व्यसनों में लगा हुआ नदी नाले आदिकों में डूबजाता है ॥ १ ॥

पितृरेखा

१२ पितुः सुरेखा यदि मध्यभागे क्षुद्रा विभिन्ना मणिबन्धमुक्ता ।
रोगाभिभूतो मनुजस्तदा स्यात्पूर्वोक्तमानेन विचारणीयः ॥ २ ॥

मणिबन्ध (कब्ज़े) से छूटी हुई पिता की रेखा यदि मध्यभाग (बीच) में छोटी छोटी रेखाओं से कटीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी रोगों से पीड़ित होता है यह पूर्वोक्तमान से विचार करना चाहिये यानी एक जवभर का मान दशवर्ष का होता है उसी संकेत से विचारना चाहिये ॥ २ ॥

१३ भाग्यादधः स्याच्छिबिकानुरूपं चिह्नं सुपूर्णं विशदस्वरूपम् ।
तदा नरो नादविचारशीलो मित्राभिभूतो मरणं प्रयाति ॥ ३ ॥

यदि भाग्यरेखा के नीचे तरफ़ मियाना, पीनस आदिकों के समानरूपवाला चिह्न साफ़ पूर्णरूप से देखा जावे तो वह प्राणी नादविद्या (सांगीतशास्त्र) में परायण होता हुआ मित्रों से अनादृत होकर मौत को पाता है ॥ ३ ॥

१४ भाग्येन भिन्ना यदि पितृरेखा संपूर्णरूपा मिलिता जनन्याम् ।

आयुष्ययुक्तो मनुजस्तदा स्याद्युद्धाभिलाषी विजये रतश्च ॥ ४ ॥

यदि भाग्यरेखा से कटी हुई पिता की रेखा पूर्णरूप होकर माता की रेखा में मि जावे तो वह प्राणी शतायु होकर लड़ने की लालसा रखता हुआ विजयमें रत रहता है॥

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं विशदं विभाति ।
सम्पत्तिपूर्णः पुरुषः प्रकाशी पारुष्यहीनो धनतामुपैति ॥ ५ ॥

यदि चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ चूल्हे के समान रूपवाला शोभायमान चिह्न स्प रूप से सोहता हो तो वह प्राणी संपदाओं से पूर्ण होताहुआ प्रकाशमान व कठोरता से हो होकर ठेकाआदिकों से धनसमूहों को पाता है ॥ ५ ॥

१३ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति भाग्याम् ।
कारागृहं याति नरस्तदानीं नैजेन दोषेण समाकुलात्मा ॥ ६ ॥

यदि मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठा हुआ चिह्न (निशान) सर्प के समान होकर भाग्य रेखा के पास चला जावे तो वह प्राणी अपने दोषसे बहुत व्याकुल मनवाला होता हुआ जेलखाने को जाता है यानी वह प्राणी अपने अपराध सेही जेल में डाला जाता है ॥ ६

१४ काव्यान्तिके तिष्ठति शुद्धरूपं नाक्षत्रचिह्नं यदि भासमानम् ।
वेश्यासु सक्तो मनुजस्तदा स्यान्निन्दान्वितो निन्दितलोकवासी ॥७

यदि नक्षत्र का चिह्न (निशान) प्रकाशमान होता हुआ शुद्धरूप होकर शुक्र के समीप टिका होवे तो वह प्राणी वेश्याओं में आसक्त होता हुआ निन्दित होकर निन्दितलोगों का सहवासी होता है ॥ ७ ॥

१५ आयुष्यशेषे यदि भाति चिह्नं तारानुरूपं युगलस्वरूपम् ।
नारीसमूहैः सहितो नरः स्यान्निन्दान्वितः कामकलाकलापी ॥ ८ ॥

आयुष्यरेखा (पितृरेखा) के शेषभाग में तारा के समान जोड़ारूप निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी नारीसमूहों से घिराहुआ निन्दा से संयुत होकर कामकलाओं का समुदाय वाला कहाता है ॥ ८ ॥ (देखो चित्र नं० १४)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के विभान्ति रेखाः सरलाश्च तिस्रः ।
पुत्रत्रयं वै लभते मनुष्यः संवक्ररूपा बहुकन्यकाश्चेत् ॥ ९ ॥

यदि कनिष्ठा की तीसरी पर्व में सीधी होकर तीन रेखायें सोहती हों तो वह प्राणी तीन पुत्रों को निश्चय कर पाता है यह उपलक्षणमात्र है यानी जितनी सीधी रेखायें पर्व

हों उतने ही पुत्रों को प्राणी पाता है और यदि भलीभांति टेढ़ी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी बहुतसी कन्याओं को पाता है ॥ ९ ॥

२ अनामिकामूलगते यदास्तो रेखे सुक्षुद्रे कुटिले विशुद्धे ।
कट्यार्तिभीतिं लभते मनुष्यः कामी कलावान्कमलासमेतः ॥ १० ॥

जिससमय छोटी, टेढ़ी व साफ़ होकर दो रेखायें अनामिका की मूल में विद्यमान देखी जावें तो वह प्राणी कामी, कलावान् व लक्ष्मी से संपन्न होकर कमर की पीड़ा को पाता है ॥ १० ॥

३ यदागतं मध्यमिकामुमूले रेखात्रयं चेत्कुटिलस्वरूपम् ।
वातार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्वादी विषादी विषयानुरक्तः ॥ ११ ॥

जिस समय टेढ़े रूपवाली तीन रेखायें मध्यमा की मूल में पाई जावें तो वह प्राणी वातरोग से पीड़ित होता हुआ वादी व विषादी होकर विषयोंमें अनुरक्त होता है ॥ ११ ॥

४ आयुष्यशाखा यदि याति तर्जनीं वृद्धाङ्गुलिं चैति तथा द्वितीयिका । संभोग
सौभाग्ययुक्तो मनुजो दयालुको दाता प्रियः स्याद्बहुजन्तुपालकः॥१२॥

यदि आयुरेखा (संभोगरेखा) की पहली शाखा तर्जनी पर्यन्त चली जावे और दूसरी शाखा अँगूठा की ओर धावे तो वह प्राणी सौभाग्यसंपन्न, दयावान्, दाता व सबों का प्यारा होकर घने जीवों का पालक होता है ॥ १२ ॥

५ संभोगरेखा यदि नीचभागे गुणत्रयेणाप्यवकर्तिता स्यात् ।
वातामयः स्यान्मनुजस्तदानीं वाणीविलासो वनितारतश्च ॥ १३ ॥

यदि संभोगरेखा निचले भाग में तीन गुणों के × निशानों से कटी हुई प्रतीत होवे तो वह प्राणी वादीरोग से पीड़ित होकर वाणी का विलास करता हुआ रमणियों में रत रहता है ॥ १३ ॥

६ मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे गोलाकृतिभ्यां च युता ह्यपूर्णा ।
तदा नरः स्यात्प्रथमे वयस्के हत्याकरो हानिपरो विशोकी ॥ १४ ॥

यदि माता की रेखा नीचे के तरफ़ दो गोलाकार निशानों से संयुत होकर पूर्णरूप में नहीं देखी जावे तो वह प्राणी पहली उमर में हत्याओं को करता व हानि में परायण होता हुआ विशेषता से शोचनेवाला होता है यानी ये गोलाकार निशान यदि निचले भाग में देखेजावें तो मध्य व वृद्धावस्था में वह प्राणी हत्याकारी होता है और यदि आ-

१ हमारे देश में इसी का आयुरेखा मानते हैं ॥

रम्भदेश में गोलाकार निशान जितनी संख्यावाले प्रतीत हों तो पहली उमर में उतने आघात करता है ॥ १४ ॥

७ पितुः सुरेखा यदि मध्यभागे क्षुद्रा विभिन्ना परिपूर्णरूपा ।
रागी विरागी मनुजस्तदा स्यात्पशुस्वभावो बहुहिंसकश्च ॥ १५ ॥

यदि पिता की रेखा निचले भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई पूर्णरूप से प्रती होवे तो वह प्राणी रागी व विरागी होकर पशुओं का सा स्वभाव रखता हुआ अने जीवों का घातक होता है ॥ १५ ॥

८ आरम्भदेशे यदि पितृरेखा स्थूला सुपूर्णा विशदा सरक्ता ।
तदा जनस्यात्समराभिलाषी रक्ताभिपाती रिपुवंशघाती ॥ १६ ॥

यदि पिता की रेखा आरम्भदेश में यानी शुरूआ होने में मोटी, बड़ी व साफ़ होक रक्तवर्णवाली देखी जावे तो वह प्राणी युद्धाभिलाषी होकर सामने खून को करता हुआ वैरियों के वंश को विनाशता है ॥ १६ ॥

९ अङ्गुष्ठकस्य प्रथमे परुष्के रेखा त्रिशाखा समुपैति पैत्रीम् ।
तदा जनोयं प्रथमे प्रसङ्गे भूपादिवर्षे रमणीमुपैति ॥ १७ ॥

यदि अँगूठे की पहली पोर में तीन शाखावाली रेखा पितृरेखा के समीप चली जा तो यह प्राणी सोलह आदि वर्षों के आनेपर पहले प्रसंग में रमणी को पाता है यानी ती शाखाओं में से पहली शाखा पितृरेखा के सामने जावे तो सोलह वर्ष में व दूसरी शाख जावे तो २० वर्ष में और तीसरी शाखा जावे तो १९ वर्ष में पहले पहल रमणी के सा रमण करता है ॥ १७ ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं रेखात्रयं वेदमिताविभिन्नम् ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विद्याविहीनो विषयातुरश्च ॥ १८ ॥

यदि चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ तीन रेखाओंवाला शोभायमान चिह्न चार रेखाओं से कटासा प्रतीत होवे तो वह प्राणी विद्या से विहीन होता हुआ विषयों में आतुर होक नदी नाले आदिकों में डूबजाता है ॥ १८ ॥

११ मातापितृभ्यां सहितां सुभोगां भित्त्वा सुभाग्या यदि याति चान्द्रिम्[1] ।
तदा जनो मस्तकघातमेति शेषे विभिन्ना मरणं प्रयाति ॥ १९ ॥

यदि पिता माता की रेखा को व आयुरेखा को काटकर भाग्यरेखा बुध के स्थान प र्यन्त चली जावे तो वह प्राणी मत्थे में आघात को पाता है और यदि शेषभाग में मा

भाग्यरेखा

१ चन्द्रस्यापत्यं चान्द्रिस्तं चान्द्रिमिति ॥

रेखा, पितृरेखा व आयुरेखा ये तीनों भाग्यरेखा से भिन्न देखी जावें तो वह प्राणी मौत को ही पाता है ॥ १९ ॥

१२ चन्द्रादधस्तिष्ठति शुद्धरूपं चिह्नं त्रिरेखं सरलस्वरूपम् ।
आद्ये नरो मन्दफलं प्रयाति मध्ये वयस्के शुभतामुपैति ॥ २० ॥

यदि सीधा व साफ़ होकर तीन रेखाओंवाला चिह्न चन्द्रमा के निचले भाग में टिका हो तो वह प्राणी पहली अवस्था में मन्दफल (थोड़ाफल) को पाता है और युवावस्था में शुभफल को यानी दौलत को पाता है ॥ २० ॥

१३ अधोविभिन्ना यदि पितृरेखा तदन्तिके स्यात्तु विसर्गचिह्नम् ।
तदा नरो नारिनिमित्तवादी रक्ताभिपातं कुरुते रणेप्सुः ॥ २१ ॥

यदि पिता की रेखा निचले भाग में कटीसी प्रतीत हो और यदि उसके समीप में विसर्ग का निशान देखा जावे तो वह प्राणी स्त्री के निमित्त झगड़ा को मचाता हुआ युद्धाभिलाषी होकर सामने खून को गिराता है ॥ २१ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदस्वरूपं वेदाङ्कव्यस्तं यदि भाति चिह्नम् ।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदा स्याद्रक्ताभिपाती निजबन्धुघाती ॥ २२ ॥

यदि उलटे चारके अंक का सा निशान साफ़ होकर अँगूठा की मूलमें सोहता हो तो वह प्राणी दुर्जनतासे संयुत होकर अपने बन्धुओंको मारता हुआ सामने खूनको गिराता है॥२२॥

१५ पितुः सुरेखा यदि नीचभिन्ना भाग्यस्य रेखा समुपैति चान्द्रिम् ।
संकोणचिह्ने मनुजस्तदा स्यान्नेत्रामयो रोगचयाभिभूतः ॥ २३ ॥

यदि पिता की रेखा निचले भाग में कटीसी देखी जावे और भाग्यरेखा (फेटलाइन) बुध पर्यन्त चली जावे उस समय यदि संकोण चिह्न देखा जावे तो वह प्राणी नेत्ररोगी होकर रोगसमूहों से घिर जाता है ॥ २३ ॥

१६ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्त्रिकोणचिह्नं परिभाति भिन्नम् ।
तदा नरः स्यात्परदेशवासी त्रासी धनाशी मरणं प्रयाति ॥ २४ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठा हुआ कटासा त्रिकोण चिह्न प्रतीत हो तो वह प्राणी परदेश में बसता व डरता हुआ धनाभिलाषी होकर मौत को पाता है ॥ २४ ॥ (देखो चित्र नं० १५)

अथ द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलज्ञानमाह—

१ अनामिकायास्तृतये परुष्के रेखाद्वयं चिह्नतमं चकास्ति ।

कुशाग्रबुद्धिर्मनुजस्तदा स्याज्जङ्घार्तिभीतिं यदि चैति भिन्नम् ॥ २५

यदि अनामिका की तीसरी पोर में दो रेखाओंवाला चिह्न खूबही चमचमाता हो वह प्राणी कुशाग्रबुद्धि (तीव्रबुद्धिवाला) होता है और यदि पूर्वोक्त चिह्न कटासा प्रतीत होवे तो वह प्राणी जांघ की पीड़ाभय को पाता है ॥ २५ ॥

२ कनिष्ठिकामूलगता विभान्ति रेखाश्च तिस्रः सरलस्वरूपाः ।
तदा नरो दक्षिणबाहुघातं प्राप्नोति वामे यदि वामपाणौ ॥ २६ ॥

सीधी होकर तीन रेखायें यदि कनिष्ठिका (छोटी) अँगुली की मूल में सोहती हों वह प्राणी दाहिनी भुजा में चोट चपेट को पाता है और यदि बायें हाथ में पूर्वोक्त निशान सोहता हो तो वह प्राणी बाईं भुजा में चोट को लहता है ॥ २६ ॥

३ अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखात्रयं चेत्सरलस्वरूपम् ।
पादाभिघातं पुरुषः प्रयाति पापी प्रतापी परुषस्वभावः ॥ २७ ॥

यदि अनामिका व मध्यमा की मूल में सीधा होकर तीन रेखाओंवाला निशान प्रकाशमान देखा जावे तो वह प्राणी पापी व प्रतापी होकर कठोर स्वभाव को रखता हुआ पैर में चोट को पाता है ॥ २७ ॥

४ यदागतं मध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरं विभाति ।
परिश्रमासक्तमना मनुष्यः संखण्डितं चेच्छ्रमताविहीनः ॥ २८ ॥

जिस समय मध्यमा की मूल में छोटा होकर दो रेखाओंवाला निशान भासमान होता हो तो वह प्राणी बड़ा मेहनती होता है और यदि पूर्वोक्त निशान खण्डित होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी मेहनत से बचा रहता है यानी आलसी होकर खुदगर्ज़ होता है॥ २८॥

५ प्रदेशिनीमध्यमिकासुमध्ये रेखा यदैका यदि याति धात्रीम् ।
शीर्षाभिघातान्मृतिमेति जन्तुः संभोगभिन्ना यदि नैति मृत्युम् ॥ २९ ॥

यदि तर्जनी व मध्यमा के बीच में होकर एक रेखा मातृरेखा के समीप पहुँची हुई देखी जावे तो वह प्राणी शीश में चोट लगने से मौत को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा भोगरेखा से कटी हुई देखी जावे तो वह प्राणी केवल शीश में चोट को पाता है परन्तु मरता नहीं है ॥ २९ ॥

६ बृहस्पतिस्थानगतं विशुद्धं रेखात्रयं चिह्नतमं चकास्ति ।
भूपादिकानां च सहायतः स्यात्सौभाग्यशाली मनुजो महात्मा ॥ ३० ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में पहुँचा हुआ साफ़ होकर तीन रेखाओंवाला निशान प्रकाशमान होता हो तो वह प्राणी महात्मा होकर राजा व महाराजों की सहायता से सौभाग्यशाली होता है ॥ ३० ॥

७ मातुः सुरेखा पितरं प्रयाति भिन्नं तदूर्ध्वं यतिसंख्यकाभिः ।
तावन्मितांश्चौरसजातपुत्रान् प्राप्नोति प्राणी परवित्तपूर्णः ॥ ३१ ॥

यदि माता की रेखा पितृरेखा में मिलजावे और उसका ऊपरला भाग छोटी छोटी जितनी रेखाओं से कटा देखा जावे तो वह प्राणी पराये धनों से पूर्ण होकर उतनेही औरसजातपुत्रों को पाता है ॥ ३१ ॥

मातृरेखा

८ क्षुद्रासमेता जननी सुरेखा स्वल्पा गभीरा समुपैति पैत्रीम् ।
मातुः सुमानं मनुजः करोति तन्मानतस्स्याद्रुधिरप्रपाती ॥ ३२ ॥

यदि छोटी छोटी रेखाओं से संयुक्त होकर माताकी रेखा अल्परूपवाली व गहरी होती हुई पिता के पास पहुँच जावे यानी मिलाप कर लेवे तो वह प्राणी माता का बड़ा मान करता है यानी माता के ऊपर घना प्रेम रखता है उसी प्रेम से क्षयीरोगवाला होकर मुख से खून को गिराता है ॥ ३२ ॥

पितृरेखा

९ पितुः सुरेखा मणिबन्धदेशात् संवक्रमध्या यदि याति धात्रीम् ।
तदा जनश्चैकमना विलासी प्राप्नोति सौख्यं विपुलं विकासी ॥ ३३ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठी हुई पिता की रेखा बीच में टेढ़ी होकर मातृरेखा में मिल जावे तो वह प्राणी एकाग्र मनवाला होता हुआ विलासी व प्रकाशी होकर बड़े भारी सौख्य को पाता है ॥ ३३ ॥

भाग्यरेखा

१० पितुः सुरेखोत्थितभाग्यरेखिका स्वल्पा सुवक्रा समुपैति मातरम् ।
आयुष्यमल्पं लभते स मानवः कुपत्थ्यभोजी द्विजदेवनिन्दकः ॥ ३४ ॥

जिसके करतल में पिता की रेखा से उठी हुई भाग्यरेखा (फेटलाइन) छोटी व टेढ़ी होकर मातृरेखा के समीप चली जावे तो वह प्राणी कुपथ्य का भोजन करनेवाला होकर देवता व ब्राह्मणों की निन्दा करता हुआ अल्पायु को पाता है ॥ ३४ ॥

११ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात् सर्पानुरूपं समुपैति काव्यम् ।
तदा जनश्चौर्यपरः प्रतारी पापी प्रतापी परपक्षहारी ॥ ३५ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठा हुआ सांप के समान होकर निशान शुक्र के समीप सोहता हो तो वह प्राणी चौरकर्म में परायण होता हुआ छली, पापी व प्रतापी होकर परपक्ष का हरनेहारा होता है ॥ ३५ ॥

१२ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखाद्वयं याति यदा सुपित्रोः ।
तदा जनोयं जलयानयायी धनाभिधायी धनतामुपैति ॥ ३६ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठा हुआ दो रेखाओंवाला निशान मातृरेखा व पि रेखा के बीच में चला जावे तो यह प्राणी जहाज़ या नावों के द्वारा यात्रा करता व ध को इकट्ठा धारता हुआ धनसमूहों को पाता है यानी समुद्र की सफ़र करता हुआ बहुत पैसे को जोरता है ॥ ३६ ॥ (देखो चित्र नं० १६)

अथ सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह —

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के गुणाख्यचिह्नं विशदं विभाति ।
चौर्ये रतः स्यान्मनुजस्तदानीं निर्बोधरूपो विगतप्रभावः ॥ ३७ ॥

यदि कनिष्ठा की तीसरी पर्व में साफ़ होकर गुणा का × निशान सोहता हो तो प्राणी अज्ञानी होकर विगत प्रभाववाला होता हुआ चोरी करने में लगा रहता है ॥ ३७

२ कनिष्ठिकायास्तृतयं परुष्कं संगम्य रेखा यदि याति सूर्यम् ।
तदा नरः स्यादपकारकारी चौर्यापहारी कृतसंशयश्च ॥ ३८ ॥

यदि कनिष्ठा की तीसरी पर्व (पोर) को भलीभांति पाकर एक रेखा गहरी होक सूर्य पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी सबों का बुरा करनेवाला होकर चोरी से धन क हरता हुआ किये संदेहवाला होता है ॥ ३८ ॥

३ अनामिकामूलगतं सुवङ्कं रेखाद्वयं चिह्नतमं चकास्ति ।
ज्ञानेन पूर्णः पुरुषस्तदा स्यात् पदाधिकारी प्रमदाप्रसक्तः ॥ ३९ ॥

यदि अनामिका की मूल में प्राप्त हुआ टेढ़ा होकर दो रेखाओंवाला निशान सो हता हो तो वह प्राणी ज्ञान से पूर्ण होकर पदाधिकारी होता हुआ रमणियों में आसक्त रहता है ॥ ३९ ॥

४ प्रदेशिनीमूलगतं विभुग्नं चिह्नं द्विरेखं यदि याति मन्दम् ।
शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यः संभ्रान्तचित्तो विभुतासमेतः ॥ ४० ॥

तर्जनी की मूल में प्राप्त हुआ टेढ़ा होकर दो रेखाओंवाला निशान यदि शनैश्चर के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी भ्रान्तचित्त होता हुआ विभुता से संपन्न होकर शीश में चोट चपेट को पाता है ॥ ४० ॥

५ बृहस्पतिस्थानगता सुभोगा अधस्सुपीनोपरितस्सुभिन्ना ।
तदा नरो दीनदशामुपैति दौर्भाग्यशाली बलताविहीनः ॥ ४१ ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हुई सुभोगरेखा (आयुरेखा) नीचे के भाग में मोटी होकर ऊपरले भाग में रेखामात्र से कटी देखी जावे तो वह प्राणी दौर्भाग्यशाली व दुबला होकर दीनदशा को पाता है ॥ ४१ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदस्वरूपं रेखात्रयं लक्ष्मतरं विभाति ।
वातार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्व्यायामशीलो विषयातुरश्च ॥ ४२ ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिका हुआ साफ़ रूपवाला होकर तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी वादी रोगवाला होकर कसरती होता हुआ विषयों में आतुर होता है ॥ ४२ ॥

७ मातुस्सुरेखा मिलितोर्ध्वदेशके स्पृष्टा यदा स्यादतिक्षुद्ररेखया ।
दोषातुरो लोककृताभिचारकैर्विषादिना वा मृतिमेति मानवः ॥ ४३ ॥

जिस समय माता की रेखा ऊपरले भाग में मिली व छोटी रेखा से छूई हुई देखी जावे तो वह प्राणी दोषों से आतुर होकर सांसारिक जनों के किये मारणादिकों या विषादिकों से मौतको पाता है ॥ ४३ ॥

८ मातुस्समीपे प्रतिभाति चिह्नं नाक्षत्ररूपं विशदस्वरूपम् ।
लोहाभिघातं लभते मनुष्यो भिन्नं यदा चेद् बहुस्वल्पघातम् ॥ ४४ ॥

साफ़ रूपवाला होकर नक्षत्र का सा चिह्न (निशान) मातृरेखा के समीप यदि सोहता हो तो वह प्राणी लोह से चोट चपेटको पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान कटा हुआ प्रतीत होवे तो वह प्राणी बहुत छोटे से घाव को पाता है ॥ ४४ ॥

९ स्पृष्ट्वा सुधात्रीं यदि याति काव्यं रेखा गभीरा विशदा विक्षुद्रा ।
धन्वादिभिर्घातमुपैति प्राणी पारुष्यपूर्णः पिशुनस्वभावः ॥ ४५ ॥

गहरी व साफ़ होकर छोटी सी रेखा मातृरेखा को छूकर यदि शुक्र के सामने चली जावे तो वह प्राणी कठोरता से पूर्ण होकर चुग़लखोरों का सा स्वभाव रखता हुआ धनुष, बाण और बन्दूक़ आदिकों से घायल होजाता है ॥ ४५ ॥

१० पितुः सुरेखोपरिगा विभाति भग्नीसुरेखा भणिता सुधीभिः ।
दारिद्र्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यात्कान्ताभिलाषी कमलाविहीनः ॥४६॥

विद्वानों से कही हुई भग्नीरेखा यदि पितृरेखा के ऊपरले भाग में सोहती हो तो वह प्राणी दरिद्रता से संपन्न होकर लुगाई की लालसा रखता हुआ लक्ष्मी से हीन रहता है ॥ ४६ ॥

११ अङ्गुष्ठमध्यं यदि वेष्टयन्ती फणानुरूपा परिभाति रेखा ।
व्यापारयुक्तो मनुजस्तदा स्यादाचारहीनो व्यभिचारशीलः ॥ ४७ ॥

---

१ आचारः परमोधर्म इति ॥

अँगूठा के मध्यभाग को लपेटती हुई फनके समान रेखा सोहती होतो वह प्राणी आ चार से हीन होकर व्यभिचार में लगा रहता हुआ व्यापार से सम्पन्न होता है यानी मनुष्य व्यापारी कहाता है ॥ ४७ ॥

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं वृत्तार्धरूपं विशदं विभाति ।
बुद्ध्या विबुद्धो मनुजस्तदा स्याद्वामाभिलाषी वनिताविलासी॥४८

यदि चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ साफ़ शोभायमान होकर अर्धवृत्त का निश सोहता है तो वह प्राणी बुद्धिद्वारा विशेष बोध को रखता हुआ वामाओं (सुन्दरियों का अभिलाषी होकर रमणियों में विलास करता है ॥ ४८ ॥

१३ मात्रा समेता जनकस्य रेखा क्षुद्राविभिन्ना यदि मध्यभागे ।
आघातपूर्णः पुरुषस्तदा स्यादानन्दहीनो दयिताविहीनः ॥ ४९ ॥

माता की रेखा से मिली हुई पिता की रेखा यदि मध्यभाग में छोटी छोटी रेखाओं कटीसी देखी जावे तो वह प्राणी चोटों से घायल होकर आनन्द से हीन रहता हु दयिता (प्यारी) से विहीन होता है ॥ ४९ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदा विक्षुद्रा भग्नीसुरेखा भणिता सुधीरैः ।
दीनो दरिद्रो मनुजस्तदा स्याद्विद्याविहीनो विषयातुरश्च ॥ ५० ॥

विद्वानों से कही हुई भग्नी रेखा साफ़ व छोटीसी होकर यदि अँगूठा की मूल में हती हो तो वह प्राणी दीन व दरिद्री होकर विद्या से विहीन रहता हुआ विषयों में तुर होता है ॥ ५० ॥

१५ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखात्रयं क्षुद्रतमं विभाति ।
तदा जनोयं जलयानयायी सांयात्रिको वा मरणं प्रयाति ॥ ५१ ॥

यदि मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठाहुआ छोटासा तीन रेखाओंवाला निशान सोहता तो वह प्राणी जहाज़ की सवारी से सामुद्रकीय यात्रा को करता है अथवा जहाज़ी कर मरजाता है ॥ ५१ ॥

१६ पितुः सुरेखा यदि नीचदेशे संवक्ररूपा मिलिता जनन्याम् ।
दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति विद्यान्वितं वैद्यवरं विनीतम् ॥ ५२ ॥

मातृरेखा में मिली हुई पिता की रेखा यदि निचले देश में टेढ़े रूपवाली देखी जा तो उस प्राणी को बड़ी उमरवाला, विद्याओं से संपन्न, वैद्यों में प्रधान व विनयवा करती है ॥ ५२ ॥

---

१ सांयात्रिकः पोतवणिगित्यमरः ॥

१७ भाग्यस्य रेखा मणिबन्धदेशात् पैत्रीं विभित्त्वा यदि याति मात्रीम् ।
भव्यान्वितं तं मनुजं करोति बन्धुप्रियं बोधरतं वरेण्यम् ॥ ५३ ॥

पिता की रेखा को काटकर भाग्य की रेखा यदि कब्जे से मातृ रेखा के समीप चली जावे तो उस प्राणी को कल्याण से संपन्न, भाइयों का प्यारा, ज्ञान में रत व प्रधान बना देती है ॥ ५३ ॥ (देखो चित्र नं० १७)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के ऋज्वी सुरेखा यदि याति मध्यम् ।
तदा नरो मानसिको महौजाश्चातुर्यचञ्चुश्चपलस्वभावः ॥ ५४ ॥

कनिष्ठा की तीसरी पोर में सीधी रेखा यदि बीच के पोरतक चली जावे तो वह प्राणी मानसिक गुणशाली व बलशाली होकर चातुर्य से संपन्न होता हुआ चपलस्वभाववाला कहाता है ॥ ५४ ॥

२ गुरूपरिस्थं यदि भाति चिह्नं रेखात्रयं भुग्नतरस्वरूपम् ।
पित्ताधिकोसौ पुरुषस्तदा स्यात् पाखण्डकारी परुषस्वभावः ॥ ५५ ॥

बृहस्पति के ऊपर ले भाग में यानी तर्जनी की तीसरी पोर में टिका हुआ टेढ़ा व तीन रेखाओंवाला होकर चिह्न यदि सोहता हो तो वह प्राणी अधिक पित्तरोगवाला होता हुआ पाखण्डकारी हाकर कठोर स्वभाववाला होता है ॥ ५५ ॥

३ दिवाकरस्थानगतं सुचिह्नं तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
संकोणभिन्नं यदि वामदक्षे तदा नरः शिल्परतः सुबुद्धिः ॥ ५६ ॥

सूर्य के स्थान में यानी अनामिकाकी मूल में प्राप्त हुआ शोभायमान चिह्न सीधा व दो रेखाओंवाला होता हुआ तिरछी लकीर से कटा सा होकर बायें व दहिने तरफ़ कोणों से खण्डित देखा जावे तो वह प्राणी शिल्पकार्य में प्रवृत्त होकर सुबुद्धि होता है ॥ ५६ ॥

४ यदा गतं मध्यमिकामूले रेखाद्वयं क्षुद्रतरं चकास्ति ।
कष्टाधिकं वै लभते मनुष्यः पित्ताधिकः पापरतः कुवेषः ॥ ५७ ॥

जबकि मध्यमा की मूल में प्राप्त हुआ दो रेखाओंवाला होकर छोटा सा चिह्न चमकता हो तो वह प्राणी पित्तरोग से पीड़ित व पाप में परायण होता हुआ बुरे वेषवाला होकर घने कष्ट को पाता है ॥ ५७ ॥

५ सुभोगशाखा विशदा विक्षुद्रा पैत्रीं विभित्त्वा यदि याति भौमम् ।

---

१ अमंगल वेशवाला कहाता है ॥

वृथापलापी मनुजस्तदा स्याद्विश्वासयुक्तो विभुतासमेतः ॥ ५८ ॥

सुभोगरेखा की शाखा साफ़ व छोटी होकर मातृरेखा व पितृरेखा को काटकर मङ्गल के समीप यदि चली जावे तो वह प्राणी वृथावादी (बकवादी) होता हुआ विश्वास से सम्पन्न होकर विभुता से पूर्ण रहता है ॥ ५८ ॥

६ अङ्गुष्ठशाखावृतशुद्धरूपं रेखाचतुष्कं समुपैति पैत्रीम् ।
वृथाभिमानी मनुजस्तदा स्यान्मोहाभिभूतो मदनातुरश्च ॥ ५९ ॥

अँगूठा की शाखा से घिराहुआ सीधा होकर चार रेखाओंवाला निशान यदि पितृरेखा के समीप चला जावे तो वह प्राणी वृथाभिमानी होकर मोह से घबड़ाता हुआ काम से पीड़ित होता है ॥ ५९ ॥

७ भोगाधरस्थं विशदस्वरूपं नवाङ्कपञ्चाङ्कयुतं गुणाख्यम् ।
रक्ताभिपाते निरतो मनुष्यो मान्यो वदान्यो बलतासमेतः ॥ ६० ॥

भोगरेखा के नीचे टिका हुआ साफ़ होकर नव व पांच के अंक से संयुत होता हुआ गुणा का निशान सोहता हो तो वह प्राणी रक्तमोक्षण (फ़स्त खुलाने) के कार्य में निपुण होता हुआ मान्य व वदान्य (बड़ा दानी) होकर बलवान् होता है ॥ ६० ॥

८ क्षपाकरस्योपरिगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं यदि चैकरेखम् ।
आयुष्यमल्पं[1] लभते मनुष्यः कुपथ्यसेवी सरलस्वभावः ॥ ६१ ॥

चन्द्रमा के ऊपर यानी मातृरेखा के समीप प्राप्त हुआ एक रेखावाला निशान यदि तिरछी रेखा से कटा हुआ देखा जावे तो वह प्राणी कुपथ्यों को सेवन करता हुआ सीधे स्वभाववाला होकर अल्पायु को पाता है ॥ ६१ ॥

९ स्वल्पा सशाखा यदि भाग्यरेखा पैत्रीं विभित्त्वा समुपैति मात्रीम् ।
बाणादिभिर्घातमुपैति प्राणी विद्यान्वितो बन्धुविवर्जितश्च ॥ ६२ ॥

भाग्यरेखा

छोटी व शाखा समेत होकर भाग्यरेखा (फेटलाइन) पितृरेखा को काटकर यदि मातृरेखा के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी विद्याओं से संपन्न होकर बन्धुओं से रहित होता हुआ बाणादिकों से घात (चोट) को पाता है ॥ ६२ ॥

१० स्वल्पा सुपैत्री मिलिता धरित्र्यां क्षुद्रा विभिन्नश्च तदूर्ध्वदेशः ।
तदा जनः सर्वजनप्रियस्स्याद्विश्वासयुक्तो विभुतामुपेतः ॥ ६३ ॥

पितृरेखा

छोटे रूपवाली पिता की रेखा मातृरेखा में मिल जावे और उसका ऊपरला भा

---

१ छत्तीस ३६वर्ष पर्यन्त अल्पायु को आचार्यों ने माना है इसमें भी तीन भेद होते हैं ।

छोटी रेखा से कटा हुआ देखा जावे तो वह प्राणी विश्वास से संयुत होता हुआ प्रभुता से संपन्न होकर सर्वजनों का प्यारा होता है ॥ ६३ ॥

११ काव्यालये तिष्ठति वक्ररूपं रेखाचतुष्कं विशदस्वरूपम् ।
कान्तासमूहं लभते मनुष्यः कामी कलावान्कमलासमेतः ॥ ६४ ॥

टेढ़ा व साफ़ होकर चार रेखाओंवाला निशान यदि शुक्र के स्थान में टिका हो तो वह प्राणी कामी व कलावान् होकर लक्ष्मी से संपन्न होता हुआ कान्ता (लुगाइयों) के समुदाय को पाता है ॥ ६४ ॥

१२ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं यदि मध्यभिन्नम् ।
तदा जनोयं पतितो महोच्चात् संखण्डितं चेद्विपदाविमुक्तः ॥ ६५ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ चूल्हे के समान रूपवाला शोभायमान चिह्न यदि बीच में कटासा प्रतीत होवे तो यह प्राणी बड़े ऊंचे स्थान से लुढ़क पड़ता है और यदि पूर्वोक्त निशान क्षुद्र रेखाओंसे कटा हुआ देखा जावे तो वह प्राणी विपदाओं से छूट जाता है ॥६५॥

१३ शुक्राधरस्थं विशदस्वरूपं वैशृङ्खलं चिह्नतमं चकास्ति ।
मिथ्याप्रलापी पुरुषस्तदा स्यात् सुखाभिलाषी सुषमासमेतः ॥ ६६ ॥

साफ़ होकर विशृंखलनामक चिह्न शुक्र के नीचे चमकता हो तो वह प्राणी मिथ्यावादी होकर सुखों की अभिलाषा (चाहना) करता हुआ परम शोभा से संपन्न होताहै ॥६६॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा कुरेखा समुपैति मात्रीम् ।
तदा जनोयं जनतासमेतो ह्यृणी गुणी स्यादभिमानहीनः ॥ ६७ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठी व टेढ़ी होकर छोटीसी रेखा मातृरेखा के सामने चली जावे तो यह प्राणी जनसमूहों से सम्पन्न होता हुआ ऋणी (कर्ज़ी) व गुणी होकर अभिमान से हीन होता है ॥ ६७ ॥ (देखो चित्र नं० १८)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के कोणद्वयं चिह्नतमं चकास्ति ।
चौर्यानुरक्तो मनुजस्तदा स्याद्वृथाभिमानी विषयातुरश्च ॥ ६८ ॥

कनिष्ठा की तीसरी पोर में दो कोणोंवाला निशान यदि प्रकाशमान देखा जावे तो वह प्राणी वृथाभिमानी (घमण्डी) होकर विषयों में आतुर होता हुआ चोरी करने में पराङ्मुख रहता है ॥ ६८ ॥

---

१ निशाकरश्चन्द्रमा इति ॥

२ अनामिकायास्तृतये परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति ।
दारिद्र्ययुक्तो मनुजो मनीषी दुःखेन कालं नयते क्षुधालुः ॥ ६९ ॥

अनामिका की तीसरी पर्व (पोर) में साफ़ होकर अर्धवृत्त का निशान यदि सोह हो तो वह प्राणी बुद्धिमान् व दरिद्रता से संयुत होता हुआ भूंखा रहकर दुःख से अ समय को काटता है ॥ ६९ ॥

३ छायासुतस्योपरिगं चकास्ति क्षुद्रं सुचिह्नं सरलं त्रिरेखम् ।
तदा नरः स्याद्विजयाभिलाषी योद्धा विबोद्धा कलहातुरश्च ॥ ७० ॥

छोटा, सीधा व तीन रेखाओंवाला होकर शोभायमान निशान शनैश्चर के ऊपर प्र हुआ यदि सोहता हो तो वह प्राणी विजय की अभिलाषा (चाहना) करता हुआ यो (बड़ा शूरमा) व विबोद्धा (विज्ञाता) होकर लड़ाई लड़ने में लगा रहता है ॥७०॥

४ दिवाकरस्थानगतं सुरेखं तिर्यग्विभिन्नं युगरेखिकाभ्याम् ।
तदा जनोयं सुखदुःखमेति भुग्नं यदा चेच्छुभतामुपैति ॥ ७१ ॥

सूर्य के स्थान में प्राप्त हुआ सीधी रेखावाला निशान यदि दो रेखाओं से तिर कटासा देखा जावे तो यह प्राणी समय समय पर सुख व दुःख को पाता है और य पूर्वोक्त निशान टेढ़ासा देखाजावे तो वह प्राणी शुभता को पाता है ॥ ७१ ॥

५ संभोगरेखा विशदा गभीरा पूर्णस्वरूपा यदि याति मन्दम् ।
सौभाग्यशाली पुरुषो विशाली संतोषकारी स्वजनापकारी ॥ ७२ ॥

पूर्णरूपवाली सुभोगरेखा (आयुरेखा) साफ़ व गहरी होकर यदि शनैश्चर पर्य चली जावे तो वह प्राणी सौभाग्यशाली व विशाली होता हुआ संतोषकारी होकर अ जनों का बुरा चेतनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

६ बृहस्पतिस्थानगतं त्रिशूलं चिह्नं यदा चेद्विशदं विभाति ।
तदा जनोयं कृशतामुपैति मूर्च्छादिरोगैः परिपीडिताङ्गः ॥ ७३ ॥

जिस समय साफ़ होकर त्रिशूल का निशान यदि बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हु सोहता हो तो यह प्राणी मिरगी आदि रोगोंसे परिपीड़ित अंगवाला होता हुआ दुर्बल को पाता है ॥ ७३ ॥

७ मातुः सुरेखा यदि नीचदेशे वेदाङ्कवृत्तार्धयुता विभिन्ना ।
पदाभिलाषी पुरुषस्तदा स्याद्गर्वेण युक्तो गुरुतामुपेतः ॥ ७४ ॥

---

१ युग्मन्तु युगलं युगमित्यमरः ॥

यदि माता की रेखा निचले भाग में चार के अंक व वृत्तार्ध से संयुक्त होकर कटीसी देखी जावे तो वह प्राणी घमण्डी होकर गुरुता से संपन्न होता हुआ ऊंचे पद का अभिलाषी कहाजाता है ॥ ७४ ॥

८ मातुः सुरेखा यदि मध्यवक्रा धन्वाकृतिर्भग्नतरा विभाति । मातृरेखा
चतुष्पदाघातमुपैति जन्तुर्जयाभिलाषी जनतासमेतः ॥ ७५ ॥

यदि माता की रेखा बीच में टेढ़ी होकर धनुष के आकारवाली होती हुई अत्यन्त कटीसी सोहती हो तो वह प्राणी जय का अभिलाषी होकर जनसमूहों से संयुक्त होता हुआ चौपाये की चपेट से चोट को पाता है ॥ ७५ ॥

९ काव्यालयस्योपरिगा विभाति भग्नीसुरेखा यदि चायुषीया ।
सुखाभिलाषी मनुजस्तदा स्याल्लज्जामुपेतो ललनासमेतः ॥ ७६ ॥

आयुरेखा की भग्नीरेखा यदि शुक्र के ऊपरले भाग में प्राप्त होकर सोहती हो तो वह प्राणी लाज को पाता हुआ ललनाओं से संयुत होकर सुखों का अभिलाषी (चाह रखनेवाला) होता है ॥ ७६ ॥

१० अङ्गुष्ठपृष्ठे विशदस्वरूपं रेखाविभिन्नं यदि वृत्तचिह्नम् ।
तदा नरो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो व्यसनातुरश्च ॥ ७७ ॥

अँगूठे की पीठपै साफ़ होकर रेखा से कटा हुआ वृत्त का निशान (यानी मोहर का सा चिह्न) यदि सोहता हो तो वह प्राणी कसरती होकर जूआ आदि खेलों को खेलता हुआ नदी आदिकों में डूबजाता है ॥ ७७ ॥

११ अङ्गुष्ठमूले परितो विभाति नाक्षत्रचिह्नं विशदस्वरूपम् ।
वामासमेतो मनुजो मनस्वी नानासुभोगं नितरां भुनक्ति ॥ ७८ ॥

साफ़ रूप होकर नक्षत्र का चिह्न (स्टार) यदि अँगूठे की मूल में चारों ओर चमकता सा प्रतीत हो तो वह प्राणी मनस्वी होकर लुगाइयों (सुन्दरियों) से संयुत होता हुआ नानाभांति सुभोगों को अधिकता से भोगता है ॥ ७८ ॥

१२ जैवातृकस्थानगतं विशालं विभाति चिह्नं यदि न्यूनकोणम् ।
नायं नरः स्यात्परिणामदर्शी स्वकीयदोषान्मरणं प्रयाति ॥ ७९ ॥

विशालरूप होकर न्यूनकोण का निशान यदि चन्द्रमा के स्थान में विशेषता से सोहता हो तो यह प्राणी अग्रशोची नहीं होता है बरन अपने ही दोष से मौत को पाता है ॥ ७९ ॥

---

१ अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिरित्यमरः ॥

१३ भाग्यस्य रेखोपरिगं विभाति विटङ्कतुल्यं यदि शुद्धचिह्नम् ।
शूलार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्याद्वामाकरे चेद्रुजताविशेषः ॥ ८० ॥

कबूतरों के दरवा के समान होकर साफ़ निशान यदि भाग्यरेखा (फेटलाइन) ऊपर प्राप्त हुआ विशेषता से सोहता हो तो वह प्राणी शूलपीड़ा से पीड़ित होता है या उस प्राणी के पेट में प्रायः पीड़ा बनी रहती है और यदि पूर्वोक्त निशान वामाओं (सुन्दरियों) के करतल में भाग्यरेखा के ऊपर देखा जावे तो रोगों की विशेषता होती यानी शूलरोग की अधिकता होती है ॥ ८० ॥

१४ पितुः सुरेखा मणिबन्धमुक्ता कौटिल्यरेखाद्वयसंयुता चेत् ।
आद्ये वयस्के शुभमेति प्राणी रेखात्रये सप्तति वत्सरं नो ॥ ८१ ॥

जिसके करतल में पिता की रेखा मणिबन्ध (कब्ज़े) से छुटी हुई टेढ़ी दो रेखा से संयुक्त होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी पहली अवस्था में शुभदायक फल को पा है और यदि तीन रेखाओं से संयुत देखी जावे तो वह प्राणी सत्तरि वर्ष पर्यन्त शुभ यक फल को नहीं पाता है ॥ ८१ (देखो चित्र नं० १६)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ चन्द्रात्मजस्थानगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदस्वरूपम् ।
बुद्ध्या विहीनो मनुजस्तदानीं प्रासभ्यदोषान्मरणं प्रयाति ॥ ८२ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ साफ़ होकर अर्धवृत्तका निशान यदि सोहता हो तो प्राणी बुद्धि से विहीन होता हुआ अपने हठदोष से मौत को पाता है ॥ ८२ ॥

२ सौम्यालयान्ते दिनपालये वा रेखा यदैका सरला विभाति ।
सत्कर्मकारी मनुजो महात्मा धर्माधिकारी श्रमतासमेतः ॥ ८३ ॥

बुधस्थान के समीप या सूर्यके स्थानमें यदि एक रेखा सीधी होकर सोहती हो तो प्राणी महात्मा होकर सत्कर्मकारी (भले कामों का करनेवाला) तथा धर्माधिकारी होता हुआ परिश्रमशाली होता है ॥ ८३ ॥

३ अनामिकामध्यमिकासुमध्ये रेखा सुवक्रा यदि याति भानुम् ।
महाभिमानी मनुजस्तदा स्यान्मौढ्येन युक्तो महसा विहीनः ॥ ८४ ॥

अनामा और मध्यमा के विचले भाग में एक छोटी व मोटीसी रेखा टेढ़ी होकर सूर्य के समीप चली जावे तो वह प्राणी बड़ा अभिमानी होकर मूर्खता से संयुक्त होता हुआ तेज से विहीन रहता है ॥ ८४ ॥

---

१ कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुन्नपुंसकमित्यमरः ॥

४ मार्तण्डपुत्रालयगा विभान्ति रेखाः सुक्षुद्रा रससंमिताश्चेत् ।
उद्योगशाली पुरुषस्तदा स्यात् सौख्यादिहीनः श्रमताविहीनः ॥८५॥

शनैश्चर के स्थान में प्राप्त हुई छोटीसी छः रेखायें यदि सोहती हों तो वह प्राणी उद्योगशाली (रोज़गारी) होकर परिश्रम से रहित होता हुआ सौख्यादिकों से विहीन कहाता है ॥ ८५ ॥

५ संभोगरेखा गुरुमन्दिरस्था तस्याः सुशाखा यदि चैति मन्दम् ।
वित्तार्जकः स्यात्पुरुषः पवित्रो नारीविहीनो नयतामुपेतः ॥ ८६ ॥

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) यदि तर्जनी पर्यन्त चली जावे और उसकी शाखा शनैश्चर की तरफ़ चली जावे तो वह प्राणी धनों को इकट्ठा करता हुआ यानी दौलत को बटोरता हुआ लुगाई से रहित होकर नीति से संयुत होता है ॥ ८६ ॥

६ सुरेन्द्रपूज्यालयगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
धर्मी जनोयं शुभतामुपैति भिन्नं यदा चेच्छिरघातमेति ॥ ८७ ॥

बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हुआ तिरीछा कटा व सीधा होकर दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो यह प्राणी धर्मी होकर शुभदायक फल को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान आन रेखाओं से कटा हुआ देखा जावे तो वह प्राणी शीश में चोट चपेट को पाता है ॥ ८७ ॥

७ बृहस्पतिस्थानगता सुवक्रा रेखा यदैका यदि याति मात्रीम् ।
उग्रस्वभावो मनुजस्तदा स्यादुन्मत्तरूपी मदनातुरश्च ॥ ८८ ॥

बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हुई टेढ़ी होकर एक रेखा यदि मातृरेखा के सामने चली जावे तो वह प्राणी उग्रस्वभाववाला होकर मतवाला होता हुआ कामदेव से पीड़ित होता है ॥ ८८ ॥

८ संभोगरेखा यदि नीचदेशे भिन्ना यदा स्याद्युगरेखिकाभ्याम् ।
शूरार्दितोयं समरे मनुष्यः प्राप्नोति मृत्युं सहसा सहिष्णुः ॥ ८९ ॥

जिस समय भोगरेखा (आयुरेखा) निचले भाग में दो रेखाओं से कटी हुई यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी लड़ाई में शूरों (वीरों) से सताया हुआ सहनशील होकर एकाएकी मौत को पाता है ॥ ८९ ॥

९ संभोगरेखा यदि मध्यभागे खड्गेन भिन्ना विशदा विभाति ।
द्रव्यावने घातमुपैति प्राणी शेषे विभिन्ना स्वधने क्षयाप्तिम् ॥ ९० ॥

संभोगरेखा साफ़ होकर यदि बीच में खड्गाकार (तलवार के समान) निशान से क
हुई सोहती हो तो वह प्राणी दौलत की रखवारी करने में घात को पाता है यानी घाय
होजाता है और यदि पूर्वोक्त निशान शेषभाग में कटा हुआ देखा जावे तो वह प्रा
अपने माल की रखवारी करने में मारा जाता है ॥ ९० ॥

१० मातुः सुरेखा यदि नीचभागे गुणत्रयेणाप्यवखण्डिता स्यात् ।
स्वमानरक्षानिरतः सुदुःखी ह्रस्वा प्रशंसी द्विगुणावतंसी ॥ ९१ ॥

मातृरेखा

यदि माता की रेखा निचले भाग में तीन गुणों के निशानों से कटी हुई देखी जावे
वह प्राणी अपने मान की रक्षा करने में परायण होता हुआ बड़ा दुःखी होता है और य
पूर्वोक्त रेखा छोटीसी प्रतीत होवे तो वह प्राणी बड़ाई पाता है और यदि पूर्वोक्त निश
दूना प्रतीत हो तो वह प्राणी गौरव से संपन्न होता है ॥ ९१ ॥

११ अङ्गुष्ठशाखावृतमध्यभागं रेखात्रयं पर्वयुगे विभाति ।
तदा नरो बन्धनभीतिमेति दीर्घं यदा चेत्फलमन्दता स्यात् ॥ ९२ ॥

अँगूठे की शाखाओं से घिरे मध्यभागवाले तीन रेखाओं का निशान यदि अँगूठे
दूसरी पोर में सोहता हो तो वह प्राणी क़ैद होने की भय को पाता है और यदि पूर्वो
निशान दीर्घाकार सोहता हो तो फल की अल्पता होजाती है ॥ ९२ ॥

१२ अङ्गुष्ठपृष्ठे प्रथमे परुष्के रेखात्रयं क्षुद्रतरं चकास्ति ।
तदा मनुष्यो वधतामुपैति पाशेन विद्धो निजबन्धुहीनः ॥ ९३ ॥

अँगूठे की पीठपर पहली पोर में छोटासा तीन रेखाओं का निशान यदि सोहता हो
वह प्राणी अपने बन्धुओं से विहीन होकर फांसी से विंधा हुआ वध को पाता है ॥ ९

१३ क्षपाकरस्योपरिगं विभाति नाक्षत्ररूपं विशदस्वरूपम् ।
विश्वासदानैः प्रथितो मनुष्यो दीनो दरिद्रो धनतामुपैति ॥ ९४ ॥

चन्द्रमा के ऊपरले स्थान में प्राप्त हुआ साफ़ होकर नक्षत्र कासा निशान यदि सो
हता हो तो वह प्राणी विश्वास और दानों से विख्यात होता है और जो दीन हो
दरिद्री हो तो धनसमूहों को पाता है यानी पूर्वोक्त निशान दरिद्री के हाथ में देखा ज
तो वह दौलत को पाता है ॥ ९४ ॥

१४ पितुः सुरेखा मिलिता जनन्या मध्ये सुकोणं यदि भाति चिह्नम् ।
अल्पायुषं तं मनुजं करोति नीचाश्रयं निन्दितकर्मकारम् ॥ ९५ ॥

पितृरेखा

यदि पिता की रेखा मातृरेखा के बीच में मिली हुई देखी जावे और वहां

शोभायमान कोणका निशान सोहता हो तो उस प्राणी को अल्पायु व नीचों का साथी तथा बुरे कामों का करनेवाला बनाता है ॥ ९५ ॥

भाग्यरेखा

१५ पित्रा वियुक्ता मणिबन्धदेशे वक्रा सुभाग्या यदि याति भोगाम् ।
बुद्ध्या विहीनो मनुजो विवादी हासी विलासी कलहातुरश्च ॥ ९६ ॥

जिसके मणिबन्ध (कब्जे) में पितृरेखा से छुटी व टेढ़ी होकर भाग्य की रेखा यदि भोगरेखा के सामने चलीजावे तो वह प्राणी बुद्धि से विहीन होता हुआ विवादी, हासी व विलासी होकर लड़ाई लड़ने में लगा रहता है ॥ ९६ ॥

१६ पितुस्सुरेखोपरिगा विभाति रेखा गभीरा विशदा विक्षुद्रा ।
भयंकरः स्यान्मनुजस्तदानीं दर्शी विमर्शी विषयारतश्च ॥ ९७ ॥

पिता की रेखा के ऊपर प्राप्त हुई रेखा गहरी, साफ व छोटी होकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी भयंकर होता हुआ अशुभों का देखनेवाला व विचारनेवाला होकर विषयों में फसा रहता है ॥ ९७ ॥ (देखो चित्र नं० २०)

अथ द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकायास्सकले परुष्के मध्ये त्रिरेखं सरलं विभाति ।
तदा नरो दर्शनशास्त्रवेत्ता विचारशीलो बुधवृन्दवन्द्यः ॥ ९८ ॥

कनिष्ठा अँगुली की तीनों पोरों के बीच में सीधा होकर तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी दर्शनशास्त्र का वेत्ता (जाननेवाला) होकर विचारशील होता हुआ पण्डितगणों से वन्दनीय होता है ॥ ९८ ॥

पताकारेखा

२ पैत्रीं सुमात्रीं च तथा सुभोगां भित्त्वा पताका यदि याति चान्द्रीम् ।
बाल्ये सुमध्ये च शुभाभिलाषी वार्द्धे प्रवृद्धिं पुरुषः प्रयाति ॥ ९९ ॥

पितृरेखा, मातृरेखा तथा सुभोगरेखा को काटकर पताका नाम रेखा यदि बुध पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी बाल्यावस्था व युवावस्था में शुभाभिलाषी होकर वृद्धावस्था में बड़ी बढ़ती को पाता है ॥ ९९ ॥

३ शनैश्चरस्थानगतं विक्षुद्रं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति ।
वक्षस्स्थलाघातमुपैति प्राणी सम्पत्तिशाली विपदाविहीनः ॥ १०० ॥

शनैश्चर के स्थान में प्राप्त हुआ छोटा व सीधा होकर तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी संपत्तिशाली व विपदाओं से विहीन होकर वक्षस्स्थल में चोट को पाता है ॥ १०० ॥

४ संभोगरेखाधिषणालयस्था कोणेन युक्ता यदि चोर्ध्वभागे।
स्वार्थी सुमानी मनुजस्तदानीं प्रासभ्यदोषान्निधनं प्रयाति ॥ १ ॥

बुध से चली बृहस्पति के स्थान में टिकी हुई संभोगरेखा यदि ऊपरले भाग में को के निशान से संयुक्त होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी स्वार्थी (मतलबी) होकर बड़ा मा होता हुआ हठदोष से मौत को पाता है ॥ १ ॥

५ सुभोगरेखा गुरुगा विभाति त्रिकोणयुक्तश्च तदूर्ध्वदेशः।
तदा जनोयं जनतामुपैति विनष्टवित्तो विविधामयश्च ॥ २ ॥

सुभोगरेखा (आयुरेखा) यदि बृहस्पति के स्थान में सोहती हो और उसका ऊपर भाग त्रिकोणाकार निशान से संयुत हो तो वह प्राणी द्रव्यों से हीन होकर अनेक रो वाला होता हुआ जनसमूहों को पाता है ॥ २ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं यदा चार्द्धविसर्गतुल्यम्।
संपूर्णकार्ये श्रमतामुपैति नार्या यदा चेत्प्रसवेऽतिकष्टम् ॥ ३ ॥

साफ़ व आधी विसर्ग के समान होकर निशान भोगरेखा के निचले भाग में य सोहता हो तो वह प्राणी समस्त कार्यों में परिश्रमी होता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्रि के करतल में सोहता हो तो वे स्त्रियां प्रसवकाल में " यानी बच्चा जनने में " बड़ा पाती हैं ॥ ३ ॥

७ काव्यालयादुत्थितवक्ररेखा भोगां विभित्त्वा यदि याति चान्द्रिम्।
तदा नरोयं शिरसा विभिन्नः पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति ॥ ४ ॥

शुक्र के स्थान से चली हुई टेढ़ी रेखा भोगरेखा को काटकर बुध के पास च जावे तो यह प्राणी शिर से विभिन्न होकर फाँसी के अग्रभाग से विंधा हुआ मौत पाता है ॥ ४ ॥

८ मातुस्सुरेखोपरिगं विभाति चिह्नं विक्षुद्रं यदि पञ्चरेखम्।
सौशील्ययुक्तो मनुजो महात्मा कार्ये स्वकीये निरतो विवेकी ॥ ५ ॥

विशेष कर छोटा सा होकर पांच सीधी रेखाओंवाला निशान मातृरेखा के ऊपर हुआ यदि सोहता हो तो वह प्राणी बड़ा शीलवान् व महात्मा होकर अपने कार्य में ल हुआ विचारवान् होता है ॥ ५ ॥

९ पितुस्सुरेखोपरिगा सुवक्रा रेखा विक्षुद्रा यदि याति मात्रीम्।
तदा नरः सन्नपमृत्युभीतो विषप्रयोगान्मरणं प्रयाति ॥ ६ ॥

---

१ बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुरित्यमरः ॥

पितृरेखा के ऊपर प्राप्त हुई टेढ़ी व छोटी सी रेखा मातृरेखा के पास चली जावे तो वह प्राणी अपमृत्यु (अकाल मौत) से डरता हुआ विष के प्रयोग से मौत को पाताहै यानी उस प्राणी को विष खिला देने से मौत होजाती है ॥ ६ ॥

१० जैवातृकस्थानगतं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदं विशालम् ।
तदा जनोयं जनयूथभिन्नो विभीतचित्तो निधनं प्रयाति ॥ ७ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ साफ़ व विशाल होकर अर्धवृत्त का निशान यदि सोहता हो तो यह प्राणी जनसमूहों से पीटा हुआ डरे चित्तवाला होकर मरण को पाता है ॥ ७ ॥

११ बुधालयस्था विशदा विक्षुद्रा रेखा सुवक्रा यदि याति भोगाम् ।
तदा नरो यौवनस्वस्थचित्तः क्रूरः[1] सुलोभी परकार्यकारी ॥ ८ ॥

बुध के स्थान में टिकी हुई साफ़, छोटी व टेढ़ी सी रेखा भोगरेखा पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी यौवनकाल (ज्वानी) में स्वस्थचित्त होता हुआ निर्दयी व बड़ा लोभी होकर पराये काम का करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

१२ भाग्योत्थिता या मणिबन्धमेति रेखा गभीरा विशदा सुवक्रा ।
पापानुसारी मनुजो मनस्वी प्राप्नोति मृत्युं निजकर्मदोषात् ॥ ९ ॥

भाग्यरेखा (फेटलाइन) से उठी जो रेखा गहरी, साफ़ व टेढ़ी होकर मणिबन्ध (क़ब्ज़े) के पास चली जावे तो वह प्राणी मनमौजी (यथेच्छाचारी) होकर पापों का अनुसरण करता हुआ यानी पापकारी होता हुआ अपने कर्मों के दोष से मौत को पाता है ॥ ९ ॥ (देखो चित्र नं० २१)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलविचारमाह—

१ कनिष्ठिकायास्त्रितये परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति ।
स्वीयापराधान्मृतिमेति प्राणी पाशेन विद्धशिरसा विभिन्नः ॥ १० ॥

कनिष्ठा अँगुली की तीसरी पोर में साफ़ होकर अर्धवृत्तका निशान सोहता हो तो वह प्राणी फाँसी से बिंधा हुआ फूटे हुए शीशवाला होकर अपने अपराध से ही मौत को पाता है ॥ १० ॥

२ भोगाधरस्था विशदा विक्षुद्राश्चुल्लीसरूपा यदि भान्ति रेखाः ।
शैथिल्यकायो मनुजो मलाक्तो मन्दस्वभावो ममतामुपैति ॥ ११ ॥

---

१ क्रूरः कठिननिर्दयावित्यमरः ॥

भोगरेखा के नीचे टिकी हुई साफ़ व छोटी सी होकर चूल्हे समान रेखायें यदि हती हों तो वह प्राणी ढीले अंगवाला व मल से भरा हुआ होकर नीच स्वभाव होता हुआ ममता को पाता है ॥ ११ ॥

३ ऋज्वी सुभोगा धिषणालयान्ता तस्याः सुशाखा समुपैति शौरिम् ।
परिश्रमासक्तमना मनुष्यः कष्टेन कालं नयते करालम् ॥ १२ ॥

सुभोगरेखा (आयुरेखा) सीधी होकर बृहस्पति के स्थानपर्यन्त चलीजावे और की शाखा शनैश्चर के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी मेहनत करने में मनको लगाता कराल काल को बिताता है ॥ १२ ॥

४ भोगाधरस्थं विशदं विभाति जिह्वामुमूलीयसमानरूपम् ।
वित्तं मनुष्यो लभते ह्यचिन्त्यं पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम् ॥ १३ ॥

जिह्वामूलीय के समानरूपवाला निशान साफ़ होकर भोगरेखा के नीचे टिका सोहता हो तो वह प्राणी अचिन्तनीय धन को पाता है यह विचार पूर्वोक्त प्रमाण से क चाहिये ॥ १३ ॥

५ मातुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखाद्वयाभ्यामुपसंगता स्यात् ।
विश्वासयुक्तो मनुजस्तदानीं दानी सुमानी धनतासमेतः ॥ १४ ॥

माता की रेखा यदि ऊपरले भाग में दो शाखाओं से संयुत होकर प्रतीत होवे तो प्राणी विश्वासी, दानी और सुमानी होकर धनसमूहों से सम्पन्न होता है ॥ १४ ॥

६ मातुः सुरेखा यदि शेषभागे क्षुद्रा विमिश्रा विशदा विभाति ।
व्याजापदेशो मनुजो विकाशी हासी विलासी विषयारतश्च ॥ १५

माता की रेखा यदि निचले भाग में छोटी रेखा से मिली हुई साफ़ होकर सोहती तो वह प्राणी छल से बहाना करता हुआ प्रकाशी, हासी तथा विलासी होकर विषयों आसक्त रहता है ॥ १५ ॥

७ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा क्षुद्रा समेता नितरां चकास्ति ।
भविष्यवक्ता मनुजस्तदा स्यात् प्रज्ञासमेतो बहुशास्त्रविज्ञः ॥ १६ ॥

पिता की रेखा से अलग हुई माता की रेखा क्षुद्ररेखाओं से संयुक्त होकर यदि अ कता से सोहती हो तो वह प्राणी होनहार का कहनेवाला होता हुआ प्रतिभाशालि बुद्धि से संपन्न होकर अनेक शास्त्रों का विज्ञाता होता है ॥ १६ ॥

८ मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा क्षुद्रा विमिश्रं च तयोस्सुमध्यम् ।
विरोधकारी कलही मनुष्यो विवादशाली जनयूथभिन्नः ॥ १७ ॥

माता की रेखा से छुटी हुई यदि पिता की रेखा हो और उन दोनों का मध्यभाग छोटी छोटी रेखाओं से मिला हुआ देखा जावे तो वह प्राणी विरोधकारी व लड़ाका होता हुआ विवादशाली होकर जनसमूहों से पीड़ित किया जाता है ॥ १७ ॥

९ पितुः सुरेखोत्थितरेखिकाभ्यां मातुः सुरेखा यदि संयुता स्यात् ।
चाञ्चल्यबुद्धिर्मनुजो मनस्वी वृथाभिमानी भ्रमते नितान्तम् ॥ १८ ॥

माता की रेखा यदि पिता की रेखा से उठी हुई दो रेखाओं से संयुत होकर देखी जावे तो वह प्राणी चञ्चलबुद्धिवाला व मनमौजी होता हुआ वृथाभिमानी होकर हमेशा घूमा करता है ॥ १८ ॥

१० पित्रोस्सुमध्ये यदि याति चिह्नं रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम् ।
गर्भस्य पातं लभते मनुष्यो नार्या यदा चेत्प्रसवेतिसौख्यम् ॥ १९ ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में दो रेखाओंवाला निशान यदि दो रेखाओं से खण्डित हुआ देखाजावे तो वह प्राणी अपनी भार्या में गर्भस्राव को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में प्रतीत होवे तो वह प्रसवकाल में बड़े सौख्य को पाता है यानी वह लुगाई सुखसे बच्चे को जनती है ॥ १९ ॥

११ पितुः सुरेखा यदि कुञ्चिताग्रा मध्ये सुपीना मणिबन्धहीना ।
असत्यवादी पुरुषः प्रमादी कुवेषधारी मलिनस्वभावः ॥ २० ॥

पिता की रेखा यदि अग्रभाग में टेढ़ी हो और बीच में मोटी होकर क़ब्ज़े से छुटी हुई देखी जावे तो वह प्राणी झूठा व जिद्दी होताहुआ बुरे वेश का धारनेवाला होकर मैले स्वभाव से रहता है ॥ २० ॥

भाग्यरेखा

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद् भाग्या सुरेखा समुपैति सौम्यम् ।
क्षणे प्रवृद्धिं लभते मनुष्यः क्षणे क्षयाप्तिं परदेशवासी ॥ २१ ॥

यदि मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठी हुई भाग्यरेखा बुधके पास चली जावे तो वह प्राणी परदेशनिवासी होताहुआ क्षणमें बड़ी बढ़ती व क्षणमें क्षयको पाता है ॥ २१ ॥

१३ चन्द्रालयस्थं कुटिलं द्विरेखं विभाति रेखान्वितवामभागम् ।
निजव्ययेनापि युतो मनुष्यो देशे सुदूरे निकटे भ्रमेच्च ॥ २२ ॥

चन्द्रमा के स्थान में टिकाहुआ टेढ़ा व दो रेखाओंवाला निशान यदि वामभाग में रेखासे जुड़ा हुआ देखा जावे तो वह प्राणी अपने खर्चे से ही दूरदेश व निकट (नगीची) देश में घूमता है ॥ २२ ॥

१४ भित्त्वा यदेयं मणिबन्धदेशं रेखा गभीरा यदि याति काव्यम् ।
वज्रप्रभावो मनुजो विलासी चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावः ॥ २३ ॥

जिस समय मणिबन्ध (कब्जे) को भेदन कर यह रेखा गहरी होकर यदि शुक्र के पास चलीजावे तो वह प्राणी बड़े प्रभाववाला व विलासी होकर चतुरता से संपन्न होताहुआ चपलस्वभाववाला कहा जाता है ॥ २३ ॥ (देखो चित्र नं० २२)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ चन्द्रात्मजस्थानगतं सुचिह्नं क्षुद्रं त्रिरेखं सरलं चकास्ति ।
चौर्य्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्यान्मिथ्यापवादी मदनातुरश्च ॥ २४ ॥

बुध के स्थान (जगह) में पहुँचाहुआ शोभायमान निशान छोटासा तीन रेखाओंवाला व सीधा होकर यदि सोहता है तो वह प्राणी चोरी करने में लगाहुआ झूठा होकर कामातुर होता है ॥ २४ ॥

२ संभोगरेखोपरिगं विशुद्धं रेखात्रयं क्षुद्रतरं चकास्ति ।
बाह्वोः सुघातं लभते मनुष्यो मन्दस्वभावो ममतामुपेतः ॥ २५ ॥

सुभोगरेखा के ऊपरले भागमें प्राप्तहुआ तीन रेखाओंवाला निशान साफ व छोटासा होकर यदि चमकता हो तो वह प्राणी नीच स्वभाववाला होकर ममता से संपन्न होताहुआ भुजाओं में आघात को पाता है ॥ २५ ॥

३ बुधालयान्ते दिनपालये वा रेखाद्वयं वै कुटिलं विभाति ।
गाम्भीर्यशाली पुरुषः सुबोधः स्थूलं यदा चेत्कटिघातमेति ॥ २६ ॥

बुधकी आखिरी जगह में या सूर्यके स्थान में दो रेखाओंवाला निशान यदि टेढ़ा होकर सोहता हो तो वह प्राणी महाज्ञानी होकर गाम्भीर्यशाली होता है और यदि पूर्वोक्त निशान मोटासा प्रतीत होवे तो वह प्राणी कमर में आघातको पाता है ॥ २६ ॥

४ अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखाद्वयं वै सरलं विभाति ।
मनस्सुशक्तिर्मनुजस्सुबुद्धिः संकर्तितं चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ २७ ॥

अनामा व मध्यमा अँगुली की मूलमें दो रेखाओंवाला निशान सीधा होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी मानसी शक्तिका रखनेवाला होकर बड़ी बुद्धिवाला होता है और यदि पूर्वोक्त निशान तिरछी रेखाओं से कटा हुआ देखाजावे तो कहे हुए फल की अल्पता होती है ॥ २७ ॥

५ देवेन्द्रवन्द्यालयगा विभान्ति रेखा विक्षुद्राः सरलाश्च पञ्च ।
प्राप्नोति मृत्युं हठतो मनुष्यो मत्या विहीनो ममतासमेतः ॥ २८ ॥

बृहस्पति की जगह में पहुँची हुई छोटीसी होकर सीधी पांच रेखायें यदि सोहती हों तो वह प्राणी बुद्धि से विहीन होकर ममता से सम्पन्न होता हुआ अपने हठ से मौत को पाता है ॥ २८ ॥

भाग्यरेखा

२८ मात्रीं सशाखां च सुभोगरेखां भाग्या विभिन्त्वा यदि याति मन्दम् ।
वक्त्राभिघातं लभते मनुष्यो नार्या यदा चेत्प्रसवेऽतिकष्टम् ॥ २९ ॥

मातृरेखा और शाखासमेत भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा)को काटकर भाग्यरेखा (फेटलाइन) यदि शनैश्चर पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी मुख में आघात को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में प्रतीत होवे तो वह बच्चा जनने के समय बड़ा कष्ट पाती है ॥ २९ ॥

२९ पितुस्समुत्था कुटिला सुरेखा सबिन्दुकोणद्वयसंयुता चेत् ।
तदा नरो दर्शनशास्त्रवेत्ता विपर्यये चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ ३० ॥

पिता की रेखा से उठीहुई टेढ़ी रेखा बिन्दु समेत दो त्रिकोण निशानों से संयुक्त देखी जावे तो वह प्राणी दर्शनशास्त्र का ज्ञाता होता है और यदि पूर्वोक्त निशान उलटा होकर प्रतीत होवे तो उक्त फल का ह्रास होता है ॥ ३० ॥

३० भोगाधरस्था विशदा विक्षुद्रा विभान्ति रेखाः सरलाश्च षट्काः ।
भोगक्षयं वै लभते मनुष्यः पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम् ॥ ३१ ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिकी हुई साफ़ व सीधी होकर छोटी सी छह रेखायें यदि सोहती हों तो वह प्राणी भोगों के क्षयको पाता है यह विचार पूर्वोक्त मानसे करना चाहिये ॥ ३१ ॥

३१ मातुस्सुरेखाधरगं विभाति गुणेन युक्तं यदि कोणयुग्मम् ।
तदा नरो दर्शनपारगामी नामी सुधामी धनतामुपेतः ॥ ३२ ॥

मातृरेखा के निचले भागमें प्राप्त हुआ गुणाके × निशान से संयुक्त होकर दो त्रिकोणों का चिह्न चमकता हो तो वह प्राणी नामी व सुधामी होकर धनसमूहों से संपन्न होता हुआ दर्शनशास्त्रका पारगामी होता है ॥ ३२ ॥

३२ पितुः सुरेखा मिलिता जनन्यां रेखात्रयेणापि युतं तदूर्ध्वम् ।
परस्त्रियं वै भजते मनुष्यो विहाय नारीं सुभगां स्वकीयाम् ॥ ३३ ॥

पिता की रेखा माता की रेखा में मिलगई हो और उनका ऊपरला भाग टेढ़ी तीन रेखाओंसे जुड़ाहुआ देखाजावे तो वह प्राणी बड़भागिनी अपनी भार्या को छोड़कर परभार्या को भजता है ॥ ३३ ॥

पितृरेखा

११ पितुस्सुरेखा यदि दीर्घरूपा मातुस्सुरेखा बहुस्वल्पगा स्यात् ।
तदा नरो जीवति दीर्घकालं विश्वासघाती म्रियते प्रवासे ॥ ३४ ॥

यदि पिताकी रेखा दीर्घाकार होकर प्रतीत हो और माताकी रेखा बहुतही छोटी प्रतीत होवे तो वह प्राणी बहुत काल पर्यन्त जीता बना रहता व विश्वासघाती होकर परदेश में मरजाता है ॥ ३४ ॥

भाग्यरेखा

१२ भाग्याधरस्थं विशदं विभाति नन्दाङ्कचिह्नं यदि भासमानम् ।
सन्तुष्टचित्तो मनुजस्तदा स्याद्दाता दयालुर्निजवंशधाता ॥ ३५ ॥

भाग्यरेखा के निचले भागमें टिकाहुआ साफ़ होकर नवके अङ्कके समान निश यदि भासमान होता हुआ देखाजावे तो वह प्राणी सन्तुष्टचित्त होता हुआ दाता व दया होकर अपने वंश का धाता होता है ॥ ३५ ॥

शुक्ररेखा

१३ काव्यालयोत्था यदि याति रेखा पैत्रीं सुमात्रीं च विभिद्य भोगाम् ।
शूरो मनुष्यो द्विषतो विजित्य सौभाग्यशाली लभते सुवित्तम् ॥ ३६ ॥

शुक्रके घरसे उठी हुई रेखा यदि पितृरेखा व मातृरेखा को काटकर भोगरेखा पर चली जावे तो वह प्राणी शत्रुवोंका विजयकर शूरमा व सौभाग्यशाली होताहुआ बड़े को पाता है ॥ ३६ ॥

१४ अङ्गुष्ठसीमाचलिते गभीरे रेखे विभुग्ने पितरं विभिन्तः ।
स्वेच्छानुसारी पुरुषो विहारी देशे सुदूरे भ्रमते नितान्तम् ॥ ३७ ॥

अँगूठे की सीमा (हद) से चलीहुई दो रेखायें गहरी व टेढ़ी होकर पितृरेखा को काट हों तो वह प्राणी अपनी चाहकी चाहना करनेवाला होकर विहार करता हुआ बड़े देश में जाकर हमेशा घूमा करता है ॥ ३७ ॥

१५ अङ्गुष्ठमूलाच्चलिते विशुद्धे रेखे गभीरे मणिबन्धमेतः ।
लावण्ययुक्तो मनुजो मनस्वी लोभाभिभूतो ललनासमेतः ॥ ३८ ॥

अँगूठे की मूल से चली हुई दो रेखायें साफ़ व गहरी होकर मणिबन्ध (क़ब्जे) सामने आजावें तो वह प्राणी सुन्दरता से संयुत व मनमौजी होकर ललनागणों से स होताहुआ लोभ करने से आदर नहीं पाता है ॥ ३८ ॥ (देखो चित्र नं० २३)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके संभाति रेखा सरला गभीरिका ।
आत्मापघातान्मृतिमेति मानवो दुष्टस्वभावो निजदोषदर्पितः ॥ ३९

समस्त अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में सीधी व गहरी होकर रेखा भली भांति सोहती हो तो वह प्राणी बुरे स्वभाववाला होकर अपने दोषों से घमण्डी होता हुआ आत्मा के अपघात सेही मौत को पाता है ॥ ३९ ॥

२ कनिष्ठिकामूलगतं विभुग्नं रेखाचतुष्कं विशदं विभाति ।
संभोगशाली मनुजस्तदानीं भोगाभिलाषां रमणीमुपैति ॥ ४० ॥

कनिष्ठा की मूलमें प्राप्तहुआ चार रेखाओंवाला निशान टेढ़ा व साफ़ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी बड़ा भोगशाली होकर भोगकी चाहनावाली रमणी को पाताहै ॥ ४० ॥

३ मध्यामुमूले यदि भाति रेखा आचारहीनः शुचमेति प्राणी ।
बह्वीषु रेखासु च बन्धमेति म्लानासु पीडामधिकां भुनक्ति ॥ ४१ ॥

यदि छोटी सी एकरेखा मध्यमा अँगुली की मूल में सोहती हो तो वह प्राणी आचार से हीन होकर शोक को पाता है और यदि बहुतसी रेखायें प्रतीत हों तो वह प्राणी कारागार (जेलखाने) में बन्धन को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखायें मैली सी प्रतीत हों तो वह प्राणी अधिक पीड़ा को भोगता है ॥ ४१ ॥

सम्भोगरेखा

४ संभोगशाखा विशदा गभीरा प्रदेशिनीमूलगता विभाति ।
सत्यस्वभावो मनुजस्तदानीं लोकाभिमान्यो ललनामुपैति ॥ ४२ ॥

सुभोगरेखा की शाखा साफ़ व गहरी होकर तर्जनी अँगुली की मूलमें यदि सोहती हो तो वह प्राणी सच्चे स्वभाववाला होकर लोगों से माननीय होताहुआ ललना (दुलारी प्यारी) को पाता है ॥ ४२ ॥

संभोगरेखा

५ संभोगरेखा विशदा सुपीना संरक्तवर्णा सरला विभाति ।
संक्रामरोगी पुरुषः सुभोगी शोथेन युक्तो भ्रमते भयार्तः ॥ ४३ ॥

सुभोगरेखा (अस्मदेशीय आयुरेखा) साफ़, मोटी, लाल तथा सीधी होकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी संक्रामक रोगवाला व बड़ा भोगवाला व सूजनसे संयुक्त होकर भयसे घबड़ाता हुआ घूमता है ॥ ४३ ॥

संभोगरेखा

६ संभोगरेखोभयतो विभान्ति सूक्ष्मस्वरूपा बहुबिन्दवश्च ।
क्लीबस्वभावो मनुजो मनीषी धातुक्षयं वै लभते नितान्तम् ॥ ४४ ॥

सुभोगरेखा की दोनों तरफ़ छोटेरूपवाले बहुतसे बिन्दु (नुक्ते) यदि सोहते हों तो वह प्राणी नपुंसक कासा स्वभाववाला होकर बुद्धिमान् होताहुआ धातुकी क्षीणता को हमेशा पाता है ॥ ४४ ॥

७ बृहस्पतिस्थानगतं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं कुरेखम् ।
प्रज्ञाविहीनः पुरुषस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥ ४५ ॥

बृहस्पति के स्थान में प्राप्तहुआ एक रेखावाला निशान सीधा होकर तिरीछा कटाहुआ यदि सोहता हो तो वह प्राणी बुद्धिसे हीन होता है और यदि पूर्वोक्त निशान जिस स्त्री के करतल में प्रतीत हो तो वह व्यभिचारिणी (वेश्या) होती है ॥ ४५ ॥

मातृरेखा

८ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे नतस्वरूपा नितरां विभाति ।
अनिष्टकारी पुरुषो नराणां निर्बोधरूपो नयताविहीनः ॥ ४६ ॥

माता की रेखा यदि ऊपरले भाग में लचेरूपवाली होकर अधिकता से सोहती हो तो वह प्राणी पुरुषों के लिये अनिष्टकारी होकर अज्ञानी होताहुआ नयता (नीति) से विहीन रहता है ॥ ४६ ॥

९ मातुस्समुत्थं सरलं त्रिरेखं चिह्नं सुभोगाभिमुखं प्रयाति ।
विश्वासयुक्तः पुरुषः सुशीलः सत्ये रतः शान्तिपरो दयालुः ॥ ४७ ॥

माता की रेखा से उठाहुआ तीन रेखाओंवाला निशान सीधा होकर सुभोगरेखा के सामने चलाजावे तो वह प्राणी विश्वासी, सुशील व सत्य में रत होकर शान्ति में परायण होताहुआ दयालु बना रहता है ॥ ४७ ॥

मातृरेखा

१० पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा स्थूलस्वरूपा गुरुगा विभाति ।
जारोद्भवो वै मनुजस्तदा स्याच्चातुर्यशाली चपलस्वभावः ॥ ४८ ॥

पिता की रेखा से छुटी हुई माता की रेखा मोटी होकर बृहस्पति के स्थान में यदि सोहती हो तो वह प्राणी जारजात (दोगला) होताहुआ चातुर्यशाली होकर चपल स्वभाववाला होता है ॥ ४८ ॥

११ पित्रोस्सुमध्ये विशदं विभाति गुणाख्यचिह्नं यदि रक्तवर्णम् ।
उत्पातवृन्दं लभते मनुष्यो मायाविहीनो ममतासमेतः ॥ ४९ ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में गुणाका निशान × साफ़ लालवर्णवाला होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी मायाओं से विहीन होकर ममता से संपन्न होताहुआ उत्पात-समूहों को पाता है ॥ ४९ ॥

१२ अङ्गुष्ठशाखावृतरेखयुग्मं सकोणचिह्नं प्रयुतं चकास्ति ।
तदा मनुष्यः शिरसा विभिन्नः पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति ॥ ५० ॥

अँगूठे की शाखाओं से घिराहुआ दो रेखाओंवाला निशान यदि कोण समेत चि

से संयुत होकर चमकता हो तो वह प्राणी शीशसे विभिन्न होकर फांसी के अग्रभाग से विंधाहुआ मौत को पाता है ॥ ५० ॥

संभोगरेखा

१३ संभोगरेखा यदि नीचभागे क्षुद्राविमिश्रा विशदा विभाति ।
उत्पातयुक्तो मनुजस्तदानीं क्लेशाभिभूतो भयतामुपैति ॥ ५१ ॥

सुभोगरेखा निचले भागमें छोटी रेखा से संयुत होकर साफ़ होती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी उत्पातों से युक्त होकर कष्टों से दुःखी होताहुआ भय को पाता है ॥ ५१ ॥

१४ मातुस्सुरेखोभयतो विभाति बिन्दुत्रयं वै विरलं विक्षुद्रम् ।
तदा जनो दुर्बलगात्रयष्टिर्व्ययाधिकं वै लभते नितान्तम् ॥ ५२ ॥

मातृरेखा के दोनों तरफ़ छोटे व विरल होकर तीन बिन्दु (नुक्के) यदि सोहते हों तो वह प्राणी दुर्बल शरीरवाला होकर खर्च की अधिकता को हमेशा पाता है ॥ ५२ ॥

१५ पितुस्सुभग्नी विशदा सुरेखा संवक्ररूपा समुपैति शौरिम् ।
संक्षीणकायो मनुजो मलाक्तो मन्दस्वभावो ममतामुपैति ॥ ५३ ॥

पितृरेखा की भग्नीरेखा साफ़ व टेढ़ी होकर यदि शनैश्चर पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी मलसे भरा व दुबले शरीरवाला होकर नीचस्वभाव को रखता हुआ ममता को पाता है ॥ ५३ ॥

१६ मातुस्समुत्था मणिबन्धमेति सर्पानुरूपा विशदा सुरेखा ।
कारागृहं याति नरस्तदानीं स्वीयेन दोषेण समाकुलात्मा ॥ ५४ ॥

माता की रेखा से उठी हुई रेखा साफ़ व सर्पके समान आकारवाली होकर मणिबन्ध (क़ब्ज़े) के सामने चली जावे तो वह प्राणी अपने दोषसेही व्याकुल मनवाला होता हुआ जेलखाने को जाता है ॥ ५४ ॥ (देखो चित्र नं० २४)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकामूलतलाच्चलन्ती सार्धा सुरेखा परुरेति चाद्यम् ।
चातुर्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यात् सर्वेषु शास्त्रेषु महाप्रवीणः ॥ ५५ ॥

कनिष्ठा अँगुली के मूलतल से चलती हुई डेढ़रेखा पहली पोरको पहुँचजावे तो वह प्राणी चातुरीकलासे संपन्न होता हुआ सकलशास्त्रों में बड़ा प्रवीण होता है ॥ ५५ ॥

२ चन्द्रात्मजस्थानगतं विक्षुद्रं रेखाचतुष्कं सरलं चकास्ति ।
तदा जनो विन्दति जारजातान् पुत्रान्गुणाढ्यान्गुरुतागतांश्च ॥ ५६ ॥

बुध के स्थान में प्राप्तहुआ चार रेखाओंवाला निशान छोटा व सीधा होकर

यदि चमकता हो तो वह प्राणी गुणों से संपन्न गुरुता को प्राप्त जारजात (दोगले पुत्रोंको पाता है ॥ ५६ ॥

३ मार्तण्डपुत्रालयगं विभाति चिह्नं विक्षुद्रं सरलं त्रिरेखम् ।
वक्षस्स्थलाघातमुपैति प्राणी मान्यो वदान्यो विभुतासमेतः ॥ ५७ ॥

शनैश्चर के स्थान में प्राप्त हुआ तीनरेखाओंवाला निशान छोटा व सीधा होकर य सोहता हो तो वह प्राणी मान्य व वदान्य (दाता) होता हुआ विभुता से संयुक्त हो छाती में चोटको पाता है ॥ ५७ ॥

४ मातुस्समुत्था विशदा सुरेखा भोगां विभित्त्वा यदि याति चान्द्रिम् ।
धर्मेण युक्तो मनुजो धनाढ्यो धन्यो धरित्र्यां क्षमतामुपैति ॥ ५८ ॥

माताकी रेखासे उठीहुई साफ़ शोभायमान रेखा भोगरेखा को काटकर यदि बु समीप चलीजावे तो वह प्राणी धनाढ्य व धर्मसे संयुक्त होकर धरामण्डल में धन्यव देने के योग्य होता हुआ क्षमता (सहनशीलता) को पाता है ॥ ५८ ॥

५ भोगासमुत्था विशदा विक्षुद्रा मध्यामुमूलं समुपैति रेखा ।
सम्पत्तिवृन्दं लभते मनुष्यः सौभाग्यशाली सुषमासमेतः ॥ ५९ ॥

भोगरेखा से उठीहुई रेखा साफ़ व छोटीसी होकर मध्यमा अँगुलीकी मूलके प पहुँच जावे तो वह प्राणी सौभाग्यशाली होताहुआ परमशोभा से संपन्न होकर संप समूह को पाता है ॥ ५९ ॥

६ भोगासुभग्नी विशदा विभिन्ना रेखा गभीरा यदि याति मन्दम् ।
मन्दस्वभावो मनुजो मलाक्तो दीर्घा यदा चेन्मलिनस्वभावः ॥ ६० ॥

भोगरेखा की भग्नीरेखा गहिरी होतीहुई साफ़ व भिन्न होकर यदि शनैश्चर प चली जावे तो वह प्राणी मलसे भराहुआ नीचे स्वभाववाला होता है और पूर्वोक्त रे दीर्घाकारवाली प्रतीत होवे तो वह प्राणी मैले कुचैले स्वाभाववाला होता है ॥ ६० ॥

७ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे रेखात्रयेणाप्यवकर्तिता स्यात् ।
मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदानीं कार्ये प्रतारे निरतो नितान्तम् ॥ ६१ ॥

माता की रेखा ऊपरले भागमें तीन रेखाओं से कटी हुई यदि देखी जावे तो प्राणी मिथ्याभाषी होता हुआ छल के कार्य में हमेशा लगा रहता है ॥ ६१ ॥

८ शीर्षे सुपैत्री यदि मातृवृक्णा क्षुद्राविभिन्ने च तयोः सुरेखे ।
विषप्रयोगे निरतो मनुष्यो मन्दे च कार्ये ममतामुपैति ॥ ६२ ॥

पिता की रेखा ऊपरले भाग में यदि मातृरेखा से कटी हो और उन दोनों (पिता मा-
ओं) की रेखायें छोटी रेखा से भिन्न होवें तो वह प्राणी विषप्रयोग में यानी विष
लादेने में निरत होताहुआ मन्दकार्य (नीचकार्य) में ममता को पाता है ॥ ६२ ॥

मध्ये विभिन्ना सरला गभीरा मातुः सुरेखा शशिगा नता चेत् ।
आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो वृद्धे वयस्के श्रमतामुपैति ॥ ६३ ॥

माताकी रेखा बीचमें कटीहुई सीधी, गहरी व लची होकर चन्द्रमा के स्थान में पहुँचजावे
वह प्राणी अल्पायु को पाता है और वृद्धावस्था में परिश्रम को करता है ॥ ६३ ॥

पितुस्सुशेषाच्चलिता सुरेखा भाग्यां विभित्त्वा यदि याति मात्रीम् ।
दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति सुतीव्रबुद्धिं सरलस्वभावम् ॥ ६४ ॥

पितृरेखा के शेषभाग से चली हुई रेखा भाग्यरेखा को भेदन कर यदि मातृरेखा
न्त चली जावे तो उस प्राणी को दीर्घायु, तीक्ष्णबुद्धि व सीधे स्वभाववाला
रती है ॥ ६४ ॥

पितुस्सुरेखा विशदा सुवक्रा भागद्वये चास्ति विभक्तरूपा ।
तदा नरोयं निधनं प्रयाति पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम् ॥ ६५ ॥

पिता की रेखा साफ़ व टेढ़ी होकर दो भागों में बटी हुई देखी जावे तो वह प्राणी
त्युको पाता है इसका विचार पूर्वोक्त मानसे करना चाहिये ॥ ६५ ॥

वप्राधरस्थं विशदं विभाति वज्रानुरूपं यदि भासमानम् ।
वार्द्धे मनुष्यः शुभतामुपैति पूर्णं यदा चेच्छुभताधिकं च ॥ ६६ ॥

पिताकी रेखा के नीचे टिकाहुआ वज्राकार निशान साफ़ व शोभायमान होता हुआ प्र-
ीत हो तो वह प्राणी वृद्धावस्था में शुभता को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान पूर्णरूप
प्रतीत हो तो बड़े शुभ को पाता है ॥ ६६ ॥

भाग्या समुत्था मणिबन्धदेशात् कोणं सरन्ती समुपैति मात्रीम् ।
सुगुप्तविद्यो मनुजस्सुवैद्यो रसायनज्ञो रमणीरतश्च ॥ ६७ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठीहुई भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) कोणको करती हुई मातृ-
खा के समीप पहुँच जावे तो वह प्राणी गुप्तविद्यावाला व अच्छा वैद्य होकर रसा-
न का ज्ञाता होता हुआ रमणियों में रत रहता है ॥ ६७ ॥

सुभोगरेखोपरिगं विशुद्धं गर्तानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

१ "वप्रस्तीते पुमानस्त्री रेणौ क्षेत्रे चये तटे" (इति विश्वः) ॥

तदा नरोयं कटिघातमेति कलासु पूर्णः कमलालयश्च ॥ ६८ ॥

सुभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के ऊपरले भाग में प्राप्त हुआ गड्ढे के सम निशान साफ़ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी चौसठि कलाओं में परिपूर्ण हो हुआ लक्ष्मीवान् होकर कमर में आघात को पाता है ॥ ६८ ॥

१५ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के यवानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ विद्याविहीनो विषयारतश्च ॥ ६९ ॥

समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर में यदि यवाकार निशान सोहता हो तो वह प्रा विद्या से विहीन व विषयों में आसक्त होता हुआ जल में डूबता है ॥ ६९ ॥

१६ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात् स्वल्पा सुरेखा समुपैति पैत्रीम् ।
कान्ताभिलाषी पुरुषस्तदानीं मातापितृभ्यां शुभतामुपैति ॥ ७० ॥

मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठी छोटीसी रेखा पिताकी रेखा के पास पहुँचजावे तो प्राणी लुगाई की चाहना करता हुआ माता पिता के द्वारा शुभता को पाता है ॥ ७० (देखो चित्र नं० २५)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के तिर्यग्विभिन्नं सरलं कुरेखम् ।
रोगेण युक्तो मनुजस्तदानीं नारोग्यभोगं लभते कदापि ॥ ७१ ॥

समस्त अँगुलियों की तीसरी पर्व (पोर) में तिरीछी रेखाओं से कटाहुआ सी होकर एकरेखावाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी रोगसे संयुत होकर आरो समेत भोग को कदापि नहीं पाता है ॥ ७१ ॥

२ संगर्तमध्यं गुरुगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।
पुत्राञ्जनो विन्दति जारजातानूर्ध्वं यदा चेद् बहुकन्यकाश्च ॥ ७२ ॥

भलीभांति बीच में गड्ढे का निशान रखनेवाला बृहस्पति के स्थान में प्राप्त व तिरी रेखाओं से कटाहुआ सीधा होकर दो रेखाओंवाला निशान यदि भासमान देखाजावे वह प्राणी जारजात (दोग़ले) पुत्रों को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान तर्जनी के ऊपरले भाग में देखाजावे तो बहुतसी जारजात कन्याओं को पाता है ॥ ७२ ॥

३ शूरात्मजस्थानगता विभान्ति क्षुद्रस्वरूपाः कुटिलास्सुरेखाः ।
आलस्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यान्निष्कामकार्ये निरतो नितान्तम् ॥ ७३

शनैश्चर के स्थान में प्राप्त हुई साफ़ छोटी छोटी टेढ़ी रेखायें यदि सोहती हों तो

प्राणी आलस्य से संयुक्त होता हुआ विना चाहनावाले कार्यमें हमेशा लगा रहता है ॥ ७३ ॥

४ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता भाग्येन भिन्ना प्रतिभाति कोणम् ।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदानीं संक्षीणकायो ममतामुपैति ॥ ७४ ॥

भाग्यरेखा (दौलत की रेखा) से कटी हुई सुभोगरेखा (हार्टलाइन) यदि मध्यमा पर्यन्त पहुँचकर कोणचिह्न को बनाती हुई देखीजावे तो वह प्राणी दुर्जनता से संयुत होकर क्षीणकायावाला होताहुआ ममता को पाता है ॥ ७४ ॥

५ संभोगरेखोपरिगं त्रिरेखं गर्तेन युक्तं यदि भाति चिह्नम् ।
गुदामयं वै लभते मनुष्यो गर्भस्य घातं निजधर्मपत्न्याम् ॥ ७५ ॥

सुभोगरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्तहुआ गड्ढे से संयुक्त होकर तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी गुदा में रोग और अपनी धर्मभार्या में गर्भघात को पाता है ॥ ७५ ॥

६ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे रेखाद्वयेनाप्यवखण्डिता स्यात् ।
मातुस्सुमानं कुरुते मनुष्यो द्वेषी जनानां जनताविहीनः ॥ ७६ ॥

माताकी रेखा निचले भागमें दो रेखाओं से कटी हुई यदि देखी जावे तो वह प्राणी सर्वजनों का द्वेषी होकर जनसमूहों से विहीन होताहुआ अपनी माता का बड़ा मान सम्मान करता है ॥ ७६ ॥

७ भोगाधरस्थं चतुरस्रयुक्तं त्रिकोणरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
आत्मम्भरिस्स्यान्मनुजस्तदानीं लोभेन युक्तो ललनासमेतः ॥ ७७ ॥

भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के निचले भागमें टिकाहुआ चतुष्कोण से संयुत होकर त्रिकोण का निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी लोभी व ललना (दुलारी प्यारी) से संयुक्त होताहुआ पेटू कहलाता है ॥ ७७ ॥

८ मातुस्सुरेखोपरिगं द्विरेखं चिह्नं गभीरं यदि याति भोगाम् ।
तदा नरोयं द्विषतां विजेता जायासमेतो जनतामुपैति ॥ ७८ ॥

मातृरेखा के ऊपर प्राप्तहुआ गहिरा दो रेखाओंवाला निशान यदि भोगरेखा के समीप चलाजावे तो वह प्राणी शत्रुओं का विजेता होकर जाया से संयुत होताहुआ जनता को पाता है ॥ ७८ ॥

९ पित्रोः सुमध्ये विशदं विभाति गुणत्रयेणापि युतं सुचिह्नम् ।

---

१ गर्त्तावटौ भुवि श्वभ्र इत्यमरः ॥

उत्पातकारी मनुजो विकारी वेश्याविहारी परवित्तहारी ॥ ७९ ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में तीन गुणों के निशानों से संयुत होकर शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी विकारी व वेश्याविहारी होकर परवित्तहारी होता हुआ उत्पातकारी होता है ॥ ७९ ॥

१० मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा कौटिल्यरूपा मणिबन्धमेति ।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी द्वन्द्वाख्ययुद्धे विपदां विवेति ॥ ८० ॥

मातृरेखा से छुटी (अलग) हुई पिताकी रेखा टेढ़ी होकर यदि मणिबन्ध (कब्जे के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी चौपये के आघात को पाता हुआ द्वन्द्वयुद्ध में विपदा (विपत्ति) को विशेषता से पाता है ॥ ८० ॥

११ काव्यालयोत्था समुपैति रेखा पैत्रीं सुमात्रीं च विभिद्य भोगाम् ।
तदा नरः सप्ततिवत्सरान्ते सौभाग्यशाली सुखतां समेति ॥ ८१ ॥

शुक्र के स्थान से उठी हुई रेखा पितृरेखा व मातृरेखा को काटकर भोगरेखा के समीप चली जावे तो वह प्राणी सत्तर वर्ष के बाद सौभाग्यशाली होता हुआ सुखसमूहों को पाता है ॥ ८१ ॥

१२ भिन्ना सुभाग्या यदि याति रेखा मात्रीं सुभोगां च विभिद्य मन्दम् ।
मृत्योर्विशङ्की मनुजो वितङ्की दौर्बल्यगात्रो गुणतामुपैति ॥ ८२ ॥

छोटी रेखा से कटी हुई भाग्यरेखा (फेटलाइन) मातृरेखा व भोगरेखा को भेदनकर शनैश्चर के स्थान में यदि चलीजावे तो वह प्राणी मौत से डरता हुआ वितङ्की होकर दुबला होताहुआ गुणसमूहों को पाता है ॥ ८२ ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात् सञ्छिन्नमस्ता समुपैति सौम्यम् ।
तदा नरोयं रमणीसमूहाद्धानिं भयं वै लभते नितान्तम् ॥ ८३ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई कटे मस्तकवाली रेखा बुधके समीप यदि चलीजावे तो वह प्राणी रमणियों (लुगाइयों) के सकाश से हानि व भय को हमेशा पाताहै ॥ ८३ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदं विभाति रेखाचतुष्कं यदि तुर्यभिन्नम् ।
तदा भविष्ये समये मनुष्यो महाधिकारी विषये रतश्च ॥ ८४ ॥

अँगूठे की मूल में साफ़ होकर चाररेखाओं से कटा हुआ चाररेखाओं वाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी भविष्यकाल में महाधिकारी होकर विषयमें रत रहता है ॥ ८४ ॥
(देखो चित्र नं० २६)

---

१ भागुरिमते टाप् द्वितीयान्तं पदमिति बोध्यम् ॥

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके भूपक्षरेखं यदि भाति लक्ष्मकम् ।
चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावको ह्येकाक्षरूपो मनुजो विभण्यते ॥ ८५ ॥

समस्त अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में यथासंख्य एक व दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी चातुरीकला से संपन्न होकर चपलस्वभाववाला होता हुआ काना कहाजाता है ॥ ८५ ॥

ब्रध्नालयस्थं विशदं विभाति चिह्नं द्विरेखं विततस्वरूपम् ।
तदा मनुष्यः कटिघातमेति कामी कलावान्कलहातुरश्च ॥ ८६ ॥

सूर्य के स्थान में टिका हुआ साफ़ व लचेरूपवाला होकर दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी कामी व कलावान् होकर लड़ाई करने में आतुर होता हुआ कमर में आघात (चोटचपेट) को पाता है ॥ ८६ ॥

सुभोगरेखा गुरुगा विभाति तस्याः सुशाखा यदि याति शौरिम् ।
तदा नरः शत्रुगणाद्विमुक्तः सम्पत्तिशाली सुखतामुपैति ॥ ८७ ॥

सुभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) बृहस्पति के स्थान में प्राप्त हुई यदि सोहती हो और उसकी एकशाखा शनैश्चर के स्थान में यदि चली जावे तो वह प्राणी शत्रुगणों से छूटा हुआ संपत्तिशाली होकर सुखसमूह को पाता है ॥ ८७ ॥

शुक्रालयाच्चेच्चलिता सुरेखा सच्छिन्नमस्ता गुरुगा विभाति ।
महाधिकारी मनुजस्तदानीं मान्यो वदान्योऽभयतामुपैति ॥ ८८ ॥

शुक्र के स्थान से चली हुई रेखा कटे मस्तकवाली होकर बृहस्पति के स्थान में प्राप्त होती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी महाधिकारी (बड़े ओहदेवाला) होकर मान्य वदान्य (दाता) होता हुआ अभयता को पाता है ॥ ८८ ॥

मातुस्सुरेखोपरिगं विशुद्धं भिन्नं त्रिकोणं यदि भाति चिह्नम् ।
प्राप्नोति प्राणी जननीविरागं तदास्य माता मृतिमेति जन्तोः ॥ ८९ ॥

माता की रेखा के ऊपर प्राप्त हुआ साफ़ होकर कटा फटा तीन कोणोंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी माता के विराग को पाता है उसीसे इस प्राणी की माता पहले मौतको पाती है ॥ ८९ ॥

मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे स्वल्पस्वरूपा विततता तथोर्ध्वे ।
दौर्भाग्ययुक्तो वयसि प्रवृद्धे संवक्रगा चेदतिलोभशाली ॥ ९० ॥

माताकी रेखा यदि निचलेभाग में पतलेरूपवाली प्रतीत हो तथा ऊपरले भाग यदि फैली हुई देखीजावे तो वह प्राणी वृद्धावस्था में दौर्भाग्यसे संयुत होता है यदि पूर्वोक्त रेखा टेढ़ीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी बड़ा लोभी होता है (यानी बड़ा लालची) कहाता है ॥ ९० ॥

७ पितुस्सुरेखोपरिगं विभाति तिर्यग्विभिन्नं समकोणयुक्तम् ।
मानस्य हानिं लभते मनुष्यस्तथा विनाशं विषयस्य नूनम् ॥ ९१ ॥

पिताकी रेखाके ऊपरले भागमें प्राप्त व तिरीछा कटाहुआ समकोणसे संयुक्त होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी मानहानि को तथा विषयविनाशको निश्चयकर पाताहै ॥ ९

८ भाग्याधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं विशालं सरलं द्विरेखम् ।
दौर्जन्ययुक्तो मनुजस्तदानीं विश्वासघाती विषयानुपैति ॥ ९२ ॥

भाग्यरेखा के निचले भाग में टिका, साफ़, विशाल व सीधा होकर दो रेखाओंवा निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी दुर्जनता से संयुत होकर विश्वासघाती होता हु विषयों को पाता है ॥ ९२ ॥

९ पितुस्ससुत्था यदि याति भाग्या मात्रीं सुभोगां च विभिद्य सूर्यम् ।
क्षयार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्यात् क्षीणो दरिद्रो दयिताविहीनः ॥ ९३

पिताकी रेखा से उठीहुई भाग्यरेखा (दौलत की रेखा) मातृरेखा व भोगरेखाको वि पता से भेदन कर यदि सूर्य के समीप चलीजावे तो वह प्राणी क्षयरोग (कंजम्पशन) संयुत होता हुआ दुबला व दरिद्री होकर दयिता (प्राणप्यारी) से विहीन रहताहै ॥ ९

१० अङ्गुष्ठशाखावृतमध्यभागा रेखा सुवक्रा यदि याति चोर्ध्वम् ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ रामाभिभूतो रसिको रसायाम् ॥ ९४

अँगूठे की शाखाओं से घिरी मध्यभागवाली रेखा टेढ़ी होकर यदि ऊपर को च जावे तो वह प्राणी सुन्दरियों से अनादृत होता हुआ पृथ्वीमण्डल में रसज्ञाता हो नदी व नाले आदिकों में डूबजाता है ॥ ९४ ॥

११ निशाकरस्थानगतं विशुद्धं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
कुशाग्रबुद्धिर्मनुजस्तदानीं महाधिकारी विषयान्भुनक्ति ॥ ९५ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्तहुआ साफ़ होकर तारा के समान निशान यदि सोहता हो

१ सुन्दरी रमणी रामेत्यमरः ॥

वह प्राणी बुद्धिमान् या तीक्ष्ण बुद्धिवाला होकर महाधिकारी (बड़े ओहदेवाला) होता हुआ भोगों को भोगता है ॥ ९५ ॥

१२ क्षपाकरस्थानसमीपवर्ति त्रिकोणचिह्नं विशदं चकास्ति ।
महाधिकारी मनुजो मनस्वी मायामयोयं ममतामुपैति ॥ ९६ ॥

चन्द्रस्थान के समीपवर्ती होकर साफ़ होताहुआ त्रिकोण का निशान यदि चमकता हो तो वह प्राणी महाधिकारी व मनमौजी होताहुआ मायावी होकर ममता को पाता है ॥ ९६ ॥

१३ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति भाग्याम् ।
तदा नरः क्षीणकलेवरोसौ दुःखाभिभूतो नितरां दुनोति ॥ ९७ ॥

मणिबन्ध (कब्ज़े) से उठाहुआ सांप के समान निशान यदि भाग्यरेखा (दौलत की रेखा) के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी दुबले शरीरवाला होकर दुःखों से पीड़ित होताहुआ अधिकता से शोकित होता है ॥ ९७ ॥

१४ पैत्री सुवक्रा मणिबन्धगा चेत्तदन्तिके स्यात्सरलं द्विरेखम् ।
तदा मनुष्यो मृतिमेति पूर्वं पश्चात्स्वमाता मरणं प्रयाति ॥ ९८ ॥

पिताकी रेखा टेढ़ी सी होकर यदि मणिबन्ध (कब्ज़े) के पास पहुँच जावे और उसी के समीप सीधा होकर दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी पहले ही से मरजाता है और पीछे से उसकी माता मरजाती है ॥ ९८ ॥ (देखो चित्र नं० २७)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सौम्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा सर्पानुरूपा समुपैति चोर्ध्वम् ।
भार्याविहीनो मनुजस्तदानीं यज्वा परस्त्रीं भजते नितान्तम् ॥ ९९ ॥

बुध के स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा सर्प के समान होकर यदि ऊपर को चलीजावे यानी कनिष्ठा की तीसरी पोर में पहुँच जावे तो वह प्राणी भार्या से रहित होकर विधान से यज्ञ करता हुआ सदैव परनारी (उपपत्नी) का सेवन करता है ॥ ९९ ॥

२ अनामिकामूलगतं विभाति च्छिद्रस्वरूपं विशदं सुचिह्नम् ।
प्रणष्टदृष्टिर्मनुजो विशोकी विनष्टवित्तो विषयाद् बिभेति ॥ १०० ॥

अनामिकाकी मूल में प्राप्तहुआ साफ़ होकर छिद्र के समान शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी बड़ा शोच करनेवाला व विनाशहुए धनवाला होताहुआ अन्धा होकर भोगों से डरताहै यानी जिसकी दृष्टि जातीरहती है इसीसे वह विशोकी होकर गवाँये धनवाला होताहुआ विषयों से विभीत होता है ॥ १०० ॥

३ अनामिकामध्यमिकासुमध्यं मातुस्समुत्था यदि याति रेखा ।
तदा नरो दीनदशामुपेतः प्राप्नोति मृत्युं निजकर्मदोषात् ॥ १ ॥

माताकी रेखा से उठी हुई रेखा यदि अनामा व मध्यमा के बीच में पहुँचजावे तो व प्राणी दीनदशा (बुरी हालत) को प्राप्त होताहुआ अपने कर्मदोषसेही मौत को पाताहै ॥ १

४ भोगात्समुत्थं विशदस्वरूपं चन्द्रार्धचिह्नं यदि याति मन्दम् ।
कारागृहं याति नरस्तदानीं कारुण्यहीनः कलहे रतश्च ॥ २ ॥

भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) से उठाहुआ स्पष्टरूपवाला होकर अर्धचन्द्र कार निशान शनैश्चर के स्थान में यदि देखा जावे तो वह प्राणी दयासे विहीन व लड़ में रत होताहुआ जेलखाने में जाता है ॥ २ ॥

५ संभोगरेखा यदि नीचदेशे पीना सुहीना गुरुगा विभाति ।
चण्डाभिघातान्मृतिमेति प्राणी स्थूला यदा चेच्छिरघातपातात् ॥ ३ ॥

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) निचले भाग में मोटी व ऊपरले भाग पतली होकर बृहस्पति के स्थानमें प्राप्त हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी बड़ी भारी चो चपेट के लगने से मौत को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा मोटी सी देखी जावे तो व प्राणी शीश में चोट आजाने से मौतको पाता है ॥ ३ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति रेखासमेतं यदि सप्तमाङ्कम् ।
तदा जनः स्वीयजनाभिभूतो नीचोर्ध्वगा चेद्रिपुवृन्दपूर्णः ॥ ४ ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिकाहुआ साफ़ व रेखा से संयुत होकर सात के अं के समान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी अपने कुटुम्बीवर्गों से अनादृत हो यानी आदर नहीं पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान निचले या ऊपरले भाग में देखाजा तो वह प्राणी शत्रुगणों से पूर्ण रहता है ॥ ४ ॥

७ मातुस्सुरेखोपरिगं सुचिह्नं गुणाख्यचिह्नेन युतं त्रिरेखम् ।
द्वीपान्तरं याति नरस्तदानीं दाता दयालुर्दयिताविलासी ॥ ५ ॥

मातृरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्त हुआ गुणा × के निशान से संयुक्त होकर ती रेखाओंवाला शोभायमान निशान यदि देखाजावे तो वह प्राणी दाता व दयालु होक दयिताओं में विलास (ऐश) करता हुआ द्वीपान्तर (दूसरे द्वीप) में चलाजाता है ॥ ५

८ भोगाधरस्थं विशदं विभाति गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
तदा नरो धर्मपदावलम्बी धन्यो धरित्र्यां धनतामुपैति ॥ ६ ॥

भोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के निचलेभाग में टिकाहुआ साफ़ होकर णा के समान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी धर्मपदका अवलम्बन करने ला होकर धरामण्डल में धन्यवाद देने के योग्य होता हुआ धनसमूह को पाता है ॥ ६ ॥

पितुस्सुरेखोपरिगा विभाति ह्यङ्गुष्ठशाखासहिता सुरेखा ।
तदा नरो नीचनराभिलाषी व्रीडाविहीनो वनिताविलासी ॥ ७ ॥

पितृरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्त हुई अँगूठे की शाखाओं से संयुक्त होकर शोभायमान रेखा यदि सोहती हो तो वह प्राणी निर्लज्जरूप होकर रमणियों में रमण करता हुआ नीच नरों की चाहना रखता है ॥ ७ ॥

१० मातुस्सुरेखाधरगं विशुद्धं त्र्यङ्कानुरूपं यति भाति चिह्नम् ।
विश्वासहीनो मनुजो विलासी संधारणाशक्तियुतोऽमिषाशी ॥ ८ ॥

मातृरेखा के निचले भाग में प्राप्त हुआ साफ़ होकर तीन अंक के समान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी विलासी व भलीभांति धारणाशक्ति से युक्त होता हुआ मांसभक्षी होकर विश्वास से हीन होता है ॥ ८ ॥

११ मातुस्सुरेखाधरगं विभाति गुणत्रयेणापि युतं सुचिह्नम् ।
तदा परस्त्रीं हरते मनुष्यो नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥ ९ ॥

मातृरेखा के निचले भाग में प्राप्त हुआ तीनगुणों के निशानों से संयुक्त होकर शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी पराई भार्या (लुगाई) को हरता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में प्रतीत हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ९ ॥

१२ पितुस्सुरेखा यदि नीचभागे चिह्नेन गोलाकृतिना युता स्यात् ।
नेत्राभिघातं लभते मनुष्यो मन्त्रे सुतन्त्रे निरतो नितान्तम् ॥ १० ॥

पिताकी रेखा निचले भाग में गोलाकार निशान से संयुक्त होकर यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी मन्त्रशास्त्र व तन्त्रशास्त्र में हमेशा निरत होता हुआ नेत्रों में चोट चपेट को पाता है यानी नेत्ररोगी होता है ॥ १० ॥

१३ मातुस्सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे स्थूलस्वरूपा मिलिता च वप्रे ।
निर्बोधरूपो मनुजस्तदानीं व्याजेन युक्तो व्यवसायपूर्णः ॥ ११ ॥

माता की रेखा ऊपरले भाग में मोटी होकर पिता की रेखा में यदि मिलजावे तो वह प्राणी अज्ञानी होकर छल से संयुक्त होता हुआ रोज़गार से परिपूर्ण बना रहता है ॥ ११ ॥

१४ अङ्गुष्ठमूले विशदं विशालं वृत्तार्धचिह्नं नियतं चकास्ति ।

लोहाग्निघातं लभते स्वनेत्रे मानी मनुष्यो ममताविहीनः ॥ १२

अँगूठे की मूल में साफ़ व विशाल होकर अर्धवृत्तका निशान निश्चित होता हुआ चमकता हो तो वह प्राणी मानी व ममता से विहीन होकर अपने नेत्रों में लोह व अ के द्वारा आघात को पाता है ॥ १२ ॥

१५ पितुस्सुरेखा मणिबन्धहीना कौटिल्यरूपा मिलिता जनन्याम् ।
जल्पाकरूपो मनुजस्तदानीं स्वल्पेन कालेन मृतिं प्रयाति ॥ १३ ।

पिताकी रेखा मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से हीन होकर टेढ़ेरूपवाली होती हुई यदि म रेखा में मिली देखीजावे तो वह प्राणी बकवादी (बड़बड़िया) होता हुआ थोड़े का मेंही मौतको पाता है ॥ १३ ॥

१६ पितुस्समुत्था यदि भाग्यरेखा वृत्तार्धयुक्ता जननीमुपैति ।
आयुष्यहानिं लभते मनुष्यो ह्यानन्दहीनो निधनं प्रयाति ॥ १४ ।

पितृरेखा से उठी हुई भाग्यरेखा (दौलतकी रेखा) अर्धवृत्त निशान से संयुक्त हो मातृरेखा के समीप यदि चली जावे तो वह प्राणी आयुर्दायकी हानि को पाता हु आनन्द से हीन होकर मरणको प्राप्त होता है ॥ १४ ॥ (देखो चित्र नं० २८)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ अनामिकायास्त्रितये परुष्के नन्दाङ्करूपं यदि भाति चिह्नम् ।
चतुष्पदादष्टतनुर्मनुष्यश्चाञ्चल्ययुक्तश्चरणामयश्च ॥ १५ ॥

अनामिका अँगुली की तीसरी पोर में नौके अङ्कासा निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी चौपाये जानवर (घोड़े आदिकों) से काटे अंगवाला होता हुआ चञ्चलता संयुक्त होकर पैरों का रोगी होता है ॥ १५ ॥

२ भोगासमुत्था सरलासुरेखा सौम्यालयं याति गभीररूपा ।
सत्पात्रशीलो मनुजस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्तु भवेत्सती सा ॥ १६ ॥

भोगरेखा से उठी हुई रेखा सीधी व गहरी होकर बुधके स्थान में चली जावे तो व प्राणी सत्पात्रशाली होता है और पूर्वोक्त रेखा जिस स्त्री के करतल में देखी जावे तो व पतिव्रता होती है ॥ १६ ॥

३ चण्डालयस्थं विशदं चकास्ति चिह्नं यदैकं यदि न्यूनकोणम् ।
तदा जनोयं जनयूथभिन्नः प्राप्नोति मृत्युं सहसा सुभीतः ॥ १७ ॥

सूर्यके स्थान में टिकाहुआ साफ़ होकर एक न्यूनकोणवाला निशान यदि चमकता

तो वह प्राणी जनसमूहों से पीटा हुआ बहुतही डरकर एकाएक (अचानक) ही मौत को पाता है ॥ १७ ॥

४ अनामिकामध्यमिकामुमध्यं भोगासमुत्था यदि याति रेखा।
तापी सुशोकी मनुजो विदुःखी स्वल्पा यदा चेत्फलताल्पता स्यात्॥१८॥

अनामिका व मध्यमिका अँगुली के बीचमें भोगरेखा से उठी हुई रेखा यदि चली जावे तो वह प्राणी सन्ताप को करताहुआ बड़ा शोकी होकर विशेषता से दुःखी होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा छोटी सी प्रतीत होवे तो फलकी अल्पता होती है ॥ १८ ॥

५ वृद्धाङ्गुलीतश्चलिते सुरेखे बृहस्पतिस्थानगते यदास्तः।
तदाग्निदग्धो मनुजो विभीतः संमुग्धचित्तो भ्रमते नितान्तम् ॥ १९ ॥

अँगूठे से चली हुई दो रेखायें यदि बृहस्पति के स्थानमें पहुँच जावें तो वह प्राणी आगी से जला व डरा हुआ भलीभांति मोहित चित्तवाला होकर हमेशा घूमा करताहै ॥ १९ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति वृत्तार्धचिह्नं यदि चोर्ध्ववक्त्रम्।
तदा नरो वह्निविदग्धगात्रो विभ्रान्तचित्तो भयतामुपैति ॥ २० ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिकाहुआ साफ़ होकर अर्धवृत्त का निशान ऊर्ध्वमुख वाला यदि सोहता हो तो वह प्राणी आगी से जले शरीरवाला होकर विभ्रान्तचित्त होताहुआ भयसमूहों को पाता है ॥ २० ॥

७ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं त्रिकोणं यदि क्षुल्लरूपम्।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ २१ ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिका हुआ साफ़ होकर छोटा सा त्रिकोण का निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी बड़े प्रभाववाला होकर चपलस्वभाववाला होताहुआ चौपाये के आघात को पाता है ॥ २१ ॥

८ संभोगरेखा मिलिता जनन्यां क्षुद्राविभिन्ना यदि चोर्ध्वभागे। संभोगरेखा
मिथ्याप्रलापी मनुजः प्रमादी संयोगहीना यदि वा सशाखा ॥ २२ ॥

सुभोगरेखा माताकी रेखा में मिलजावे और ऊपरले भाग में छोटी रेखा से कटीहुई यदि देखी जावे तो वह प्राणी मिथ्याभाषी होता हुआ प्रमादी होताहै और यदि पूर्वोक्त रेखा संयोग से हीन होकर शाखासमेत प्रतीत होवे तो भी कहाहुआ फल होता है ॥ २२ ॥

९ पितुस्सुरेखा मणिबन्धहीना संछिन्नमस्ता कुटिला विभाति। पितृरेखा
तदा नरो मस्तकघातमेति मूर्च्छादिरोगैः परिपीडिताङ्गः ॥ २३ ॥

पिता की रेखा मणिबन्ध (कब्जे) से हीन होकर कटे मस्तकवाली व टेढ़ी हो हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मूर्च्छादिरोगों से पीड़ित अंगवाला होता हुआ मार्ग में आघात (चोट चपेट) को पाता है ॥ २३ ॥

१० निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं संलग्नमस्तं सरलं द्विरेखम् ।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी वामाभिलाषी वनिताविलासी ॥ २४ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ मिले मस्तकवाला व सीधा होकर दो रेखाओं वा शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी सुन्दरियों की चाहनावाला हो वनिताओं में विलास (ऐश) करता हुआ चौपाये के आघात को प्राप्त होता है ॥ २४

११ मातुस्सुरेखोपरिगा विभान्ति रेखा विक्षुद्राः सरलाश्च षट्काः ।
जङ्घाभिघातं प्रतिपद्य सद्यः पादाभिघातं लभते मनुष्यः ॥ २५ ॥

माता की रेखा के ऊपर प्राप्त हुई छोटी व सीधी होकर छः रेखायें यदि सोहती तो वह प्राणी जंघाओं में आघात को पाकर शीघ्रही पावों में आघात को पाता है ॥ २५

१२ पितुस्सुरेखानिकटे विभाति ह्यङ्गुष्ठशाखा सहितं त्रिकोणम् ।
संभ्रान्तचित्तो निजमानहीनो नरो भवेद्ध्वस्तपदाधिकारः ॥ २६ ॥

पितृरेखा के समीपही अँगूठे की शाखाओं समेत त्रिकोण का निशान यदि सोहे हो तो वह प्राणी संभ्रान्तचित्तवाला होता हुआ अपने मान से हीन होकर ओहदे पतित होता है ॥ २६ ॥

१३ मातुस्सुरेखा यदि सर्वदेशे क्षुद्राविभिन्ना विशदस्वरूपा ।
वातार्तियुक्तो मनुजो महौजाः पीडां कठोरां लभते दिनान्ते ॥ २७ ॥

वैधक

माताकी रेखा साफ़ होकर सर्वदेश में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई यदि देखीं तो वह प्राणी महाबलवान् होकर वातरोग से पीड़ित होता हुआ सन्ध्यासमय में कष्ट पीड़ा को पाता है ॥ २७ ॥

१४ पितुः सुरेखाधरगं विभाति रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम् ।
शोकाकुलोयं पुरुषस्तदानीं पाशाग्रविद्धो मरणं प्रयाति ॥ २८ ॥

पिताकी रेखा के निचले भाग में प्राप्त हुआ दो रेखाओंवाला निशान यदि दो रेखा से कटा हुआ प्रतीत होवे तो वह प्राणी शूली में टँगाहुआ मौतका को पाता है ॥ २८ ॥

१५ काव्यालयान्ते यदि भाति चिह्नं वृत्तार्धरूपं विशदं गभीरम् ।
वेश्याविहारी मनुजो विकारी मित्रापकारी परवित्तहारी ॥ २९ ॥

शुक्र के स्थान में यानी अँगूठे की मूल में अर्धवृत्त का निशान साफ़ व गहरा होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी वेश्याओं में विहार करता हुआ विकारी व मित्रों का अपकारी होकर परद्रव्य का हरनेहारा होता है ॥ २९ ॥ (देखो चित्र नं० २९)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके एका विक्षुद्रा सरला च रेखिका।
असाध्यरोगी मनुजः प्रकीर्तितो दौर्बल्यगात्रो बहुकोपकोपितः ॥ ३० ॥

समस्त अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में एकरेखा छोटी व सीधी होकर सोहती हो तो वह प्राणी असाध्य रोगी कहाता है व दुबला होकर घनेकोप से कोपित होता है॥ ३० ॥

२ कनिष्ठिकामूलगता विभान्ति रेखा विक्षुद्राः कुटिलाश्च तिस्रः।
तदा कुकाले जननं प्रयातो मानी मनुष्यो ममतामुपैति ॥ ३१ ॥

कनिष्ठा अँगुलीकी मूल में प्राप्तहुई तीन रेखायें छोटी होकर टेढ़ीसी प्रतीत होवें तो वह प्राणी कुसमय में जन्म को पाता हुआ मानी होकर ममता को पाता है ॥ ३१ ॥

३ सोमात्मजस्य सदने यति भान्ति रेखा-
स्तावन्मिता विकथिताः शुभदा विवाहाः।
पाणिग्रहैर्विरहिता यदि गर्तयुक्ता
भिन्ना यदा मृतिगताः प्रथमं नृनार्यः ॥ ३२ ॥

बुध के स्थान में यानी कनिष्ठा के मूलतल में जितनी टेढ़ी व गंभीर रेखायें प्रतीत हों उतने ही नरनारीगणों के शुभदायक विवाह कहेजाते हैं और यदि पूर्वोक्त रेखायें छिद्र से संयुत होकर प्रतीत होवें तो नरनारीगण ब्याहसे विहीन होते हैं यानी उनका ब्याहही नहीं होता है और यदि पूर्वोक्त रेखायें भिन्न हों तो नरनारीगण प्रथमही मृत्युगत होते हैं यानी स्त्री पुरुषों के करतल में उक्त रेखायें मध्य में भिन्न हों तो पहले पुरुष मरजाते हैं और यदि पार्श्व में कटीसी प्रतीत हों तो पहले स्त्रियां मरजाती हैं ॥ ३२ ॥

४ संभोगरेखोपरिगं विभाति वृत्तार्धचिह्नं विशदस्वरूपम्।
मातापितृभ्यां रहितो मनस्वी प्राप्नोति प्राणी बहुदूरदेशम् ॥ ३३ ॥

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) के ऊपरले भागमें प्राप्त हुआ साफ़ होकर अर्धवृत्तका निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी मनमौजी होकर बड़े दूरदेश को जाता है ॥ ३३ ॥

५ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद् भाग्या सुरेखा समुपैति शौरिम्।
तदा नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते संस्पृष्टमूला यदि याति काराम् ॥ ३४ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठीहुई भाग्यरेखा शनैश्चर पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी सैं दुःखों को भोगता है और यदि पूर्वोक्त रेखा मध्यमा की मूल को स्पर्श करती हुई चे जावे तो वह प्राणी जेलखाने को जाता है ॥ ३४ ॥

६ संभोगरेखा यदि मध्यमान्तं गम्भीररूपा कुटिला प्रयाति ।
कष्टेन कालं नयते मनुष्यः साहाय्यतो वित्तमुपैति नूनम् ॥ ३५ ॥

संभोगरेखा गहिरी होकर टेढ़ी होतीहुई यदि मध्यमा के समीप चलीजावे तो प्राणी कष्टसे अपने समयको बिताता है और सहायतासे निश्चयकर धनको पाता है ॥ ३

७ सुभोगरेखाधरगं त्रिरेखं वामेन मध्येन च भिन्नरूपम् ।
तदा नरो वह्निभयाद्विभीतो वित्तक्षयं वै लभते नितान्तम् ॥ ३६ ॥

सुभोगरेखा के निचले तरफ़ प्राप्त हुआ तीन रेखाओंवाला निशान वामभाग और म भाग से कटाहुआ प्रतीत होवे तो वह प्राणी आगी की भय से डरता हुआ हमेशा धन को पाता है ॥ ३६ ॥

८ भोगात्समुत्था यदि वक्ररेखा मात्रीं विभित्त्वा समुपैति पैत्रीम् ।
तदा जनो वैरिगणाभिभूतः क्षयार्तियुक्तो भयतामुपैति ॥ ३७ ॥

भोगरेखा से उठी हुई टेढ़ी रेखा मातृरेखा को काटकर पितृरेखा के पास यदि प जावे तो वह प्राणी शत्रुगणों से सताया हुआ क्षयीरोग से संयुक्त होकर भयस को पाता है ॥ ३७ ॥

९ पितुस्सुशीर्षोपरिगं विभाति रेखाद्वयं रेखयुगेन भिन्नम् ।
तदाश्वपृष्ठात्पतितो मनुष्यः क्षुद्रं यदा चेत्फलमन्दता स्यात् ॥ ३८ ॥

पितृरेखा के शीशपै प्राप्त हुआ दो रेखाओंवाला निशान दो रेखाओं से भिन्न हो यदि सोहता हो तो वह प्राणी घोड़े की पीठ पर से गिर कर मरजाता है और यदि पू निशान छोटासा प्रतीत हो तो फलकी अल्पता होती है ॥ ३८ ॥

१० क्षपाकरस्योपरिगा विभान्ति रेखा विक्षुद्रा यदि यान्ति मात्रीम् ।
तदा नरो दुर्बलगात्रयष्टिः संक्रुद्धचित्तो धननाशमेति ॥ ३९ ॥

चन्द्रस्थान के ऊपरले भागमें प्राप्त हुई छोटी छोटी बहुतसी रेखायें यदि मातृरेखा के पहुँच जावें तो वह प्राणी दुबला व दिलमें बड़ा क्रोधी होताहुआ धनक्षयको पाता है ॥ ३

११ बृहस्पतिस्थानगता कुरेखा गम्भीररूपा यदि याति मन्दम् ।
शीतज्वरान्मृत्युमुपैति मर्त्यः सूक्ष्मा यदा चेत्फलताल्पता स्यात् ॥ ४

बृहस्पति के स्थान में प्राप्तहुई छोटीसी रेखा गहिरी होकर शनैश्चर के स्थान में पहुँच जावे तो वह प्राणी शीतज्वर (जूड़ी व बुखार) से मौतको पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा पतली सी प्रतीत हो तो फल की अल्पता होती है ॥ ४० ॥

२ काव्यालयोत्था समुपैति रेखा पैत्रीं सुभाग्यां च विभिद्य मात्रीम् ।
आघातवृन्दं लभते मनुष्यश्चानन्दहीनो दयिताविहीनः ॥ ४१ ॥

शुक्र के स्थान से उठीहुई रेखा पितृरेखा व भाग्यरेखा को काट कर मातृरेखा के पास पहुँचजावे यानी मिलजावे तो वह प्राणी आनन्द से हीन होताहुआ प्राणप्यारी से विहीन होकर बहुतसी चोट चपेटों को पाता है ॥ ४१ ॥

३ भाग्यान्तिकस्थं धटदण्डतुल्यं सप्ताङ्कभिन्नं यदि भाति चिह्नम् ।
स्त्रैणो मनुष्यो निरपत्रपः स्यान्नार्या यदा चेद्गणिका भवेत्सा ॥ ४२ ॥

भाग्यरेखा के समीप टिकाहुआ तराजूकी डण्डी के समान होकर सात के अङ्क से भिन्नहुआ निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी स्त्रीलम्पट होकर निर्लज्ज होताहै और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में प्रतीत हो तो वह वेश्या होती है ॥ ४२ ॥

४ निशाकरस्थानगता सुरेखा क्षुद्राविभिन्ना कुटिलस्वरूपा ।
लज्जाकरस्स्यान्मनुजस्सुखेप्सुर्नार्या यदा चेदुपपत्निका स्यात् ॥ ४३ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुई रेखा टेढ़ी होकर छोटी छोटी रेखाओं से भिन्न होती हुई प्रतीत होवे तो वह प्राणी सुख की चाहनावाला होता हुआ लज्जाकारी होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा स्त्री के करतल में प्रतीत हो तो याजक की उपपत्नी होती है ॥ ४३ ॥
देखो चित्र नं० ३०)

अथ सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह —

५ कनिष्ठिकायास्त्रितये परुष्के रेखा विक्षुद्राः सरला यति स्युः ।
तावन्मिता बोधयुताः सुपुत्राः संवक्रगाश्चेत्तति कन्यकाश्च ॥ ४४ ॥

कनिष्ठा अँगुली की तीसरी पोर में छोटी व सीधी होकर जितनी रेखायें प्रतीत हों तो उतनेही ज्ञानी सुपुत्र पैदा होते हैं और यदि पूर्वोक्त रेखायें टेढ़ी सी देखी जावें तो उतनीही कन्या पैदा होती हैं ॥ ४४ ॥

६ कनिष्ठिकाया द्वितये परुष्के रेखाद्वयं चेद्गुरुणा समेतम् ।
पुत्रादिहीनं मनुजं करोति विद्याविहीनं वचसा विहीनम् ॥ ४५ ॥

+ याजकस्येति शेषः ॥

कनिष्ठा की दूसरी पोर में ऽगुरुसमेत ॥ दो रेखाओंवाला यानी भगण का सा नि
यदि सोहता हो तो उस प्राणी को विद्याविहीन व वचनविहीन तथा पुत्रादिकों से
करता है ॥ ४५ ॥

३ शनैश्चरस्थानगता कुरेखा कौटिल्यरूपा विशदा विभाति ।
श्लेष्मप्रधानो मनुजस्तदा स्यात् कासादिरोगैः परिपीडिताङ्गः ॥ ४६

शनैश्चर के स्थान में प्राप्तहुई छोटीसी रेखा टेढ़ी व साफ़ होकर यदि सोहती हो
वह प्राणी कास व श्वास आदि रोगोंसे पीड़ित होताहुआ कफरोगवाला होता है ॥ ४६

४ चन्द्रात्मजस्थानगतं गभीरं चिह्नं त्रिरेखं सरलं चकास्ति ।
सोयं जनः सज्जनसंगकारी संवक्रगं चेदधमानुगः स्यात् ॥ ४७ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्तहुआ गहरा तीनरेखाओंवाला निशान सीधा होकर यदि सो
हो तो वह प्राणी सज्जनों का साथ करता है और यदि पूर्वोक्त निशान टेढ़ा सा प्रतीत
तो वह प्राणी अधर्मोंका अनुगामी होता है ॥ ४७ ॥

५ संभोगरेखा यदि मध्यमान्ता संभिन्नरूपा कुटिला विभाति ।
स्वाधुस्वभावो मनुजस्तदानीं सत्कर्मशाली सततं सुखी स्यात् ॥ ४८

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) मध्यमातक पहुँची हुई कटी व टेढ़ी होकर
सोहती हो तो वह प्राणी साधुस्वभाववाला होताहुआ सत्कर्मशाली होकर निर
सुखी रहता है ॥ ४८ ॥

६ प्रदेशिनीमध्यमिकासुमध्ये रेखा यदैका सरला विभाति ।
आघातपातान्मृतिमेति प्राणी संकर्तिता चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ ४९

जिससमय तर्जनी व मध्यमा के बीच में एकरेखा सीधी होकर यदि सोहती हो
वह प्राणी चोटचपेट के लगजानेसे अचानक मौतको पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा कटी
प्रतीत हो यानी भोगरेखा से कटी देखीजावे तो फल अन्यथा होता है ॥ ४९ ॥

७ भोगाधरस्थं सरलं त्रिरेखं चिह्नं गभीरं विशदं विभाति ।
तदा जनश्शत्रुगणाभिभूतो शान्त्या विहीनो भयतामुपैति ॥ ५० ॥

भोगरेखा के निचले भागमें टिका हुआ सीधा व तीन रेखाओंवाला निशान गहरा
साफ़ होकर सोहता हो तो वह प्राणी वैरिगणों से अनादृत होताहुआ शान्ति से
होकर भयको पाता है ॥ ५० ॥

१श्लिष्यति 'श्लिष् आलिंगने' (दि. प. अ.) सर्वधातुभ्यो मनिन् श्लेष्मेति सिद्ध्यति

मातुः सुरेखोपरिगं गभीरं वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति ।
गुदामयं वै लभते मनुष्यश्चोर्ध्वं यदा चेत्पशुघातमेति ॥ ५१ ॥

मातृरेखा के ऊपरले भागमें प्राप्तहुआ गहरा व साफ़ होकर अर्धवृत्तका निशान यदि होता हो तो वह प्राणी गुदारोग (भगन्दर बवासीर आदि) को पाता है और यदि वोंक्त निशान ऊर्ध्वमुख होकर प्रतीत हो तो वह प्राणी पशुघात को पाताहै ॥ ५१ ॥

मातुस्सुशीर्षोपरिगं विभाति गर्ताख्यचिह्नं विशदं गभीरम् ।
नक्तान्ध्यरोगी मनुजः सुभोगी विद्याविशेषो विभुतामुपैति ॥ ५२ ॥

मातृरेखा के शीश के ऊपर प्राप्तहुआ गड़हे का निशान गहिरा व साफ़ होकर यदि होता हो तो वह प्राणी रतौंधीवाला व बड़ा भोगवाला होकर विद्याओं में विशेष होता हुआ विभुताको पाता है ॥ ५२ ॥

५० मातुस्सुशीर्षोपरिगा सुरेखा गम्भीररूपा यदि याति मन्दम् ।
उद्बन्धयुक्तो मृतिमेति जन्तुर्जायासमेतो जयतामुपेतः ॥ ५३ ॥

मातृरेखा के शीशपर प्राप्तहुई शोभायमान रेखा गहरी होकर शनैश्चरपर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी जायासमेत जयताको प्राप्त हुआ उद्बन्धन (फांसी आदिकों) से मौत को पाता है ॥ ५३ ॥

५१ स्वल्पा सुमात्री विशदा सुरेखा संवक्ररूपा यदि याति वक्रम् ।
चतुष्पदाघातमुपैति प्राणी चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ ५४ ॥

माताकी रेखा छोटी व साफ़ होकर टेढ़ी होती हुई यदि मङ्गल के समीप चलीजावे तो वह प्राणी बड़े प्रभाववाला होकर चपलस्वभाववाला होता हुआ चौपये से चोट पेट को पाता है ॥ ५४ ॥

५२ वक्रा सुपैत्री मिलिता जनन्यां कोणेन युक्ता मणिबन्धगा चेत् ।
सोयं जनः शत्रुगणादिभिन्नः कारागृहं प्राप्य मृतिं प्रयाति ॥ ५५ ॥

पिताकी रेखा टेढ़ी व मातृरेखा में मिली हुई कोण के निशान से संयुक्त होकर कब्जे पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी वैरिगणों से ताड़ित होता हुआ जेलखाने में जाकर मौत को पाता है ॥ ५५ ॥

५३ अङ्गुष्ठशाखासहितं गभीरं कोणद्वयं चिह्नतमं चकास्ति ।
श्लेष्माधिकोयं मनुजस्तदानीं दौर्बल्यगात्रो दयितामुपैति ॥ ५६ ॥

---

१ अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः । धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥
२ मरणं मृतिस्तामृतिम् ॥

अँगूठेकी शाखाओं समेत गहरा दो कोणों का निशान यदि सोहता हो तो वह प्रा कफीला होकर दुबला होता हुआ दयिता (प्राणप्यारी) को पाता है ॥ ५६ ॥

१४ वृद्धाङ्गुलेर्वैनिकटे नखस्य मध्ये विभिन्नं यदि भाति वृत्तम् ।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदानीं स्त्रैणो महाव्याधियुतो बिभेति ॥ ५७ ॥

अँगूठे के नख के समीप बीच में सरल छोटी रेखा से कटाहुआ गोलाकार निश यदि सोहता हो तो वह प्राणी चौरकर्म में परायण व स्त्रीलम्पट होताहुआ महाव्याधि से युक्त होकर डरता है ॥ ५७ ॥

१५ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशात्स्वल्पा सुभाग्या समुपैति मात्रीम् ।
तदा जनो जीवति दीर्घकालं दाता दयालुर्दयिताविहीनः ॥ ५८ ॥

मणिबन्धन (कब्जे) से उठीहुई छोटी सी भाग्यरेखा यदि मातृरेखा के पास च जावे तो वह प्राणी दाता व दयालु होकर प्राणप्यारी से विहीन होता हुआ ब समयतक जीता है ॥ ५८ ॥

१६ अङ्गुष्ठमूले विशदं विशालं कीटानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
कफार्तियुक्तो मनुजस्तदा स्यात्कान्ताविहीनः कलहे रतश्च ॥ ५९ ॥

अँगूठेकी मूल में साफ़ व विशाल होकर बीछू के समान निशान यदि सोहता हो वह प्राणी स्त्री से विहीन होकर लड़ाई करता हुआ कफरोग से घिरा रहता है ॥ ५९

१७ पित्रोः सुमध्ये परिदृश्यमानं सर्पानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।
तदा कलङ्की मनुजो विशङ्की नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥ ६० ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीच में देखा हुआ सांप के समान निशान यदि भासता तो वह प्राणी कलङ्की होकर विशङ्की होता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल सोहता हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ६० ॥ (देखो चित्र नं० ३१)

अथ सप्तदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह —

१ कनिष्ठिकायास्तृतये परुष्के रेखाद्वयं चेत्सरलं विभाति ।
जङ्घार्तिभीतिं लभते मनुष्यो जायाभिलाषी जनतासमेतः ॥ ६१ ॥

कनिष्ठा अँगुली की तीसरी पोर में सीधा दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता तो वह प्राणी जाया की अभिलाषा करता हुआ जनसमूहों से घिर कर जंघापीड़ा भय को पाता है ॥ ६१ ॥

---

१ केन जलेन फलति 'फलनिष्पत्तौ' (भ्वा. प. से.) अन्येभ्योपीति डः यद्वा के शिरसि फ फकतीतिवा ॥

२ अनामिकायास्त्रितये परुष्के रेखाद्वयं चेत्कुटिलं चकास्ति ।
चतुष्पदादष्टतनुर्मनुष्यो दीनो दरिद्रो दमतामुपैति ॥ ६२ ॥

अनामिका की तीसरी पोर में टेढ़ा दो रेखाओं का निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी दीन व दरिद्री होकर चौपाये से डसा हुआ दमता को पाता है ॥ ६२ ॥

३ चन्द्रात्मजस्थानगता विक्षुद्रा स्थूलस्वरूपा यदि भाति रेखा ।
चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्याच्चञ्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ ६३ ॥

बुधके स्थान में प्राप्त छोटी व मोटी होकर रेखा यदि सोहती हो तो वह प्राणी दीप्त प्रभाववाला होता हुआ चपलस्वभाववाला होकर चोरी करनें में लगा रहता है ॥ ६३ ॥

४ ब्रध्नालये चेद्विशदे विक्षुद्रे स्यातां सुरेखे विरलस्वरूपे ।
कट्यार्तिभीतिं भजते मनुष्यो भाग्येन हीनो भ्रमतासमेतः ॥ ६४ ॥

सूर्य के स्थान में साफ़ व छोटी होकर सीधी दो रेखायें यदि विरलरूप से सोहती हों तो वह प्राणी भाग्य से हीन होकर भ्रमसमूहों से घिरा हुआ कमरपीड़ा की भयको भजता यानी सेवन करता है ॥ ६४ ॥

५ प्रदेशिनीमूलतलाच्चलन्ती रेखा यदैका यदि याति चान्द्रिम् ।
व्युत्पन्नबुद्धिर्मनुजस्तदा स्याद्वेदान्तभाषी व्यवसायपूर्णः ॥ ६५ ॥

तर्जनी अँगुलीकी मूल से चली हुई एक रेखा यदि बुध के स्थान में विराजमान हो तो वह प्राणी वेदान्तभाषी होकर उद्यम से पूर्ण होता हुआ व्युत्पन्न बुद्धिवाला होता है । यह रेखा प्रायः अखबारसंपादकों के हाथों में पाई जाती है ॥ ६५ ॥

६ संभोगरेखा यदि नीचभागे रेखाद्वयेनाप्यवखण्डिता स्यात् ।
तदा नरो बन्धुजनोपकारी प्राप्नोति वित्तं वनिताविहारी ॥ ६६ ॥

संभोगरेखा (अस्मदेशीय आयुरेखा) निचले भाग में दो रेखाओं से खण्डित देखी जाती हो तो वह प्राणी बन्धुजनों का उपकारी होकर वनिताओं में विहार करता हुआ धनको पाता है ॥ ६६ ॥

७ अम्बोत्थरेखा युतशीर्षदेशा संभोगरेखा गुरुगा विभाति ।
तदा नरो मृत्युभयाद्विभीतो व्यासक्तचित्तः परितः प्रयाति ॥ ६७ ॥

मातृरेखा से उठी हुई रेखा से संयुत शीशवाली भोगरेखा यदि बृहस्पति के स्थान में ऊँच कर सोहती हो तो वह प्राणी मौतके डर से डरता हुआ विशेषता से आसक्तचित्त वाला होकर चारों तरफ़ घूमता है ॥ ६७ ॥

८ गुर्वालयोत्था विशदास्सुरेखा यावन्मिता मातृपदं प्रयान्ति।
तावद्विवाहान्कुरुते मनुष्यो मान्यो वदान्यो धनतासमेतः॥ ६८॥

बृहस्पति के स्थान से उठी हुई साफ़ शोभायमान जितनी रेखायें मातृरेखा के पहुँच जावें तो वह प्राणी मानी व अतिदानी होकर धनसमूहों से सम्पन्न होता हुआ उत्तम विवाहों को करता है॥ ६८॥

९ मातुस्सुरेखा यदि नीचभागे शाखासमेता गुरुगा विभाति।
दाता दयालुर्मनुजस्तदानीं सुखाभिलाषी ललनासुपैति॥ ६९॥

माताकी रेखा निचले भाग में शाखाओं से संयुत होकर यदि बृहस्पति के स्थान पहुँची हुई सोहती हो तो वह प्राणी दाता व दयावान् होकर सुखाभिलाषी होता ललना (दुलारी प्यारी) को पाता है॥ ६९॥

१० मातुस्सुरेखा यदि मध्यभिन्ना गम्भीररूपा गुरुगा विभाति।
कट्यार्तिभीतिं लभते मनुष्यः पूर्वोक्तमानेन विचारणीयम्॥ ७०

माताकी रेखा बीच में भिन्न व गहरी होकर बृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई सोहती हो तो वह प्राणी कमरपीड़ा की भयको पाता है यह पूर्वोक्तमान से विचारना चाहिये॥ ७०॥

११ मात्रा वियुक्ता यदि पितृरेखा सञ्छिन्नमस्ता कुजगा विभाति।
तदा नरः स्याद्बहुजग्धिकारी प्रमत्तचित्तः प्रमदाविहारी॥ ७१॥

माताकी रेखा से अलग होकर पिताकी रेखा कटे मस्तकवाली व मंगल के पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मतवाला होकर प्रमदाओं में विहरता हुआ से भोजनों का करनेवाला होता है॥ ७१॥

१२ वृद्धाङ्गुलेर्वै निकटे नखस्य चापानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
शस्त्रास्त्रविद्धो मनुजो मनस्वी मानी धनी स्याज्जनतासमेतः॥ ७

अँगूठे के नाखून के पास धन्वाकार निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी मनमौ मानी व धनी होता हुआ जनसमूहों से संपन्न होकर शस्त्रास्त्रों से वेधाजाता है॥ ७२

१३ मातुस्सुरेखाधरगं गभीरं त्र्यङ्कानुरूपं यदि भाति चिह्नम्।
तदा नरस्स्याच्छरजालबद्धो वामी सुकामी खलधामगामी॥ ७३

मातृरेखा के निचले भाग में प्राप्त हुआ गहिरा होकर तीन के आंक कासा नि यदि सोहता हो तो वह प्राणी वामी व बड़ा कामी होकर खलधामगामी होता बाणसमूहों से बांधा जाता है॥ ७३॥

१४ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सर्पानुरूपं समुपैति मात्रीम् ।
तदा नरः स्याद्व्यभिचारशीलो नार्या यदा चेत्कुलटा भवेत्सा ॥७४॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठा हुआ सर्प के समान निशान मातृरेखा के समीप यदि चलाजावे तो वह प्राणी व्यभिचारशाली होता है और यदि पूर्वोक्त निशान स्त्री के करतल में विराजता हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ७४ ॥

१५ पैत्री सुरेखा यदि मध्यदेशे वृत्तार्धयुक्ता कुटिला विभाति ।
प्राप्नोति प्राणी हृदयाभिघातं पूर्वोक्तमानेन विदोहनीयम् ॥ ७५ ॥

पिता की रेखा मध्यभाग में गोलाकार या अर्ध गोलाकार निशान से संयुत होती हुई टेढ़ी होकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी हृदय में चोट चपेट को पाता है यह विद्वान् को पूर्वोक्त मान से विचारना चाहिये ॥ ७५ ॥

१६ निशाकरस्थानगतं सुचिह्नं चुल्लीसरूपं विशदं विभाति ।
तदा नरो मज्जति वारिराशौ व्यायामसक्तो विषयातुरश्च ॥ ७६ ॥

चन्द्रमा के स्थान में प्राप्त हुआ चुल्ही के समान साफ़ शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी कसरती होता हुआ विषयों से आतुर होकर नदी या नाले आदि कों में डूब जाता है ॥ ७६ ॥

१७ पैत्रीसुरेखा यदि नीचभागे संखण्डिता भुग्नतरा विभाति ।
तदा महोच्चात्पतितो मनुष्यो मानी महौजा[2] ममतामुपैति ॥ ७७ ॥

पिता की रेखा निचले तरफ़ भलीभांति खण्डित होकर टेढ़ी होती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मानी व महाबलवान् होकर बड़े ऊंचे से गिरता हुआ ममताको पाताहै॥७७॥
(देखो चित्र नं० ३२)

अथ द्वादशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सर्वाङ्गुलीनां युगरामपर्वके रेखाद्वयं वै सरलं विभाति चेत् ।
तदा जनोसौ निजवाक्यपालकः पारुष्यपूर्णः परमार्थशालकः ॥ ७८ ॥

समस्त अँगुलियों की दूसरी व तीसरी पोर में सीधी दो रेखायें यदि सोहती हों तो वह प्राणी अपने वाक्यका पालनेवाला होकर कठोरता से पूर्ण रहता हुआ परमार्थ का शालनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

---

१ निशाकरश्चन्द्रः २ "ओजो दीप्तौ बल इत्यमरः" महदोजो बलं यस्मिन्निति महाबलवानिति यावत् ॥

२ सौम्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा चापानुरूपा यदि याति सूर्यम् ।
तदा नरोऽसौ वयसः क्रमेण प्राप्नोति वृद्धिं बलवीर्ययुक्ताम् ॥ ७९ ॥

बुधके स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा धनुष के समान होकर यदि सूर्य के पा पहुँचजावे तो वह प्राणी अवस्था के क्रमसे बल व वीर्य से युक्त वृद्धि को पाता है या बाल्यावस्था से युवावस्था में व युवावस्था से वृद्धावस्था में उन्नतिको पाता है ॥ ७९ ॥

३ वक्रालयाच्चेच्चलिता सुरेखा पित्रोर्विभित्त्वा यदि याति भोगाम् ।
रक्तार्तियुक्तो मनुजो मनीषी सौजन्यपूर्णो मृतिमेति सद्यः ॥ ८० ॥

मङ्गल के स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा मातृरेखा व पितृरेखा को काटकर भो रेखा पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी बुद्धिमान् व सुजनता से पूर्ण होकर रक्तपीड़ा संयुक्त होता हुआ वेगही मौतको पाता है ॥ ८० ॥

४ संभोगरेखोपरिगं विभाति वृत्तार्धयुग्मेन युतं सुचिह्नम् ।
तदा नरोसौ गुणगौरवाढ्यो गुदार्तियुक्तो गुरुतामुपैति ॥ ८१ ॥

सुभोगरेखा के ऊपर प्राप्त हुआ दो अर्धगोलाकारों से संयुत शोभायमान निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी गुणों की गौरवता से सम्पन्न होकर गुदारोग से पीड़ित हो हुआ गुरुता को पाता है ॥ ८१ ॥

५ मातुस्सुरेखा यदि मध्यभागे धन्वाकृतिभ्यामवखण्डिता स्यात् ।
दौर्बल्यगात्रो विकलस्वभावो मानेन हीनो मनुजो बिभेति ॥ ८२ ॥

माता की रेखा यदि मध्यदेश में दो धन्वाकार निशानों से खण्डित देखीजावे तो प्राणी दुर्बल शरीरवाला व विकल स्वभाववाला होकर मान से विहीन होता हुआ डरता रहता है ॥ ८२ ॥

६ पित्रा समेता यदि मातृरेखा कोणेन युक्ता कुटिला विभाति ।
विश्वासयुक्तो मनुजो मनस्वी स्यात्तीक्ष्णबुद्धिर्विषयस्य गोप्ता ॥ ८३ ॥

पिता की रेखा से मिली मातृरेखा टेढ़ी होकर कोण के निशान से संयुत होती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मनमौजी, तीखी बुद्धिवाला व विषयका छिपानेहार होकर विश्वासयुक्त रहता है ॥ ८३ ॥

७ पितुः सुरेखोपरिगं सुचिह्नं भिन्नत्रिकोणं यदि वज्रभिन्नम् ।
तदा नरो वह्निविदग्धगात्रो व्यासक्तचित्तः परितः प्रयाति ॥ ८४ ॥

पिताकी रेखा के ऊपरले भाग में प्राप्त हुआ वज्र से कटे हुए भिन्नत्रिकोण

निशान यदि देखा जावे तो वह प्राणी आगी से जली देहवाला होकर विशेषता से प्रासक्तचित्त होता हुआ या कि सबोंसे अलग चित्तको रखता हुआ चारोंतरफ़ घूमता है॥८४॥

८ काव्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा नतस्वरूपा यदि याति चोर्ध्वम् ।
तदा नरो भिक्षुकवृत्तियुक्तो नीचप्रवृत्तिर्नितरां विभाति ॥ ८५ ॥

शुक्र के स्थान से चली हुई रेखा लचेरूपवाली होकर यदि ऊपरको चली जावे तो वह प्राणी नीचों में प्रवृत्ति रखता हुआ भिक्षुकों की जीविका से संयुत होकर बहुत ही सोहता है ॥ ८५ ॥

९ आरालयोत्थं कुटिलं गभीरं रेखाद्वयं भ्रातृपदं प्रयाति ।
शीर्षच्छिदाभीतियुतो मनुष्यो मायामयोयं ममतामुपैति ॥ ८६ ॥

मंङ्गल के स्थान से उठाहुआ टेढ़ा व गहिरा होकर दो रेखाओं का निशान भ्रातृ स्थानको यदि चलाजावे तो वह प्राणी मायावी होकर शीशकाटने की भय से संयुत होता हुआ ममता को पाता है ॥ ८६ ॥

१० चन्द्रालयस्थं सधनं गभीरं रेखात्रयं चिह्नतरं चकास्ति ।
तदा नरोसौ शठतामुपैति सम्पत्तिपूर्णो नितरामसभ्यः ॥ ८७ ॥

चन्द्रमा के स्थान में टिकाहुआ + धनसमेत गहिरा तीन रेखाओंवाला निशान यदि चमकता हो तो वह प्राणी सम्पत्तियों से पूर्ण रहता हुआ बहुत ही असभ्य होकर शठता को पाता है ॥ ८७ ॥

११ भाग्या सुरेखा खलु स्वल्परूपा शाखासमेता शशिनं प्रयाति ।
तदा जनोयं जठरामयार्त्तो जाज्वल्यमानो ज्वरतामुपैति ॥ ८८ ॥

भाग्यरेखा (फार्चूनलाइन) शाखा समेत छोटेरूपवाली होकर यदि चन्द्रमा के सामने चली जावे तो वह प्राणी उदररोग से पीड़ित होकर बहुत ही जलता हुआ ज्वरसमूहों को पाता है ॥ ८८ ॥

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा सुरेखा यदि याति मात्रीम् ।
तदा नरो घूर्णितशीर्षदेशो दौर्बल्यगात्रो भयतामुपैति ॥ ८९ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी रेखा टेढ़ी होकर मातृरेखा के पास यदि चलीजावे तो वह प्राणी शिरोभ्रान्ति (घुमनी) रोग से पीड़ित होता हुआ दुबली देहवाला होकर भयता (भयसमूह) को पाता है यानी उस प्राणीका शीश हमेशा चक्कर खाया करता है इसी से दुबला रहता हुआ डरा करता है ॥ ८९ ॥ (देखो चित्र नं० ३३)

---

१ शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविरित्यमरः ॥

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ मध्याङ्गुलेर्वै द्वितये परुष्के वक्रा सुरेखा विशदा विभाति।
तदा नरोऽनिष्टतरं प्रयाति विषाद्युपायैर्विषयाभिभूतः[1] ॥ ९० ॥

मध्यमा अँगुली की दूसरी पोर में रेखा साफ़ व टेढ़ी होकर यदि सोहती हो तो प्राणी विषयों से टूटे अहंकारवाला होता हुआ विषादि उपायों द्वारा अनिष्टताको पाताहै ९०

२ सौम्यार्कमध्ये विशदं विभाति तिर्यक्स्वरूपं यदि युग्मरेखम्।
नेत्राभिघातं लभते मनुष्यो नारीविहीनो नयतासमेतः ॥ ९१ ॥

बुध व सूर्य के मध्य में यानी कनिष्ठा व अनामा के नीचे तरफ़ बिचले भाग में स होकर दो रेखाओंवाला निशान तिरीछे रूपवाला होता हुआ यदि सोहता हो तो प्राणी प्राणप्यारी से विहीन होकर नीति से संपन्न होता हुआ लोचनों में चोट चपेट पाता है ॥ ९१ ॥

३ मन्दालयस्थं विशदं विभाति तिर्यक्त्रिभिन्नं यदि युग्मरेखम्।
कारागृहं याति नरः कदापि ज्वरेण भग्नश्चतुराहिकेण ॥ ९२ ॥

शनैश्चर के स्थान में टिकाहुआ साफ़ व तिरीछी तीन रेखाओं से भिन्न होकर रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी चतुराहिक ज्वर से पीड़ित हो हुआ कभी जेलखाने को जाता है ॥ ९२ ॥

४ गुर्वालयस्था कुटिला कुरेखा तिर्यग्विभिन्ना यदि याति भोगाम्।
पदाधिकारं लभते मनुष्यो ऋज्वी यदा चेद्धठतः पदाप्तिम् ॥ ९३

बृहस्पति के स्थान में टिकी हुई टेढ़ी व छोटी सी रेखा तिरीछी रेखा से भिन्न हो यदि भोग रेखा पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी पदाधिकार को पाता है और य पूर्वोक्त रेखा सीधी सी प्रतीत हो तो वह प्राणी हठ से पदको पाता है ॥ ९३ ॥

५ गुर्वालयान्ताच्चलिता सुरेखा पित्रोर्विभित्त्वा यदि याति भौमम्।
रक्तार्तियुक्तो मनुजो मनीषी मान्यो वदान्यो ज्वरतामुपैति ॥ ९४

बृहस्पतिस्थान के समीप से चली हुई शोभायमान रेखा मातृरेखा व पितृरेखा काटकर यदि मङ्गलपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी बुद्धिमान्, मान्य व वदान्य (अ दानी) होकर रक्तपीड़ा से संयुत होता हुआ ज्वरसमूह को पाता है ॥ ९४ ॥

६ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्भुग्ना सुरेखा समुपैति सौम्यम्।
दीर्घायुषं तं मनुजं करोति विद्याधरं बोधवरं वरेण्यम् ॥ ९५ ॥

---

१ आत्तगर्वोभिभूतस्स्यादित्यमरः ॥

जिस प्राणी के करतल में मणिबन्ध (क़ब्ज़े) से उठी हुई रेखा टेढ़ी होकर यदि बुध पर्यन्त चली जावे तो उस प्राणी को दीर्घ उमरवाला, विद्या का धारनेवाला, बड़े बोधवाला तथा सबों में प्रधान बना देती है ॥ ९५ ॥

७ संभोगरेखा गुरुगा गभीरा शाखासमेता यदि नीचभागे ।
बाह्ये गुदे रोगयुतो मनुष्यः संखण्डिता चेद् गुदमध्यरोगी ॥ ९६ ॥

भोगरेखा (हार्टलाइन) बृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई गहरी होकर यदि निचले स्थान में शाखा समेत देखी जावे तो वह प्राणी गुदा स्थान में बाहिरी तरफ़ रोगों से संयुत रहता है और यदि पूर्वोक्त रेखा निचले भाग में खण्डित पाई जावे तो वह प्राणी गुदा के बीच में रोगवाला होता है ॥ ९६ ॥

८ संभोगमात्रोर्यदि नीचदेशे चिह्नं चतुष्कोणयुतं चकास्ति ।
तदा विवादी मनुजो विषादी महाप्रतापी खलु विप्रलापी[1] ॥ ९७ ॥

संभोगरेखा (अस्मद्देशीय आयुरेखा) व मातृरेखा के निचले भाग में चौकोणसंयुक्त निशान यदि भासमान हो तो वह प्राणी विषाद का करनेवाला, बड़े प्रतापवाला व छल से भाषणकर आशाभंग का करनेहारा होकर झगड़ालू होता है ॥ ९७ ॥

९ मातुस्सुरेखा गुरुगा गभीरा क्षुद्राविभिन्ना यदि मध्यदेशे ।
तदा मनुष्यः सुविचारशाली काले भविष्ये कुविचारपाली ॥ ९८ ॥

माता की रेखा बृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई गहरी होकर यदि बिचले भाग में क्षुद्ररेखाओं से कटी देखी जावे तो वह प्राणी वर्तमानकाल में बड़ा विचारशाली होता है तथा भविष्यकाल में निन्दित विचार का पालनेवाला होता है यानी बुरा विचार किया करता है ॥ ९८ ॥

मातृरेखा

१० मातुस्सुरेखा यदि नीचदेशे क्षुद्राविभिन्ना गुरुगा विभाति ।
अल्पायुषं तं पुरुषं करोति ह्यानन्दहीनं मतिमन्दपीनम् ॥ ९९ ॥

बृहस्पति के स्थान में पहुँची माता की रेखा यदि निचले भाग में छोटी रेखा से कटी हुई सोहती हो तो उस प्राणी को आनन्द से हीन, मोटी बुद्धिवाला तथा थोड़ी उमर वाला करती है यानी वह प्राणी आनन्द से रहित होकर मतिमन्दों में मोटा होता हुआ अल्पायु होजाता है ॥ ९९ ॥

११ आरालयान्ताच्चलिते सुरेखे अङ्गुष्ठपृष्ठाभिमुखं प्रयातः ।
तदा जनो मज्जति वारिराशौ कर्तव्यकार्ये बहुतर्ककारी ॥ १०० ॥

---

१ विप्रलापो विसंवाद इत्यमरः ॥